अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र

(SpARC :

Spiritual Applications Research Centre),

बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,

ज्ञान सरोवर, आबू पर्वत - 307501

राजस्थान, भारत

मोबाईलः 9414 15 1879, 9414 00 3497,

9414 08 2607

फैक्स – 02974-238951

ई-मेल – bksparc@gmail.com,

sparc@bkivv.org

साइलेन्स की शक्ति
बनाम
साइन्स की शक्ति

कृति

(संकलन)

स्पार्क (SpARC)

स्वरूप की स्मृति की स्थिति में रहकर आर्डर करो, शक्ति आपका नहीं मानें, असम्भव है क्योंकि वरदान और बाप के प्रॉपर्टी का अधिकार संगमयुग पर आप सबको सर्वशक्तिवान बाप से मिला है। सबको सर्वशक्तिवान का टाइटिल मिला है लेकिन उस स्थिति में स्थित नहीं रहते हो। रहते हो लेकिन सदा नहीं रहते हो।''

अ.बापदादा 18.01.10

''ये शक्तियाँ भी आपको बाप के प्रॉपर्टी में मिली हैं। तो मालिक बनकर शक्तियों को आर्डर करो। ... बाप यही चाहते हैं कि चलते-फिरते राजापन को नहीं भूलो, सीट को नहीं छोड़ो। बिना सीट के कोई किसका आर्डर नहीं मानता।''

अ.बापदादा 18.01.10

''तुम योगबल में होंगे, शिवबाबा को याद करते रहेंगे तो तुमको कोई भी चमाट आदि मार नहीं सकेंगे। योगबल ही ढाल है। कोई कुछ कर भी नहीं सकेंगे। अगर कोई चोट खाते हैं तो जरूर देहाभिमान है। देही-अभिमानी को तो कोई चोट मार न सके। भूल अपनी ही होती है। विवेक ऐसा कहता है कि देही-अभिमानी को कोई कुछ भी कर नहीं सकेंगे।''

सा.बाबा 20.01.10 रिवा.

प्रस्तावना

इस विश्व-नाटक में विभिन्न शक्तियाँ हैं, जिनके सहयोग से ये विश्व-नाटक चलता है। इन शक्तियों में विशेष रूप से परमात्म-शक्ति, आत्मिक-शक्ति, साइलेन्स-शक्ति, साइन्स की शक्ति बनाम दैहिक शक्ति बनाम प्रकृति की शक्ति विशेष है। गुण-धर्मों के आधार पर इन शक्तियों के दो भाग हैं, एक चेतन, दूसरी जड़। समयान्तर में इन शक्तियों का ह्रास भी होता है और विकास भी होता है। बाबा ने अनेक बार कहा है - तुम बच्चे साइलेन्स की शक्ति के आधार पर बहुत से कार्य कर सकते हो। इन सभी शक्तियों के विषय में हम जानेंगे, उनका ज्ञान हमारी बुद्धि में रहेगा तब ही हम उनका उपयोग कर सकेंगे।

(शक्तियों) प्राप्ति को करामात कहें? ... यहाँ करामात की बात नहीं है, इसको श्रीमत का प्रैक्टिकल कर्तव्य समझकर चलते हो। उन लोगों के पास करामात होती है, आप लोगों की बुद्धि में आयेगी श्रीमत। श्रीमत और करामात में फर्क है।'' अ.बापदादा 8.06.71

''आप लोगों के पास भी शक्तियाँ आनी जरूर हैं। मुख से बोलने की भी जरूरत नहीं होगी, संकल्प से कर्तव्य सिद्ध कर देंगे।... आपका संकल्प कर्तव्य को पूरा करेगा। संकल्प से किसको बुला सकेंगे, संकल्प से किसको कार्य की प्रेरणा देंगे। ये शक्तियाँ प्राप्त होंगी लेकिन उनको कर्तव्य समझ कर प्रयोग करना। श्रीमत से यह प्राप्ति हुई है।'' अ.बापदादा 8.06.71

''संकल्प से कार्य की सिद्धि के लिए बुद्धि में और सभी बातें समाप्त हों और श्रीमत की जो आज्ञा मिली हुई है, वही चलती रहे, और कुछ मिक्स न हो। व्यर्थ संकल्प श्रीमत नहीं है। यह मनमत है। तो जब ऐसी बुद्धि हो जाये, जिसमें सिवाए श्रीमत के कुछ भी मिक्स न हो, तब शक्तियाँ (Powers) आयेंगी। ... साकार में अन्तिम कर्तव्य की समाप्ति शक्तियों (आत्मायों अर्थात् देवियों) द्वारा है।''

अ.बापदादा 8.06.71

''यह है कल्याणकारी संगमयुग, जब पुरानी दुनिया नई बनती है। सारा कल्प सीढ़ी उतरते आते हैं, कलायें कम होती जाती हैं। सभी आत्माओं को सीढ़ी उतरना ही है, सुख से दुख में आना ही है। ये सब बातें बुद्धि में धारण करनी हैं।''

सा.बाबा 16.01.10 रिवा.

''तो कर्म करते अपने करावनहार मालिकपन की सीट पर सेट रहो। ... हर एक बच्चे को बाप ने 'मास्टर सर्वशक्तिवान भव' का वरदान ब्राह्मण जन्म लेते ही दिया है। ... ऑलमाइटी अथॉरिटी का वरदान है, उससे बड़ा कोई नहीं, वरदान की उस स्थिति में स्थित रहकर अगर आर्डर करो तो हो नहीं सकता कि आप आर्डर करो और शक्ति नहीं मानें।'' अ.बापदादा 18.01.10

''मैं आत्मा मालिक हूँ, सर्वशक्तिवान अथॉरिटी का मुझे वरदान है - इन दोनों

न बनें, बाप का परिचय न मिले, तब तक मनुष्य बर्थ नॉट ए पेनी है।... राजाई स्थापन करने में कितनी मेहनत लगती है। वह है बाहुबल और यह है योगबल। ... आगे चलकर बहुत समझेंगे। राजाई स्थापन करने में खर्चा तो करना ही पड़ता है।'' सा.बाबा 01.01.10 रिवा.

''नई दुनिया को सतोप्रधान कहा जाता है, वही जब पुरानी हो जाती है तो उसको तमोप्रधान कहा जाता है। फिर वह सतोप्रधान कैसे बनती है? तुम बच्चों के योगबल से। योगबल से ही तुम्हारे विकर्म विनाश होते हैं और तुम पवित्र बन जाते हो। योग परमात्मा ही सिखाते हैं।'' सा.बाबा 02.01.10 रिवा.

''साकार और निराकार बाप द्वारा हर एक को स्पेशल वरदान भी मिला है और गिफ्ट भी मिली है ... उन वरदानों का अनुभव भी हर एक करते हैं। ... हर एक अपने अन्दर देखेंगे तो सर्व शक्तियों में से एक श्रेष्ठ शक्ति वरदान रूप में हर एक को प्राप्त है, जिसके लिए उसको मेहनत नहीं करनी पड़ती है। ... हर एक को कौनसी गिफ्ट पर्सनल मिली हुई है, उस पर अमृत वेले विचार सागर मन्थन करना।'' अ.बापदादा 3.06.71

''तुम्हारी भी देहली ही केपिटल होगी। देहली को ही परिस्तान कहा जाता है। ... तुम जानते हो हम साइलेन्स के बल से अपना राज्य स्थापन कर रहे हैं। ... उनकी है आर्टीफिशियल साइलेन्स, तुम्हारी है रियल साइलेन्स। ज्ञान का बल, शान्ति का बल कहा जाता है। नॉलेज है पढ़ाई, पढ़ाई से ही बल मिलता है।''
सा.बाबा 4.01.10 रिवा.

''हर एक्टर को पार्ट बजाना ही है और सतोप्रधान से तमोप्रधान में आना ही है। हर एक्टर की ताक़त अपनी-अपनी होती है। ... जैसा जिस एक्टर का पार्ट, उस अनुसार उनको पगार मिलती है। ... तुम जितनी मुझे मदद करते हो, उस अनुसार तुमको पगार भी जरूर मिलेगी।'' सा.बाबा 8.01.10 रिवा.

''याद की यात्रा में रहने से कोई करामात आती है? ... जैसे वे लोग कई अभ्यास करते हैं तो उनमें रिद्धि-सिद्धि की करामात आती है, इस रीति इसे

साइलेन्स की शक्ति बनाम साइन्स की शक्ति

विषय सूची

साइलेन्स की शक्ति बनाम साइन्स की शक्ति 1
परिभाषा
साइलेन्स शक्ति बनाम साइन्स की शक्ति बनाम दैहिक शक्ति बनाम प्रकृति की शक्ति
साइलेन्स-शक्ति
आत्मिक-शक्ति
परमात्म-शक्ति 1
योग-शक्ति
विश्व-नाटक की अनादि-अविनाशी अद्भुत शक्ति
साइन्स-शक्ति 1
प्रकृति की शक्ति ... (Cosmic Energy)
गुरुत्वाकर्षण शक्ति और आकर्षण शक्ति
प्रकृति के विभिन्न तत्वों की गुरुत्वाकर्षण शक्ति
चेतन आत्माओं की आकर्षण शक्ति 1
ईश्वरीय शक्ति, दैवी शक्ति और आसुरी शक्ति

साइलेन्स-शक्ति, साइन्स की शक्ति, प्रकृति की शक्ति और विश्व-नाटक
विभिन्न शक्तियाँ और उनका विश्व-नाटक में महत्व 1
साइलेन्स-शक्ति, साइन्स-शक्ति, प्रकृति की शक्ति और संगमयुग
साइलेन्स-शक्ति, साइन्स-शक्ति, प्रकृति की शक्ति और विश्व-परिवर्तन
साइलेन्स की शक्ति और अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति
आत्मिक शक्ति और साइलेन्स की शक्ति में अन्तर और समानता
आत्मिक शक्ति का मूल स्रोत 1
विभिन्न शक्तियाँ और उनका उपयोग
आत्मिक-शक्ति का उपयोग
परमात्म-शक्ति का उपयोग
योग-शक्ति का उपयोग
विश्व-नाटक की अनादि-अविनाशी अद्भुत शक्ति का उपयोग 1
साइन्स-शक्ति का उपयोग
प्रकृति की शक्ति ... (Cosmic Energy) का उपयोग
साइलेन्स की शक्ति का उपयोग और स्व-कल्याण एवं विश्व-कल्याण 1

साइलेन्स की शक्ति अर्थात् योगबल एवं आत्मिक शक्ति के ह्रास-विकास का विधि-विधान और सिद्धान्त 1
साइलेन्स की शक्ति अर्थात् आत्मिक शक्ति के ह्रास-विकास और त्रिलोक
आत्मिक शक्ति का विकास और उसके साधन एवं साधना
आत्मिक शक्ति के विकास के लिए पुरुषार्थ 1
आत्मिक शक्ति का ह्रास और उसके कारण
आत्मिक शक्ति, अष्ट-शक्तियाँ और गुण
योगबल, आत्मिक बल और अष्ट शक्तियाँ एवं गुण
साइलेन्स की शक्ति अर्थात् योगबल और भारत एवं धर्म
साइलेन्स की शक्ति का प्रभाव और उसकी परख 1
साइलेन्स की शक्ति और रुहानी सेवा
योगशक्ति की आवश्यकता और उपयोग
योगशक्ति से आत्माओं को सहयोग
योगशक्ति से प्रकृति को सहयोग
योगशक्ति का अपने कर्मभोग पर विजय 1
योगशक्ति का विकारी संस्कारों से मुक्त होने में सहयोग
साइलेन्स की शक्ति और साइन्स की शक्ति का तुलनात्मक अध्ययन
आत्मिक शक्ति, योगबल और भोगबल
आत्मिक शक्ति और चिन्तन 1
आत्मिक-शक्ति, परमात्म-शक्ति और विश्व-नाटक की शक्ति - साइलेन्स की शक्ति
दैहिक शक्ति, प्रकृति की शक्ति और साइन्स की शक्ति - भौतिक शक्तियाँ
साइलेन्स-शक्ति अर्थात् योगबल और दैवी शक्ति एवं आसुरी शक्ति
आत्मिक शक्ति, माया और परमात्मा 1
आत्मिक शक्ति और व्यर्थ संकल्प
व्यर्थ संकल्प और उसका प्रभाव
व्यर्थ संकल्प और उसका योग पर प्रभाव
व्यर्थ संकल्प और उसका शरीर पर प्रभाव

विविध प्रश्न एवं सम्भावित उत्तर 1
विविध ईश्वरीय महावाक्य

विविध ईश्वरीय महावाक्य

आत्मिक-शक्ति ... बैलेन्स

आत्मिक शक्ति, परमात्म शक्ति, प्रकृति की शक्ति, विज्ञान की शक्ति - मुख्य चार प्रकार की शक्तियाँ इस जगत में हैं।

आत्मिक शक्ति, प्रकृति की शक्ति, साइन्स की शक्ति, माया की शक्ति ज्ञान की शक्ति, विज्ञान की शक्ति, धन की शक्ति, धर्म की शक्ति, शारीरिक शक्ति, जन-शक्ति, आदि-आदि शक्तियों का भी गायन है।

ज्ञान-गुण-शक्तियों के प्रयोग में सफलता तो निश्चित है परन्तु उनके प्रयोग की विधि को चेक (Test) करना होता है। ज्ञान-गुण-शक्तियों का प्रभाव होता है या नहीं, इसका तो प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि इनका प्रयोग कभी निष्प्रभावी हो नहीं सकता।

''तीन मिनट के लिए साइलेन्स करते हैं। उनको बोलो, सिर्फ साइलेन्स से क्या होगा। यह तो बाप को याद करना है, जिससे विकर्म विनाश हों। ... अब बाप को याद करते-करते अपने इस शरीर को भी छोड़कर साइलेन्स दुनिया में जाना है।'' सा.बाबा 30.06.09 रिवा.

''अभी तुम सर्वशक्तिवान बाप से अपना बुद्धियोग लगाकर अपने में शक्ति भरते हो क्योंकि शक्ति कम हो गई है। आत्मा की बैटरी फुल डिस्चार्ज नहीं होती है, कुछ न कुछ ताक़त रहती है। आत्मा की एकदम शक्ति खत्म हो जाये तो शरीर ही न रहे। सतयुग में बैटरी फुल चार्ज रहती है। ... कलियुग के अन्त में आत्मा की ताक़त एकदम थोड़ी रह जाती है।'' सा.बाबा 26.12.09 रिवा.

''अभी तुम बच्चों का बुद्धियोग पुराने घर की तरफ नहीं जाना चाहिए। बाप के साथ बुद्धि लटकी रहे क्योंकि तुम सबको बाप के पास घर जाना है। ... शिव शक्ति पाण्डव सेना का गायन है। तुम हो शिव से शक्ति लेने वाली शिवशक्ति सेना, वह है सर्वशक्तिवान।'' सा.बाबा 26.12.09 रिवा.

''यह मन्मनाभव ही संजीवनी बूटी है। विचार किया जाता है - जब तक ब्राह्मण

है, इसलिए उन आत्माओं के परमधाम जाने से पहले श्रेष्ठ कर्मों का खाता जमा नहीं करती हैं अर्थात् अपने शुद्ध संकल्पों और परमात्मा की याद से प्रकृति और आत्माओं को पावन बनाने का सहयोग नहीं करती हैं।

सतयुग-त्रेता में आने वाली आत्मायें, आत्मिक शक्ति के साथ-साथ पुण्य और प्रालब्ध का खाता भी जमा करके परमधाम जाती हैं। द्वापर-कलियुग की आत्माओं में उनके पार्ट के अनुसार आत्मिक शक्ति तो रहती है लेकिन पुण्य और प्रालब्ध का खाता बहुत थोड़ा, जिसके आधार पर वे जन्म लेती हैं और प्रथम जन्म से ही पुरुषार्थ और प्रालब्ध के अनुसार अपना पार्ट बजाती हैं।

Q. आत्मिक शक्ति, विश्व-परिवर्तन की शक्ति, साइन्स की शक्ति, साइलेन्स की शक्ति, सारे कल्प में पार्ट बजाने की शक्ति क्या है? क्या ये सब एक ही है या इनमें कोई अन्तर है और यदि अन्तर है तो वह क्या है?

Q. आत्माभिमान, देहाभिमान, आत्म-ज्ञान, आत्मिक शक्ति, दैहिक शक्ति, मायावी शक्ति अर्थात् विकारों की शक्ति, प्रकृति की शक्ति, साइन्स की शक्ति में क्या अन्तर है?

साइलेन्स की शक्ति बनाम साइन्स की शक्ति

परिभाषा

आत्मिक शक्ति बनाम साइलेन्स शक्ति बनाम साइन्स की शक्ति बनाम दैहिक शक्ति बनाम प्रकृति की शक्ति

इस सृष्टि में दो प्रकार के तत्व हैं। एक है चेतन आत्मा और दूसरी जड़ प्रकृति, जिसमें पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश की गिनती की जाती है। सातवाँ है ब्रह्मतत्व, जो आकाश तत्व से परे है अर्थात् आकाश तत्व ब्रह्म तत्व से आवृत है और वहाँ पर चेतन आत्मायें निवास करती हैं, वहाँ पर जड़ तत्वों की गम्य नहीं है। जड़ और चेतन के सम्बन्ध से इस साकार सृष्टि का सारा खेल चलता है, जिसको चलाने के लिए साइलेन्स की शक्ति, प्रकृति की शक्ति और साइन्स की शक्ति का विशेष सहयोग होता है।

इस विश्व-नाटक में आत्मायें मुख्य पार्टधारी हैं और उनके द्वारा और उनके लिए इस सृष्टि की सारी शक्तियाँ कार्य करती हैं और वे शक्तियाँ हैं आत्माओं के सुख के लिए पर विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार समय-समय पर आत्माओं के सुख-दुख का कारण बनती हैं। सुख-दुख में उनका क्या पार्ट है, उसके विषय में विचार करना आवश्यक है, जिससे उन शक्तियों का आत्मा के सुख के लिए अच्छे ते अच्छा प्रयोग किया जा सके।

साइलेन्स की शक्ति के द्वारा आत्मा दैहिक शक्तियों पर अर्थात् देहाभिमान पर विजय प्राप्त करती है, जिससे नई दुनिया की स्थापना होती है, जिसमें साइन्स की शक्ति और प्रकृति की शक्ति सहयोग करती है। जब दैहिक शक्ति आत्मिक शक्ति पर विजयी हो जाती है तब साइन्स की शक्ति और प्रकृति की शक्ति से विनाश होता है, आत्मा को अपने कर्मानुसार दुख-दर्द का फल मिलता है। साइन्स की शक्ति और प्रकृति की शक्ति आत्मा को आत्मिक शक्ति के आधार पर किये गये कर्मों के अनुसार सुख या दुख का कारण या आधार बनते हैं।

आत्मिक शक्ति का मूल स्रोत परमात्मा है, वही ज्ञान का सागर है, वह कल्पान्त में आकर इस विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान देते हैं अर्थात् अपना, आत्माओं का और विश्व-नाटक का ज्ञान देकर नये विश्व की रचना और पुराने विश्व का विनाश कराते हैं अर्थात् इस सृष्टि-चक्र को नवगति प्रदान करते हैं, इसका नव-निर्माण करते हैं, इसलिए परमात्म-शक्ति सर्वोपरि है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि इस सृष्टि में साइलेन्स, साइन्स और प्रकृति तीन मूल शक्तियाँ है, जिनके सम्बन्ध में यहाँ विचार करेंगे।

''ऐसे मत समझो साइन्स वालों में बहुत ताक़त है (साइन्स वालों की आत्मिक शक्ति भी डिग्रेड होती है और वे भी डिग्रेड होते-होते तमोप्रधान बन जाते हैं) ... यह है रुहानी ताक़त, जो सर्वशक्तिवान बाप से योग लगाने से मिलती है। साइन्स और साइलेन्स की इस समय जैसे लड़ाई है। तुम साइलेन्स में जाते हो, उससे तुमको बल मिल रहा है। साइलेन्स का बल लेकर तुम साइलेन्स दुनिया में चले जायेंगे।'' सा.बाबा 16.10.09 रिवा.

साइलेन्स-शक्ति

साइलेन्स की एक शक्ति है, जो इस सृष्टि में विभिन्न रूपों में काम करती है। आत्मिक शक्ति, साइलेन्स शक्ति, योग शक्ति, संकल्प शक्ति, आध्यात्मिक शक्ति, विल पॉवर ... एक ही शक्ति के पर्यायवाची शब्द हैं। साइलेन्स की शक्ति के अन्तर्गत निम्नलिखित चार प्रकार की शक्तियाँ आती है परन्तु इन चारों में वास्तविक साइलेन्स की शक्ति योग-शक्ति है, जिससे आत्मा और प्रकृति पावन बनती है और विश्व का नव-निर्माण होता है।

''सूक्ष्म वतन में ब्रह्मा का साक्षात्कार होता है, तुम भी ऐसे सूक्ष्म वतनवासी बनो। मूवी की प्रैक्टिस करनी है। धीरे से बहुत कम बोलना है, मीठा बोलना है। ऐसा पुरुषार्थ करते-करते तुम शान्ति के टॉवर बन जायेंगे। तुमको सिखलाने वाला

फिर उसमें क्या घटती बढ़ती होती है। वास्तव में प्रकृति अर्थात् पंच तत्वों की शक्ति में भी कोई घटती-बढ़ती न ही होती है और न ही हो सकती है क्योंकि उनके भी परमाणु अविनाशी हैं परन्तु समयान्तर में इन तत्वो के एक-दूसरे के साथ मिश्रण होने से उनका प्रभाव बदल जाता है, जिससे वे आत्माओं के लिए दुख-अशान्ति का कारण बन जाती हैं। खानियों से खनिज पदार्थ निकलते जाते हैं और उनके परमाणु विकेन्द्रित होते जाते हैं और विकेन्द्रित होते-होते, उनका सामूहीकरण समाप्त हो जाता है। फिर जब कल्पान्त में विनाश होता है, तब वे पुन: उनका सामूहीकरण होता है और वे अपने मूल स्वरूप में आ जाते हैं। यदि उनकी शक्ति खत्म होती या वे पदार्थ खत्म हो जाते तो फिर उनके आने का प्रश्न नहीं उठता और यदि आते तो कहाँ से आते हैं, यह नया प्रश्न पैदा हो जाता।

इस प्रकार हम देखें तो आत्मा, परमात्मा और प्रकृति की कोई भी शक्ति न कम होती है और न ही बढ़ती है, केवल उनका रूप परिवर्तन होता है, जिससे उसका प्रभाव बदल जाता है, जिससे वे आत्मा के सुख-दुख का कारण बनते हैं क्योंकि ये सुख-दुख का खेल है, जो अनादि-अविनाशी बना हुआ है और आत्मा, परमात्मा और प्रकृति के सहयोग से चलता है। परमात्मा निराकार है, इसलिए वह सुख-दुख दोनों से न्यारा है, आत्मा ही प्रकृति के सहयोग से सुख और दुख को पाती है अर्थात् प्रकृति आत्माओं को उनके कर्मों के अनुसार सुख या दुख देती हैं अर्थात् सुख-दुख का अनुभव कराती है।

Q. आत्मिक शक्ति जमा करने और पुण्य का खाता या प्रालब्ध के जमा करने में कोई अन्तर है? यदि है तो वह क्या है? इस सम्बन्ध में सतयुग-त्रेता और द्वापर-कलियुग के विधि-विधान क्या हैं? सतयुग-त्रेता में आने वाली आत्माओं और द्वापर-कलियुग में आने वाली आत्माओं में क्या अन्तर है?

सतयुग-त्रेता में संगमयुग पर जमा किया हुआ खाता या प्रालब्ध का आत्मा उपभोग करती है और द्वापर-कलियुग में कर्म और फल का विधि-विधान चलता

उसमें शक्ति भी अविनाशी है परन्तु शरीर विनाशी है, परिवर्तनशील है, इसलिए चलने से अर्थात् कार्य करने से और समयान्तर में उसमें असमर्थता आ जाती है, जिसके कारण आत्मा उससे कर्म करने में असमर्थ हो जाती है। परन्तु ये भी विचारणीय है कि जब मोटर खराब हो जाती है तो चिन्ता ड्राइवर को होती है, इसलिए शरीर की असमर्थता का प्रभाव आत्मा पर भी होता है अर्थात् वह थक जाती है, शरीर को चलाने से कुछ समय के लिए अरुचि हो जाती है।

Q. आत्मा अविनाशी है, उसमें गुण-शक्तियाँ अविनाशी हैं, तो उसमें शक्ति का क्या ह्रास या विकास होता है?

आत्मा की अविनाश्यता पर विचार करें तो उसमें न शक्ति बढ़ती है और न ही शक्ति घटती है। जब आत्मा परमात्मा के साथ होती है, उसकी बुद्धि में परमात्मा से मिला ज्ञान इमर्ज होता है तो उसकी शुभ कार्यों में प्रवृत्ति होती है, आत्मा शुभ कार्य करती है, जिसके फलस्वरूप आत्मा को प्रकृति से जो फल मिलता है, वह सुखदायी होता है और जब आत्मा का परमात्मा से सम्बन्ध नहीं होता है, उसकी बुद्धि में यथार्थ ज्ञान इमर्ज नहीं होता है, तो उसकी प्रवृत्ति तमोप्रधान की ओर अग्रसर होती है अर्थात् आत्मा अपनी सतोप्रधान स्थिति से सतो, रजो, तमो और फिर तमोप्रधान स्थिति में आ जाती है अर्थात् उस पर अज्ञानता का प्रभाव बढ़ता जाता है, जिससे उसकी बुद्धि अशुभ कार्यों में प्रवृत्त होती जाती है, आत्मा विकारी कार्यों में प्रवृत्त हो जाती है, जिन विकारी कार्यों के फलस्वरूप आत्मा को प्रकृति से दुख-अशान्ति की प्राप्ति होती है।

Q. क्या प्रकृति की शक्ति में कोई घटती-बढ़ती होती है? यदि होती है तो कैसे और कैसी होती है?

जैसे आत्मा अविनाशी है, वैसे ही प्रकृति भी अविनाशी है अर्थात् पंच तत्व भी अविनाशी हैं और जब तत्व अविनाशी हैं तो उसकी शक्ति भी अविनाशी है।

बाप है। तुमको सीखकर फिर औरों को भी सिखलाना है।''

सा.बाबा 3.12.09 रिवा.

साइलेन्स की शक्तियाँ

आत्मिक-शक्ति
परमात्म-शक्ति
योग-शक्ति अर्थात् योगबल
विश्व-नाटक की अनादि-अविनाशी अद्भुत शक्ति

आत्मिक-शक्ति

आत्मा में अपनी एक शक्ति है, जिस शक्ति के आधार पर आत्मा सारे कल्प अपना पूर्व निश्चित पार्ट बजाती है। समय और ड्रामा के पार्ट के अनुसार आत्मा अपने स्वरूप को, परमात्मा को और इस विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को भूलने के कारण सतोप्रधानता से तमोप्रधानता की ओर अग्रसर होती है, जिसके कारण उसके कर्म-संस्कारों में परिवर्तन आता जाता है और वह आत्मिक शक्ति उसके अनुसार कार्य करती है। सतयुग-त्रेता तक तो आत्मा ने जो अपना स्वभाव-संस्कार संगमयुग पर परमात्मा के सानिध्य और यथार्थ ज्ञान के आधार पर बनाया, उस अनुसार अपनी आत्मिक शक्ति से कर्म करती है और सुख भोगती है। परन्तु द्वापर से विस्मृति के कारण तमोगुण आत्मा पर प्रभावित हो जाता है और आत्मा अपनी आत्मिक के द्वारा विकर्मों में प्रवृत्त हो जाती है, जिसके कारण उसको दुख भोगना पड़ता है। द्वापर-कलियुग में आत्मा ज्ञान-अज्ञान दोनों के झूले में झूलती रहती है, जिस कारण अपनी आत्मिक शक्ति से कुछ अच्छे कर्म भी करती है तो कुछ विकर्म भी करती है। परन्तु विकर्म अधिक होते हैं, अच्छे कर्म कम होते हैं, इसलिए विकार्मों का बोझ आत्मा पर बढ़ता जाता है।

आत्मिक शक्ति के आधार पर ही आत्मायें गृहयुद्ध में प्रवृत्त होकर विनाश में सहयोग करती हैं।

आत्मा शान्त देश की रहने वाली है, इसलिए आत्मा का मूल गुण शान्त है और उसमें मूलत: शान्ति की शक्ति रहती है, जो उसको शान्ति की ओर प्रेरित करती रहती है। उस शान्ति की शक्ति के आधार पर आत्मा कुछ न कुछ अच्छे कर्मों का प्रयत्न अवश्य करती है।

एक आत्मा दूसरी आत्मा को याद करती है, तो दूर बैठे भी उसको आभास होता है, उसके अनुरूप संकल्प उसके मन-बुद्धि में उठते हैं, उसके अनुसार उससे कर्म होते हैं।

आत्मा ही शरीर के द्वारा अच्छे-बुरे कर्म करती है। आत्मा में ज्ञान के आधार पर दैवी शक्तियाँ आती हैं, जिनका अध्ययन तो हम अष्ट शक्तियों के रूप में करते हैं परन्तु जब आत्मा अपने स्वरूप को भूल जाती है, तब उस पर देहाभिमान अर्थात् अज्ञानता की शक्ति प्रभावित हो जाती है और वह आसुरी कार्य करती है परन्तु करती वे भी आत्मा ही है।

- आत्मिक शक्ति के आधार पर न आत्मा पावन बन सकती और न ही विश्व का नव-निर्माण हो सकता है। आत्मा पावन योग की शक्ति से बनेगी और उस योग-शक्ति से ही विश्व का नव-निर्माण होगा।

- आत्मायें द्वापर से अपनी मन-बुद्धि को एकाग्र करके संगमयुग पर परमात्मा के द्वारा दिये गये ज्ञान की स्मृति को जागृत करके उस ज्ञान के अनेक अंशों को लिखकर गीता शास्त्र को बनाया। यह भी साइलेन्स की शक्ति ही है, जो इतने समय पहले की बात को स्मृति में लाती है।

- शंकराचार्य ने परकाया प्रवेश किया, यह भी साइलेन्स की शक्ति के उपयोग से ही सम्भव हो सकता है। स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने अपने शिष्य स्वामी विवेकानन्द को दूर होते भी शक्ति प्रदान की।

की शक्ति ही है। बीज, वृक्ष और फिर बीज का ये चक्र है।

Q. अनेक भाई-बहनों अद्भूत अनुभव हैं, जो स्पष्ट करते हैं कि उन्होंने ने दिल से श्रृद्धा-भावना से परमात्मा को याद किया और परमात्मा का उनको सहयोग मिला, तो उसको साइलेन्स शक्ति अर्थात् योगबल कहेंगे या नहीं? तो वह योगबल अर्थात् साइलेन्स शक्ति है या नहीं?

बाबा ने कहा है - भले परमात्मा कहाँ भी हो परन्तु वह जहाँ अर्थात् सूक्ष्मवतन में ब्रह्मा तन में या ब्रह्मलोक में है परन्तु निश्चयबुद्धि होकर, परमात्मा को याद करने वाले को बाप की मदद अवश्य मिलती है। जैसे मैगनेट धूल में भी पड़े हुए लोहें के कणों को पकड़ लेता है, वैसे ही निश्चयबुद्धि की याद परमात्मा को पहुँचती है, तब तो वह मदद करता है।

Q. विश्व-नाटक के ज्ञान को समझकर, आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर ज्ञान का चिन्तन करना, स्वदर्शन चक्र को फिराना, परमात्मा को याद करना साइलेन्स शक्ति है या नहीं?

यह साइलेन्स की शक्ति भी है तो साइलेन्स की शक्ति को बढ़ाने का पुरुषार्थ भी है।

Q. काम करते हुए आत्मा थकती है या शरीर थकता है?

कहीं-कहीं बाबा ने कहा है कि आत्मा थक जाती है तो शरीर से डिटेच होकर सो जाती है और कहीं-कहीं बाबा ने कहा है कि शरीर थक जाता है तो आत्मा शरीर से डिटेच हो जाती है। अब प्रश्न है कि कौन थकता है। वास्तविकता ये है कि दोनों ही थकते हैं अर्थात् जब मोटर खराब हो जाये, उसमें पेट्रोल खत्म हो जाये तो ड्राइवर समर्थ होते भी आगे नहीं जा सकता है और मोटर अच्छी हो और ड्राइवर बीमार हो जाये तो भी मोटर नहीं चल सकती है। वैसे आत्मा तो अविनाशी है,

शक्ति काम करती है, वह सतोप्रधान साइलेन्स की शक्ति कही जायेगी क्योंकि वह साइलेन्स की शक्ति के मूल स्रोत परमात्मा की शक्ति के साथ काम करती है, उनके डायरेक्शन पर काम करती है।

Q. स्वामी विवेकानन्द, स्वामी रामकृष्ण परमहंस, अर्जुन दादा, पारी दादी, दादी प्रकाशमणी, दादी जानकी, तान्त्रिकों, झाड़-फूँक वाले किस शक्ति वाले कहे जायेंगे और क्यों? क्या इनकी शक्ति को साइलेन्स की शक्ति कहा जायेगा?
वह भी साइलेन्स की शक्ति ही कही जायेगी क्योंकि ये सब अपनी आत्मिक शक्ति और अपनी विल-पॉवर के आधार पर ही कार्य करते हैं परन्तु आत्मा का जब परमात्मा के साथ योग होता है, उससे जो साइलेन्स की शक्ति पैदा होती है, उससे आत्मा का अपना और समग्र विश्व का कल्याण होता है। बिना परमात्मा की याद के जो साइलेन्स की शक्ति वह सतत ह्रास को प्राप्त होती है और समयान्तर में निष्क्रिय हो जाती है। अभी जो ब्रह्मा कुमार-कुमारी हैं, उनका परमात्मा से योग निश्चित रूप से है, भले वह नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार है, इसलिए उनकी साइलेन्स की शक्ति है और वह विकास को पाती है।

Q. साइन्स की शक्ति क्या है अर्थात् जो वैज्ञानिक अविष्कार के लिए प्रयास करते हैं, वह है या जो उन्होंने अविष्कार करके साधन बनाये, वह साइन्स की शक्ति कही जायेगी?
बाबा ने अनेक बार मुरलियों में कहा है - जैसे साइन्स की शक्ति अपना प्रभाव दिखाती अर्थात् स्वीच ऑन करो तो वह गरम वातावरण को ठण्डा भी कर देती है और ठण्डे वातावरण को गरम भी कर देती है, ऐसे तुम साइलेन्स की शक्ति को सिद्ध करके दिखाओ - इन महावाक्यों के आधार पर हम समझ सकते हैं कि साइन्स की शक्ति क्या है? साइलेन्स की शक्ति के आधार पर ही वैज्ञानिक अविष्कार करते हैं और उस अविष्कार का जो फल होता है, वह भी साइलेन्स

- वास्तविकता ये है कि हिटलर जैसे तानाशाह, जिन्होंने विश्व में मृत्यु का ताण्डव मचाया, वह भी आत्मिक शक्ति ही थी परन्तु वह देहाभिमान से प्रभावित थी अर्थात् वह आत्मिक शक्ति माया के वश थी परन्तु वह करने वाली भी आत्मिक शक्ति ही थी।
- आत्मा की स्मृति के आधार पर वातावरण बनता है, जो अन्य आत्माओं को भी प्रभावित करता है। यह वातावरण को बनाने वाली आत्मिक शक्ति है।
- सूक्ष्म शरीर में भी आत्मिक शक्ति होती है क्योंकि उसमें भी आत्मिक शक्ति ही उसके द्वारा भी काम करती है।
- परमात्मा अभी ज्ञान की शक्ति से आत्मा में जो संस्कार भर देता है, वह सारे कल्प काम करती है।

''सतयुग में पवित्र होने से आत्मा में बल जास्ती रहता है। बल बिगर राजाई कैसे करेंगे। जरूर बाप से उन्होंने आशीर्वाद ली होगी। बाप है सर्वशक्तिमान। आशीर्वाद कैसे ली होगी? बाप कहते हैं - मुझे याद करो तो आशीर्वाद मिलेगी। ... आशीर्वाद माँगने की चीज़ नहीं है, यह तो अपनी मेहनत करने से मिलने की चीज़ है।''
सा.बाबा 31.10.09 रिवा.

''आत्मा ही 84 जन्मों का पार्ट बजाती है। छोटी सी आत्मा में कितनी ताक़त है। सारे विश्व पर राज्य करती है। ... हर एक धर्म में अपनी-अपनी ताक़त होती है। ... आत्मा में ही ताक़त है, जो शरीर द्वारा कर्म करती है। ... आत्मा पवित्र होने से फिर शरीर भी पवित्र मिलता है, आत्मा चमत्कारी हो जाती है।''
सा.बाबा 26.09.09 रिवा.

''जो मन्सा के महादानी होते हैं, उन्होंने संकल्प किया और उसकी तुरन्त सिद्धि मिलती है। ... वे अपने संकल्प को जहाँ चाहें, जब चाहें, वहाँ टिका सकते हैं। वे संकल्प के वश नहीं होते हैं लेकिन संकल्प उनके वश होता है। उनमें श्रेष्ठ

संकल्पों को रचने, व्यर्थ संकल्पों को विनाश करने और श्रेष्ठ संकल्पों की पालना करने की तीनों ही शक्तियाँ होती हैं।''

अ.बापदादा 15.04.71

''आत्मा से एकदम शान्ति और शक्ति लोप नहीं होती है। कुछ न कुछ रहती है। प्राय: लोप कहा जाता है। ... अभी भल तुम्हारी आत्मा पूरी कंचन नहीं बनी है परन्तु बुद्धि में बाप का परिचय तो है। बाप कन्चन बनने की युक्ति बताते हैं। ... उसके लिए चाहिए याद की यात्रा।'' सा.बाबा 15.09.09 रिवा.

''ऐसे ही रुहानी वारियर्स को भी जब और जैसा डायरेक्शन मिले, वैसे ही अपनी स्थिति को स्थित कर सकते हैं क्योंकि मास्टर नॉलेजफुल भी हो और मास्टर सर्वशक्तिवान भी हो। ... अभी-अभी परमधाम निवासी बन जाओ, अभी-अभी परमधाम निवासी से अव्यक्त स्थिति में स्थित हो जाओ, अभी-अभी सेवा के प्रति आवाज़ में आये, सेवा करते हुए भी अपने आत्मिक स्वरूप की स्मृति रहे।''

अ.बापदादा 18.06.71

''जब ऑमाइटी अथॉरिटी हो तो क्या अपनी बुद्धि की लगन को अथॉरिटी से जहाँ चाहें, वहाँ नहीं लगा सकते हो? ...जैसे स्थूल कर्मेन्द्रियों का मालिक बन जब और जैसे चाहे वैसे कार्य में लगा सकते हो, तो वैसे ही संकल्प को वा बुद्धि को जहाँ लगाने चाहो, वहाँ लगा सकते हो - इसको ही ईश्वरीय अथॉरिटी कहा जाता है।''

अ.बापदादा 18.06.71

''तुम देही-अभिमानी होकर कहाँ भी जाओ तो कब थकेंगे नहीं। भक्ति में भी मनुष्य तीर्थों आदि पर पैदल ही जाते थे। उस समय मनुष्यों की बुद्धि इतनी तमोप्रधान नहीं थी, बहुत श्रृद्धा-भावना से जाते थे, इसलिए थकते नहीं थे। बाबा को याद करने से मदद तो जरूर मिलेगी ना। भल वह पत्थर की मूर्ति है परन्तु बाबा उस समय अल्पकाल के लिए मनोकामना पूरी कर देते हैं। उससे भी आत्मा को बल मिलता था।'' सा.बाबा 25.12.09 रिवा.

''आत्मा में सतोप्रधाता की ताक़त थी , वह दिन प्रतिदिन कम होती जाती है।

पर ही वह इस विश्व-नाटक में अपना पार्ट बजाती है और शान्तिधाम में रहती है।

हर आत्मा में नीहित साइलेन्स की शक्ति का समयानुसार ह्रास भी होता है और विकास भी होता है परन्तु विकास का विधि-विधान हर योनि की आत्मा के लिए अलग-अलग है। मनुष्य के अतिरिक्त अन्य योनियों की आत्माओं की साइलेन्स की शक्ति न अधिक ह्रास होता है और न ही अधिक विकास होता है। जैसे बाबा ने अन्य धर्मों और देशों के लिए कहा है कि वे न अधिक सतोप्रधान बनते हैं और न अधिक तमोप्रधान बनते हैं। भारतवासी ही सबसे अधिक सतोप्रधान बनते हैं और भारतवासी ही सबसे अधिक तमोप्रधान भी बनते हैं। वास्तविकता देखा जाये तो देवी-देवता घराने की आत्मायें भी नम्बरवार हैं और उनमें भी साइलेन्स की शक्ति नम्बरवार ही होती है।

Q. इस सबके बाद हमारा कर्तव्य क्या है?

ज्ञान सागर परमात्मा ने हमको जो ज्ञान दिया है, उसको समझकर, धारण कर, उस पर पूर्ण श्रृद्धा-भावना रखते हुए निश्चयबुद्धि होकर परमात्मा को याद करना और परमात्मा ने हमको अपनी साइलेन्स की शक्ति के विकास का जो रास्ता बताया, वह सबको बताना और सभी आत्माओं को उस पर चलने में सहयोग करना। निश्चयबुद्धि विजयन्ति।

Q. संगमयुग पर विनाश में गृह-युद्ध, अणु-युद्ध, प्राकृतिक आपदायें जो काम करती हैं और नये विश्व के नव-निर्माण में जो शक्ति काम करती है, वह कौनसी शक्ति है?

गृह-युद्ध और अणु-युद्ध में जो शक्ति काम करती है, वह भी आत्मिक शक्ति के आधार ही काम करती है, इसलिए उसमें भी साइलेन्स की शक्ति काम करती है परन्तु वह तमोप्रधान साइलेन्स की शक्ति है। प्राकृतिक आपदाओं में जो शक्ति काम करती है, वह विश्व-नाटक की शक्ति है और नये विश्व के नव-निर्माण में जो

करने में समर्थ होती है अर्थात् उनकी बुद्धि में वह कल्प पूर्व की स्मृति जागृत होती है, जब वे गहन शान्ति में जाते हैं। परन्तु साइलेन्स की शक्ति का आधार साइन्स नहीं है। साइलेन्स की शक्ति का आधार विश्व-नाटक का सत्य ज्ञान, परमात्मा और आत्मा का सतत् पुरुषार्थ है।

साइन्स की शक्ति के उपयोग अर्थात् अविष्कार करने में अर्थात् विकास करने में साइलेन्स की शक्ति का ह्रास होता है परन्तु साइलेन्स की शक्ति के विकास में साइन्स की शक्ति की कोई आवश्यकता नहीं है। बल्कि साइलेन्स की शक्ति के साथ साइन्स की शक्ति का भी विकास होता है। जबसे परमात्मा आये और उन्होंने साइलेन्स की शक्ति के विकास के लिए यज्ञ रचा, तब से अनेक प्रकार के साधन साइन्स ने अविष्कार किये हैं। साइन्स की शक्ति साइलेन्स की शक्ति वालों के लिए सुख का आधार तो हो सकती है परन्तु साइलेन्स की शक्ति का आधार नहीं है। बिना साइन्स के साधनों के भी आत्मा साइलेन्स की शक्ति का विकास कर सकती है। साइलेन्स की शक्ति का आधार तो परमात्मा और परमात्मा से प्राप्त यथार्थ ज्ञान है।

साइलेन्स की शक्ति के बिना साइन्स की शक्ति काम नहीं कर सकती परन्तु साइलेन्स की शक्ति साइन्स की शक्ति के बिना ही काम करती है।

Q. क्या हर आत्मा, वह चाहे किसी योनि की हो, उसमें साइलेन्स की शक्ति होती है या नहीं ? यदि हाँ तो कैसे और यदि नहीं तो क्यों ? आकाश में पंक्षी उड़ते हैं, मधु-मक्खी फूलों से शहद चूस कर इकट्ठा करती है, तो उनकी वह शक्ति कौनसी शक्ति कही जायेगी ?

वास्तव में हर आत्मा में वह कैसी भी हो, किसी योनि की भी हो, उसमें साइलेन्स की शक्ति होती ही है क्योंकि आत्मा साइलेन्स देश की रहने वाली है और साइलेन्स हर आत्मा का स्वधर्म है। साइलेन्स की शक्ति हर आत्मा को विश्व-नाटक के विधि-विधान और उसके पार्ट के अनुसार मिली हुई है, जिसके आधार

आत्मा को सतोप्रधान से तमोप्रधान बनना ही है। जैसे मोटर चलती है तो बैटरी की ताक़त कम होती जाती है और जब बैटरी डिस्चार्ज हो जाती है तो मोटर खड़ी हो जाती है। आत्मा की बैटरी फुल डिस्चार्ज नहीं होती है, कुछ न कुछ ताक़त रहती है।'' सा.बाबा 26.12.09 रिवा.

परमात्म-शक्ति

परमात्मा भी एक आत्मा है, परन्तु उसमें कुछ विशेष गुण और शक्तियाँ हैं, जिनके आधार पर वह परमात्मा कहलाता है और उसका इस विश्व-नाटक में विशेष पार्ट है। परमात्मा का मुख्य गुण ज्ञान है और वह ज्ञान, प्रेम, आनन्द आदि का सागर है। संगमयुग पर परमात्मा आकर आत्माओं को आत्मा के स्वयं का, अपना और विश्व-नाटक का ज्ञान देते हैं, जिससे आत्माओं का परमात्मा के साथ सम्बन्ध जुटता है और उस सम्बन्ध के कारण आत्मा परमात्मा को याद करती है। परमात्मा के सानिध्य से उनकी शक्ति के सहयोग से आत्मा में ज्ञान जाग्रत होता है और उससे उसके तम्रोगुणी संस्कार खत्म होकर सतोगुणी संस्कार जाग्रत होते हैं, जिससे आत्मायें सुकर्म करने में समर्थ होती है। आत्मिक शक्ति और परमात्म-शक्ति के सहयोग से विश्व का नव-निर्माण होता है क्योंकि बाबा ने कहा है जब आत्मायें पावन बनती हैं तो उनके लिए दुनिया भी पावन चाहिए।

परमात्मा अपनी शक्ति से पुरानी आसुरी सृष्टि का विनाश और नई दैवी सृष्टि की स्थापना करती है परन्तु परमात्मा भी केवल अपनी शक्ति से ये कार्य नहीं कर सकता है। परमात्मा भी आत्मिक शक्ति के साथ ही यह कार्य कर सकता है, जिसके विषय में बाबा ने अनेक बार कहा है कि बाबा भी बिना बच्चों के कोई कार्य नहीं कर सकता है और बच्चे भी बाप के बिना विश्व का नव-निर्माण नहीं कर सकते, पावन नहीं बन सकते हैं।

- बाबा के द्वारा यज्ञ-स्थापना के आदि में अनेकों आत्माओं को अपनी संकल्प शक्ति से टच करके एकत्र किया और यज्ञ की स्थापना का बीज डाला, जो अभी

वृक्ष बनकर विस्तार को पा रहा है।

- ब्रह्मा बाबा के साकार शरीर में रहते परमात्मा अपने दृष्टि और वातावरण से अनेक आत्माओं को उनके स्वरूप में स्थित कर शान्ति की शक्ति की अनुभूति कराते हैं। अभी भी ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त रूप से शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा विश्व-परिवर्तन का कर्तव्य कर रहे हैं, अनेक आत्माओं प्रेर कर ज्ञान में ला रहे हैं, उनकी पालना कर रहे हैं। जो एडवान्स पार्टी में आत्मायें गई हैं, उनकी भी पालना कर रहे हैं। बाबा स्वयं भी ये कर्तव्य करते हैं और अन्य ब्राह्मण आत्माओं को भी ऐसा करने की प्रेरणा देते हैं। प्रेरणा देकर उनसे कराते हैं।

''बाप से तुमको कितनी माइट मिलती है। एक सर्वशक्तिवान बाप ही आकर सबकी सद्गति करते हैं। और कोई न सद्गति दे सकते हैं और न पा सकते हैं। ... मैं सर्व धर्मों का सर्वेन्ट हूँ। सबको आकर सद्गति देता हूँ।''

सा.बाबा 2.04.09 रिवा.

''मेरी ताक़त भी उनको मिलती है, जो मेरे से योग लगाते हैं। ... ऑलमाइटी बाबा से माइट बहुतों को मिलती है। वास्तव में माइट सबको मिलती है परन्तु नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार।'' सा.बाबा 1.04.09 रिवा.

''बाप को कहा जाता है सर्वशक्तवान, वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉर्टी। ... ये बड़ी समझने की बातें हैं, जो बाप समझाते हैं। सतयुग में इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। ... सर्वशक्तिवान एक बाप को ही कहा जाता है, दूसरा कोई मनुष्य नहीं, जिसको हम सर्वशक्तिवान कहें। लक्ष्मी-नारायण को भी सर्वशक्तिवान नहीं कह सकते।'' सा.बाबा 16.10.09 रिवा.

''आत्मा में जो शक्ति रहती है, वह फिर आहिस्ते-आहिस्ते डिग्रेड होती जाती है अर्थात् आत्मा में जो सतोप्रधान शक्ति थी, वह तमोप्रधान शक्ति हो जाती है। ... आत्मा की ये बैटरी घड़ी-घड़ी डिस्चार्ज नहीं होती है। आत्मा की शक्ति को डिस्चार्ज होने के लिए पूरा टाइम मिला हुआ है। ... रिलीजन इज़ माइट कहा जाता है।'' सा.बाबा 16.10.09 रिवा.

Q. क्या सतयुग से लेकर कलियुग तक साइलेन्स की शक्ति होगी और यदि होगी तो अभी की साइलेन्स की शक्ति और उसमें क्या अन्तर होगा?

आत्मिक शक्ति तो आत्मा में सारे कल्प रहती है, जिसके आधार पर ही आत्मा सारे कल्प में पार्ट बजाती है परन्तु योगबल नहीं होता है।

योगबल अर्थात् आत्मा का परमात्मा से सम्बन्ध और उनकी याद की शक्ति से आत्मिक शक्ति का विकास होता है, उसके द्वारा ही नई दुनिया की स्थापना होती है अर्थात् विश्व का नव-निर्माण होता है, आत्मा में दैवी गुणों की धारणा होती है।

अभी साइलेन्स की शक्ति के आधार पर ही साइन्स की शक्ति से पुरानी दुनिया का स्थूल में विनाश होता है और उससे ही नई दुनिया का स्थूल नव-निर्माण भी होता है।

सारे कल्प में आत्मिक शक्ति तो रहती है, संकल्प शक्ति भी रहती है परन्तु योगबल नहीं होता है, जिसके कारण आत्मा की अपनी आत्मिक शक्ति और संकल्प शक्ति का निरन्तर ह्रास होता है और ह्रास होते-होते आत्मा तमोप्रधान बन जाती है। तमोप्रधान होने से विकारों में प्रवृत्त होकर दुख-अशान्ति को प्राप्त होती है।

अभी जो साइलेन्स की शक्ति अर्थात् योगबल है, उससे आत्मा पर जो अज्ञानता का आवरण आ गया है, वह खत्म होता है, जिससे आत्मिक शक्ति जागृत होती है, जिसके फलस्वरूप आत्मा का और समग्र विश्व का कल्याण होता है, विश्व का नव-निर्माण होता है।

Q. साइलेन्स की शक्ति और साइन्स की शक्ति में क्या सामन्जस्य है?

साइन्स की शक्ति का मूलाधार तो साइलेन्स की शक्ति ही है क्योंकि वैज्ञानिकों में विज्ञान के संस्कार भी आत्मा में ही हैं, जो शान्त स्वरूप है और वैज्ञानिक भी गहन चिन्तन और शान्त में जाते हैं, तब ही उनकी बुद्धि साइन्स के अविष्कार

सतयुग में आत्मिक-शक्ति होती है परन्तु यथार्थ आत्मिक ज्ञान नहीं होता है, तो उनको देही-अभिमानी कैसे कहेंगे, परन्तु देहाभिमानी भी नहीं कह सकते हैं, इसलिए वहाँ देहाभिमानी और देही-अभिमानी दोनों से परे होते हैं। वास्तविकता तो ये है कि वहाँ देही-अभिमानी और देहाभिमान दोनों की बात ही नहीं होती है। वहाँ उनमें सूक्ष्म में देहभान नाममात्र होता है, जिसके कारण ही आत्मिक-शक्ति की गिरती कला होती है। सतयुग में आत्माओं की आत्मिक शक्ति का ह्रास बहुत मन्द गति से होता है परन्तु ह्रास होता अवश्य है। बाबा ने कहा है - मोटर चलेगी तो बैटरी की शक्ति कम अवश्य होगी। इसलिए सतयुग में क्या होता है और क्या नहीं होता है, ये बहुत विचारणीय विषय है। सतयुग में न देही-अभिमानी होते और न देहाभिमानी होते, वहाँ नेचुरल जीवन होता है।

Q. आत्माभिमानी, देहाभिमानी और देह-भान के क्या-क्या गुण-धर्म होते हैं? तीनों स्थितियाँ क्या और कैसी होंती हैं?

देही-अभिमानी अर्थात् आत्मा का यथार्थ ज्ञान हो, आत्मा के मूल निवास स्थान का ज्ञान हो, आत्माओं के बाप परमात्मा का ज्ञान हो, उसकी स्मृति हो।

देही-अभिमानी और परमात्माभिमानी होने से आत्मिक शक्ति का विकास होता है और देह-भान एवं देहाभिमान से आत्मिक-शक्ति का ह्रास होता है।

देहाभिमानी अर्थात् आत्मिक स्वरूप की विस्मृति, जिससे आत्मा विकारों के वशीभूत होकर विकर्मों में प्रवृत्त होकर दुख-अशान्ति को प्राप्त करती है। देहाभिमान के कारण आत्मा के विकर्मों में प्रवृत्त होने के कारण आत्मिक शक्ति का तीव्रता से ह्रास होता है।

देह-भान में आत्मा में आत्मिक शक्ति होती है, जिससे उसका देह पर शासन होता है, कर्मेन्द्रियाँ आत्मा के गुण-धर्मों के अनुसार कर्म करती हैं, आत्मा को प्रकृति मनवांच्छित फल देती है, जिससे आत्मा सदा सुख का अनुभव करती है।

''रिलीजन इज़ माइट कहा जाता है। देवता धर्म में ताक़त है, वे विश्व के मालिक हैं। उनमें क्या ताक़त थी ? कोई लड़ने आदि की ताक़त नहीं थी। ताक़त मिलती है सर्वशक्तिवान बाप से। आत्मा की ताक़त क्या चीज़ है? तुम्हारी आत्मा सतोप्रधान थी, अब तमोप्रधान बनी है, इसलिए विश्व के मालिक के बदले विश्व के गुलाम बन गये हो।'' सा.बाबा 16.10.09 रिवा.

''ड्रामा अनुसार तुम मेहनत करते रहते हो। जितना-जितना बाप को याद करेंगे, उतना-उतना पाप कटेंगे। ... तुम बच्चों को वहाँ कितनी कशिश हुई, कैसे सब भागे। बाप में कशिश है ना। अभी तुमको भी ऐसा सम्पूर्ण बनना है परन्तु बनेंगे सब नम्बरवार ही। ये राजधानी स्थापन हो रही है।''

सा.बाबा 19.08.09 रिवा.

''अभी तुम बच्चों को पता है ऊपर से कैसे सब आत्मायें नम्बरवार यहाँ आती हैं पार्ट बजाने। बाप जो ऊपर में थे, वह भी अभी नीचे आ गये हैं, तुम सबकी बैटरी चार्ज करने। अभी बाप को याद करके अपनी बैटरी चार्ज करना है। ... तुम जानते हो - इस रथ द्वारा बाप ने हमको रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का सब राज़ समझाया है।'' सा.बाबा 4.12.09 रिवा.

''शिवबाबा सभी आत्माओं का बाप है, उन्हें सर्वशक्तिवान कहा जाता है। तुम्हारे में भी सर्व शक्तियाँ थी, तुम सारे विश्व पर राज्य करते थे। ... अभी तुम सर्वशक्तिवान बाप की याद से शक्ति ले रहे हो। आत्मा ही 84 जन्म पार्ट बजाती है। आत्मा में सतोप्रधानता की ताक़त थी, वह दिन प्रतिदिन कम होती जाती है।''

सा.बाबा 26.12.09 रिवा.

योग-शक्ति अर्थात् योगबल

वास्तव में बाबा जिसे साइलेन्स की शक्ति कहते हैं, वह ये योगशक्ति ही है, जिसके आधार पर आत्मायें, प्रकृति पावन बनती है और विश्व का नवनिर्माण होता है। आत्मिक-शक्ति, परमात्म-शक्ति, विश्व-नाटक की अनादि-अविनाशी शक्ति, प्रकृति की शक्ति तो अनादि-अविनाशी हैं और हर समय रहती ही हैं

और उसके होते भी निरन्तर समग्र विश्व का और आत्माओं की उतरती कला ही होती है अर्थात् विश्व का और आत्माओं का उत्थान नहीं होता है। कल्पान्त में विश्व-परिवर्तन में जो शक्ति काम करती है वह है योग-शक्ति अर्थात् साइलेन्स-शक्ति। इस शक्ति का आधार क्या है, इस पर विचार करना अति आवश्यक है। आत्मा में अविनाशी शक्ति है, जिसके आधार पर वह सारे कल्प काम करती है, परमात्मा में भी जो शक्ति है, वह सारे कल्प उसमें रहती ही है और प्रकृति की शक्ति भी सारे कल्प रहती है और अपना काम करती है परन्तु आत्मा, परमात्मा और विश्व-नाटक एवं प्रकृति की शक्ति होते भी सारे कल्प न आत्माओं का व्यक्तिगत उत्थान हुआ और न ही विश्व का उत्थान हुआ।

आत्माओं का और समग्र विश्व का उत्थान योग-शक्ति के आधार पर ही होता है। योग-शक्ति संगमयुग पर ही होती है, जब परमात्मा ब्रह्मा तन में अवतरित होते हैं, तब ही आत्मा और परमात्मा के सहयोग से एक विशेष शक्ति जागृत होती है अर्थात् पैदा होती है, जिस शक्ति से ही आत्मा और विश्व का उत्थान होता है, विश्व का नव-निर्माण होता है और पुराने विश्व का विनाश होता है। जिसके लिए बाबा कहते हैं - तुम बच्चे योगबल से पावन बनते हो और जब तुम पावन बन जाते हो तो तुम्हारे लिए विश्व भी नया चाहिए। तो बाबा तुम्हारे लिए विश्व को नया बना रहे हैं और जब विश्व नया बन जायेगा तो पुराने विश्व का विनाश अवश्य होगा। बाबा ने अनेक बार मुरलियों में कहा है - बाप भी बच्चों के बिना कोई काम नहीं कर सकता है और बच्चे भी बाप के बिना स्वयं का और विश्व का उत्थान नहीं कर सकते हैं। न ही प्रकृति की शक्ति विश्व का नव-निर्माण कर सकती है। विश्व का नव-निर्माण योग शक्ति के द्वारा ही होता है।

''बाप अकेला कुछ नहीं कर सकता है और आप भी अकेले कुछ नहीं कर सकते हो। ... सिवाए बाप के सफलता नहीं मिलती है। तो न बाप अकेला कुछ कर सकता है और न बच्चे अकेले कुछ कर सकते हैं। ... तुम बच्चों से मिलने के लिए भी ब्रह्मा का आधार लेना ही पड़ता है। ब्रह्मा के बिना बाप भी कुछ कर

राज़ तुम बच्चों को ही जाकर सबको समझाना है, सर्विस करनी है। ... प्रजापिता ब्रह्मा भी कहते हैं - निराकार फादर को याद करना है। यह कारपोरियल फादर हो जाता है। शिवबाबा है इन्कारपोरियल फादर।''

सा.बाबा 9.11.09 रिवा.

Q. क्या सतयुग में आत्मायें आत्माभिमानी और आत्म-ज्ञानी होंगे? यदि होंगे तो कैसे और यदि नहीं तो क्या होंगे? देही-अभिमानी और देहाभिमानी होने से आत्मिक शक्ति पर क्या प्रभाव होता है?

सतयुग में यथार्थ आत्मिक ज्ञान नहीं होता है परन्तु आत्मा में आत्मिक-शक्ति अपनी सम्पूर्ण स्थिति में होती है और देह-भान नाममात्र होता है, इसलिए देहाभिमान आत्मा पर हावी नहीं होता है। विश्व-नाटक के नियमानुसार ह्रास होते-होते जब आत्मिक-शक्ति कम हो जाती है, तब द्वापर से देहाभिमान आत्मा पर हावी हो जाता है। मायावी शक्ति इतनी शक्तिशाली है कि द्वापर से आत्मा में 12 कलायें होते भी अर्थात् आत्मा की 25 प्रतिशत शक्ति कम होने से ही आत्मा पर देहाभिमान प्रभावी हो जाता है आत्मा को विकारी कर्मों में ढकेल देता है, जिनको करके आत्मा अनेक प्रकार से दुख-अशान्ति को प्राप्त करती है।

बाबा ने कहा है अपने को शरीर समझना अर्थात् उल्टा लटकना परन्तु सतयुग में भी सारे जीवन अपने को आत्मा समझकर दूसरों को उनके आत्मिक स्वरूप में देखते नहीं हैं। ये ज्ञान और अभ्यास तो संगम पर ही होता है। परन्तु सतयुग-त्रेता में संगमयुग पर संचित आत्मिक-शक्ति के आधार पर सारा कार्य-व्यवहार करते रहते हैं। आत्मा में विकार न होने और देहाभिमान न होने के कारण आत्मा को किसी भी प्रकार की दुख-अशान्ति की अनुभूति नहीं होती है और वहाँ मृत्यु का कोई भय या दुख नहीं होता है, इसलिए अन्त समय सहज ही पुरानी देह का त्याग कर नयी देह में प्रवेश करती हैं। संगमयुग पर आत्मा ज्ञान से देही-अभिमानी बनती है, जिससे आत्मा में आत्मिक-शक्ति जागृत होती है।

तो उससे उत्पन्न शक्ति ही योगबल है अर्थात् जब आत्मा का परमात्मा से संयोग होता है अर्थात् सम्बन्ध होता है, उस सम्बन्ध से जो शक्ति पैदा होती है, वह योग-बल है। उस योगबल से आत्मा अपने मूल स्वरूप में स्थित होती है, जिससे उसकी अभिरुचि शुभ कार्यों में होती है, पाप-कर्मों से अरुचि हो जाती है, जिससे आत्मा का पापों का खाता खत्म होता है, पुण्य का खाता जमा होता है। योगबल के आधार पर आत्मा नये विश्व के नव-निर्माण में परमात्मा के कार्य में सहयोग करती है। परमात्मा बच्चों के द्वारा ही कार्य कराता है क्योंकि बच्चों को ही करना है और उनको ही उसका फल पाना है, बाप तो अभोक्ता है।

आत्मिक शक्ति का प्रयोग के साथ ह्रास होती है, परमात्म-शक्ति सदा एकरस रहती है क्योंकि परमात्मा निराकार होने के कारण अभोक्ता है।

परमात्मा भी बिना आत्मिक शक्ति के विश्व को पावन नहीं बना सकता है। परमात्मा जब ब्रह्मा तन में आता है, आकर ज्ञान देता है, उस ज्ञान को धारण कर आत्मायें परमात्मा से योगयुक्त होती हैं, तब उससे जो शक्ति पैदा होती है, वह विश्व का नव-निर्माण करती है, जड़-जंगम-चेतन तीनों प्रकृतियों को पावन करती है।

''यहाँ बैठते हो तो बुद्धि में यह नॉलेज रहनी चाहिए। बाप भी नॉलेजफुल है, तुमको भी मास्टर नॉलेजफुल बनाते हैं। बाप भल शान्तिधाम में रहते हैं तो भी उनको नॉलेजफुल कहा जाता है। तुम्हारी आत्मा में भी सारी नॉलेज रहती है ना। ... यह नई पढ़ाई पढ़कर तुम कितना ऊंच बनते हो। फर्स्ट सो लॉस्ट और लॉस्ट सो फर्स्ट बनते हैं।'' सा.बाबा 19.11.09 रिवा.

''परमात्मा से बिछुड़कर आत्मायें परमधाम से यहाँ आकर अपना-अपना पार्ट बजाती हैं। पार्ट बजाते-बजाते सतोप्रधान से उतरते-उतरते तमोप्रधान बन जाती हैं। ... बाप भी 5000 वर्ष के बाद आते हैं। यह सृष्टि का चक्र ही 5000 वर्ष का है।'' सा.बाबा 9.11.09 रिवा.

''देवतायें जो पुण्यात्मा थे, वे ही पुनर्जन्म में आते-आते पापात्मा बनते हैं। यह

नहीं सकता।'' अ.बापदादा 09.03.94

योगबल से माया पर विजयी बनते हैं। जब परमात्मा की याद से माया पर विजयी बनते हैं, तब ही परमात्म शक्ति का पता पड़ता है। परमात्मा की याद से, परमात्मा के सम्बन्ध से, परमात्मा सानिध्य से आत्मा के ऊपर जो देहाभिमान की मैल चढ़ी है, जिससे आत्मा अपने स्वरूप को भूल गयी है और भूलने के कारण उसकी मूल शक्ति यथार्थ रीति काम नहीं करती है, वह जागृत हो जाती है, इसलिए इसको योगबल कहा जाता है।

''तुम्हारे में भी नम्बरवार ताक़त है, जिस अनुसार ही सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी बनते हो। ताक़त तो हर बात में चाहिए। यह है रुहानी माइट। बाप कल्प-कल्प कहते हैं - हे बच्चो, मामेकम् याद करो। सर्वशक्तिवान बाप को याद करो तो आत्मा में ताक़त आयेगा, आत्मा पवित्र बन जायेगी।''

सा.बाबा 7.11.09 रिवा.

''याद की यात्रा में बहुत बल है, याद की यात्रा वालों को बहुत खुशी रहती है। ... कमाई होती रहेगी तो कभी थकावट नहीं होगी, वे कभी भूख नहीं मरेंगे। ... तुमको अभी अथाह धन मिलता है, तो तुमको कितनी खुशी होनी चाहिए!''

सा.बाबा 7.11.09 रिवा.

''तुम्हारा सबसे बड़ा दुश्मन है यह काम विकार। योगबल से तुम इस पर विजय पाते हो। योगबल का अर्थ भी कोई नहीं समझते हैं।''

सा.बाबा 4.11.09 रिवा.

''बाबा से हमको विश्व में शान्ति स्थापन करने की ताक़त मिलती है। हम विश्व के मालिक बन जाते हैं। ... यह फिर है 21 जन्मों के लिए ताक़त। अभी तुम जानते हो - हमको सर्वशक्तिवान बाप से ताक़त मिलती है, विश्व पर राज्य करने की। बाप का बच्चों पर लव रहता है ना।'' सा.बाबा 21.10.09 रिवा.

''बाप को याद करते-करते तुम बहुत ताक़त वाले बन जाते हो। सर्वशक्तिवान और कोई को नहीं कहा जाता है। सबको शक्ति मिलती है एक सर्वशक्तिवान

बाप से। ... सभी आत्मायें अपना हिसाब-किताब चुक्तू करके फिर ऐसे ही नम्बरवार शक्तिवान बनते हैं। पहले नम्बर में है देवी-देवताओं की शक्ति।''

सा.बाबा 21.10.09 रिवा.

''हर एक की एक्टिविटी से पता पड़ जाता है कि इनका बाप से कितना लव है। एक बाप के साथ ही लव चाहिए, भाई-भाई के साथ नहीं। ... अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो तो सब पाप कट जायें। याद से ही ताक़त आयेगी। दिन प्रतिदिन तुम्हारी बैटरी भरती जायेगी क्योंकि याद से ज्ञान की धारणा होती जाती है।''

सा.बाबा 22.10.09 रिवा.

''बहुत बच्चे हैं, जिनको यह निश्चय ही नहीं है कि शिवबाबा इस ब्रह्मा-तन द्वारा हमको सिखला रहे हैं। ... अगर पूरा निश्चय होता तो बहुत प्यार से बाप को याद करते-करते अपने में बल भरते, बहुत सर्विस करनी है क्योंकि सारे विश्व को पावन बनाना है। योग में भी कमी है तो ज्ञान में भी कमी है।''

सा.बाबा 14.09.09 रिवा.

''अभी ही याद से पवित्र बन सकते हो। परमधाम तो है पवित्र धाम, सतयुग की पावन दुनिया में इस ज्ञान की कोई दरकार नहीं रहती है क्योंकि वहाँ कोई विकर्म होता नहीं। यहाँ याद से विकर्म विनाश करने हैं। वहाँ तो तुम नेचुरल चलते हो, जैसे यहाँ चलते हो। फिर थोड़ा-थोड़ा नीचे उतरते हो।''

सा.बाबा 7.08.09 रिवा.

Q. योग-शक्ति क्या है?

जब आत्मा को परमात्मा द्वारा अपना, परमात्मा का और विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान मिलता है और आत्मा अपने को पहचानकर परमात्मा को याद करती है, तो जो शक्ति पैदा होती है, वह योग-शक्ति है, जिसके द्वारा चेतन आत्मायें और जड़ तत्व अर्थात् जड़ प्रकृति दोनों पावन बनते हैं। परमात्मा के साथ योग से ही आत्मा की सोई हुई शक्ति जागृत होती है और आत्मा अगले कल्प में पार्ट बजाने के लिए नव-जीवन प्राप्त करती है। जड़ तत्व पावन बनकर नये विश्व का निर्माण

परमात्मा की याद ही आत्मा के निर्संकल्पावस्था में स्थिति होने का एकमात्र सफल साधन है।

आत्मा में कुछ भी घटता-बढ़ता (Plus-Minus) नहीं होता है, केवल जागृत-सुसुप्त (Merge-Emerge) होता है। परमात्मा की याद से आत्मा की सुसुप्त शक्ति जागृत होती है और सतयुग से यथार्थ ज्ञान न होने के कारण आत्मिक शक्ति सुसुप्त होती जाती है और द्वापर से देहाभिमान उस पर हावी हो जाता है।

''बाप से तुमको कितनी माइट मिलती है। एक सर्वशक्तिवान बाप ही आकर सबकी सद्गति करते हैं। और कोई न सद्गति दे सकते हैं और न पा सकते हैं। ... मैं सर्व धर्मों का सर्वेन्ट हूँ। सबको आकर सद्गति देता हूँ।''

सा.बाबा 2.04.09 रिवा.

''यह बाप तो है ज्ञान की अथॉरिटी। कोई मनुष्य ज्ञान की अथॉरिटी हो न सके। तुम ज्ञान का सागर, आलमाइटी अथॉरिटी मुझे ही कहते हो। तुम बाप को याद करते हो तो बाप से ताकत लेते हो, जिससे विश्व के मालिक बन जाते हो।''

सा.बाबा 9.05.09 रिवा.

Q. आत्मिक शक्ति क्या है, परमात्म-शक्ति क्या है और योगबल क्या है?

आत्मिक शक्ति वह शक्ति है, जिसके आधार पर आत्मा सारे कल्प अपना पार्ट बजाती है, परमात्म-शक्ति वह शक्ति है, जिसके आधार पर परमात्मा विश्व का नव-निर्माण करते हैं परन्तु परमात्म-शक्ति बिना आत्मिक-शक्ति के कार्य नहीं कर सकती है क्योंकि परमात्मा को कार्य करने के लिए अपना शरीर तो है नहीं। इसलिए बाबा ने अनेक बार मुरलियों में कहा है कि बाप भी बच्चों के बिना कोई कार्य नहीं कर सकता है और बच्चे भी बाप के बिना विश्व के नव-निर्माण का कार्य नहीं कर सकते हैं क्योंकि परमात्मा के सहयोग के बिना आत्मा की सुसुप्त शक्ति जागृत नहीं हो सकती है। जब आत्मा और परमात्मा का सहयोग होता है

वरदान बाँटते हैं। जो अमृतवेले की विशेष शक्ति विशेष वरदान स्वीकार करते हैं, वह विशेष तीव्र पुरुषार्थी बनता है। अमृतवेले का महत्व रखना अर्थात् बापदादा के सदा दिल तख्तनशीन बनना।'' अ.बापदादा 15.11.09

Q. वैज्ञानिक अर्थात् साइन्टिस्ट क्या हैं, साइन्स क्या है, साइन्स की शक्ति क्या है?

विज्ञान वह विद्या है, जो प्रकृति की शक्ति और प्रकृति के तत्वों का नियमबद्ध अध्ययन करता है, उस अध्ययन को करने वाले और उससे प्राप्त परिणामों का उपयोग करने वाले वैज्ञानिक हैं। वैज्ञानिक प्रकृति के तत्वों का अध्ययन करके जो निष्कर्ष निकालते हैं, उससे जो कार्य होते हैं, वह साइन्स की शक्ति है। जिसके लिए बाबा कहते हैं - साइन्स की शक्ति गरम वातावरण को ठण्डा और ठण्डे वातावरण को गरम कर देती है, ऐसे तुम साइलेन्स की शक्ति का प्रयोग करके दिखाओ।

साइन्स की शक्ति जब परमात्म-शक्ति से प्रभावित होती है तो विश्व का नव-निर्माण करती है और जब देहाभिमान से प्रभावित होती है तो पुराने विश्व का विनाश करती है।

''यह बहुत बड़ा बेहद का ड्रामा है, जो हू-ब-हू रिपीट होता ही रहता है। नम्बरवार पार्टधारी तो होते ही हैं। कोई रुहानी सर्विस करने वाले, कोई स्थूल सर्विस करने वाले। ... विनाश करने में भी यह साइन्स मदद करती है, फिर वही साइन्स तुमको नई दुनिया बनाने में भी मदद देगी। यह ड्रामा बड़ा वण्डरफुल बना हुआ है।'' सा.बाबा 27.02.09 रिवा.

Q. क्या परमात्मा की याद से आत्मा को शक्तियाँ मिलती हैं?

निराकार परमात्मा की याद में जब आत्मा साइलेन्स में अर्थात् निर्संकल्पावस्था और निर्विकल्पावस्था में जाती है तो आत्मा की सुषुप्त शक्तियाँ जागृत होती हैं।

करते हैं, पावन आत्माओं को सुख देने के निमित्त बनते हैं।

आत्मा जब परमात्मा को याद करती है तो उसकी याद से आत्मा से जो प्रकम्पन पैदा होते हैं, उनसे जो वातावरण का निर्माण होता है, उससे न केवल मनुष्यात्मायें बल्कि सर्व योनि की आत्मायें और जड़ तत्व भी पावन बनते हैं।

आत्मायें जब परमात्मा को याद करती हैं तो उनसे पैदा होने वाले प्रकम्पन वैज्ञानिकों को भी नये-नये अविष्कार करने में सहयोग देते हैं, इसलिए देखा जाये तो परमात्मा के आने के बाद ही विश्व में अनेक प्रकार के अद्भुत अविष्कार हुए हैं, जो नये विश्व में नव-निर्माण और पुराने विश्व के विनाश में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान देंगे।।

''अभी तुम समझते हो हम योगबल से हर कल्प रावण पर जीत पाते आये हैं, अब भी पा रहे हैं। सिखलाने वाला है बेहद का बाप। ... कैसा विचित्र ड्रामा है। कहते भी थे - हे परमपिता परमात्मा, याद भी करते थे, फिर भी जानते नहीं थे। ... आत्मा और परमात्मा को बाप के बिगर कब कोई रियलाइज़ करा न सके।''

सा.बाबा 16.11.09 रिवा.

''तुम जानते हो अभी तो खूने नाहेक खेल होना है। यह भी एक खेल दिखाते हैं। यह तो है बेहद की बात। कितने मरेंगे, नेचुरल केलेमिटीज़ होगी। सबका मौत होगा। इसको देखने की बड़ी हिम्मत चाहिए। ... इसमें बहुत निडरपना चाहिए। तुम तो शिव शक्तियाँ हो, शिवबाबा है सर्वशक्तिवान। हम उनसे शक्ति लेते हैं।'' सा.बाबा 25.01.10 रिवा.

''इस योग और ज्ञान से आत्मा को बेहद का बल मिलता है क्योंकि बाप सर्वशक्तिवान अथॉरिटी है। ... बाप बच्चों को एडॉप्ट करते हैं, वर्सा देने के लिए। प्रवेश होना और एडॉप्ट करना बात एक ही है। बच्चे समझते हैं और समझाते भी हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार।'' सा.बाबा 28.01.10 रिवा.

Q. क्या सारे सृष्टि-चक्र में योगबल रहता है?

नहीं, योगबल से आत्मायें और प्रकृति जो पावन बनती है, आत्मा की सोई शक्ति जागृत होती है, वही सारे कल्प काम करती है। योगबल तो केवल संगमयुग पर ही होता है और परमात्मा के परमधाम जाने के साथ पूरा हो जाता है।

Q. क्या साधू-सन्यासियों के द्वारा किये गये पुरुषार्थ को योगबल कहेंगे?

नहीं, क्योंकि उससे न विश्व का नव-निर्माण होता है, न आत्माओं की शक्ति बढ़ती है और न ही प्रकृति की शक्ति का विकास होता है। उनके द्वारा किये गये पुरुषार्थ से आत्माओं की शक्ति, प्रकृति की शक्ति के ह्रास की गति मन्द अवश्य होती है। जिसके लिए बाबा कहते हैं - सन्यासी अपनी पवित्रता की शक्ति से भारत को खास और विश्व को आम थमाते हैं अर्थात् तीव्रता से गिरने से रोकते हैं। सन्यासी विश्व को योगबल की मदद नहीं दे सकते क्योंकि उनका सम्बन्ध परमात्मा से नहीं होता है तो उनमें योगबल नहीं हो सकता है। योगबल की मदद तब कहा जाये, जब परमात्मा पिता को याद कर योगबल से विश्व को पावन बनाने में साहयोग करें। वह तुम बच्चे ही करते हो।

Q. योगबल से क्या-क्या कार्य होते हैं?

योगबल से आत्माओं के पापों का खाता भस्म होता है और आत्मायें पावन बनती हैं। योगबल से जड़ प्रकृति पावन बनती है, जिससे भविष्य नये कल्प में पावन आत्माओं के लिए सुखदायी काम करती है।

योगबल से आत्मायें अपने कर्मभोग पर विजय प्राप्त करती हैं और दूसरी आत्माओं को भी उनके कर्मभोग पर विजय प्राप्त करने में सहयोग करती हैं।

योगबल से आत्मायें साइन्स और टेक्नॉलॉजी का विकास और उपयोग करके नये विश्व का नव-निर्माण करती हैं। योगबल से आत्मायें पावन बनकर परमधाम अपने घर जाती हैं और अन्य आत्माओं को घर जाने का रास्ता बताती हैं, उनको घर जाने में सहयोग प्रदान करती हैं।

विविध प्रश्न एवं सम्भावित उत्तर

Q. क्या परमात्मा की याद से आत्मा में शक्ति आती है? यदि आती है तो क्या उस अनुसार परमात्मा की शक्ति घटती है और आत्मा की शक्ति बढ़ती है? यदि परमात्मा की शक्ति घटती नहीं है तो आत्मा की शक्ति कैसे बढ़ती है, उसका क्या विधि-विधान है?

परमात्मा और आत्मायें दोनों अविनाशी हैं और उनमें नीहित शक्तियाँ भी अविनाशी हैं, इसलिए परमात्मा की याद से आत्मा में कोई शक्ति आती नहीं हैं परन्तु योग के विधि-विधान अनुसार ज्ञान-सागर परमात्मा की याद से आत्मा पर जो अज्ञानता अर्थात् अपने स्वरूप की विस्मृति का आवरण आ गया है अर्थात् देहाभिमान के वश आत्मा को अपने गुण व शक्तियों की विस्मृति हो गई है, वह पुन: जागृत हो जाती है, जिससे आत्मा में नीहित शक्ति पुन: अपना काम करने लगती है। इसलिए कहा जायेगा कि योग से आत्मा की सुसुप्त शक्ति जागृत होती है, उसमें कोई बाहर से शक्ति नहीं आती है। इसलिए परमात्मा की शक्ति के घटने और आत्मा की शक्ति बढ़ने की बात नहीं पैदा होती है।

- आत्मा में कुछ भी घटत-बढ़त (Plus-Minus) नहीं होता है, केवल आत्मिक शक्ति जागृत-सुसुप्त (Merge-Emerge) होती है। परमात्मा की याद से आत्मा की सुसुप्त शक्ति जागृत होती है। यद्यपि सतयुग में आत्मा में आत्मिक शक्ति होती है, जिससे उसका देहाभिमान पर नियन्त्रण होता है, फिर भी आत्मिक स्वरूप का यथार्थ ज्ञान न होने के कारण आत्मिक शक्ति सुसुप्त होती जाती है और देह-भान बढ़ता जाता है, जिसके कारण द्वापर से देहाभिमान उस पर हावी हो जाता है।

''बाप में सारी नॉलेज है, जो नॉलेज तुम्हारे में भी अभी इमर्ज हो रही है, जिस नॉलेज से ही तुम इतना ऊंच पद पाते हो। बाप है बीजरूप, उसमें झाड़ के आदि-मध्य-अन्त की सारी नॉलेज है।'' सा.बाबा 18.11.09 रिवा.

''बापदादा दिल-तख्तनशीन हर बच्चे को रोज़ अमृतवेले विशेष शक्ति विशेष

सबको आकर्षण होती थी, तो मनुष्य उनको वहाँ जाकर खाना पहुँचा आते थे। निडर हो रहते थे। तुमको भी निडर बनना है। इसमें बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए। ... यहाँ कोई से दिल लगाई तो बहुत सजायें खानी पड़ेंगी।''

सा.बाबा30.06.09 रिवा.

''तीव्रता अर्थात् सोचा और हुआ। संकल्प, बोल और कर्म तीनों श्रेष्ठ और साथ-साथ हों। व्यर्थ को वा उल्टे संकल्प को चेक करो तो देखेंगे उसकी गति बहुत फास्ट होती है। ... उसकी गति का जोश इतना तीव्र होता है, जो श्रेष्ठ संकल्प, कर्म, मर्यादा, ब्राह्मण जीवन की महानता का होश समाप्त हो जाता है। व्यर्थ का जोश सत्यता का और यथार्थता का होश समाप्त कर देता है। ... फिर बाद में सोचते हैं।'' अ.बापदादा 14.04.94

''तुम जानते हो हमको इस दुनिया को पवित्र बनाना है। योग में रहकर विश्व की आत्माओं को शान्ति और सुख का दान देना है। इसलिए बाबा कहते हैं - रात्रि को उठकर योग में बैठो, सृष्टि को योग का दान दो। सवेरे उठकर अशरीरी होकर बैठो तो तुम न सिर्फ भारत को बल्कि सारी सृष्टि को योग से शान्ति का दान देते हो और फिर चक्र का ज्ञान सुमिरण करने से तुम सुख का दान देते हो।'' सा.बाबा 7.01.02 रिवा.

Q. योगबल के विकास का क्या विधि-विधान है?

''लॉस्ट पेपर में नम्बरवन हाने का प्रत्यक्ष प्रमाण है - सेकेण्ड में जहाँ चाहें, जैसे मन-बुद्धि को लगाने चाहें, वहाँ सेकेण्ड में लग जाये, हलचल में नहीं आये।... ऐसे आप स्मृति के संकल्प का स्वीचऑन करने से लाइट-हाउस, माइट-हाउस होकर आत्माओं को लाइट-माइट दे सकते हो... यह बहुत काल का अभ्यास ही अन्त में सहयोगी बनेंगा।'' अ.बापदादा 30.11.05

''तुम बच्चे हो योगबल वाले, वे हैं बाहुबल वाले। तुम भी युद्ध के मैदान पर हो, परन्तु तुम हो डबल अहिंसक, वे हैं हिंसक। काम कटारी को भी हिंसा कहा जाता है। सन्यासी भी समझते हैं कि यह हिंसा है, इसलिए ही पवित्र बनते हैं।''

सा.बाबा 5.02.10 रिवा.

योगबल से आत्मा अपने कर्मभोग पर भी विजय प्राप्त करती है और दूसरों को भी उनके कर्मभोग पर विजय प्राप्त करने में सहयोग करता है।

विश्व-नाटक की अनादि-अविनाशी अद्भुत शक्ति

विश्व-नाटक की एक अनादि-अविनाशी अद्भूत अदृश्य शक्ति है, जिसके आधार पर ये विश्व-नाटक चलता है। इसमें सेकेण्ड बाई सेकेण्ड जो होता है, वह इसमें पहले से ही नूँध है और वह हर 5 हजार वर्ष के बाद हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। विश्व-नाटक की इस अद्भूत शक्ति को देखकर सर्वशक्तिवान परमात्मा भी

आश्चर्य (Wonder) खाता है, जो अनेक बार बाबा मुरलियों में वर्णन करता है। विश्व-नाटक की इस शक्ति के आधार पर चेतन आत्मायें और जड़ तत्व सभी कार्य करते हैं। चेतन आत्मायें विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार कर्म करने और उसका फल भोगने के लिए बाध्य हैं। जड़ तत्व भी आत्माओं के कर्मों अनुसार समय पर उसका फल उनको देने के लिए बाध्य हैं। इस जगत में कोई भी विश्व-नाटक की इस बाध्यता से मुक्त नहीं है। सर्वशक्तिवान परमात्मा का भी पार्ट है, जो उसको बजाना ही है परन्तु परमात्मा ही इस विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान संगमयुग पर आकर देते हैं, इसलिए उनको सर्वशक्तिवान कहा जाता है।

सर्व आत्मायें अपनी आत्मिक शक्ति के आधार पर विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार अच्छे-बुरे कर्म करती हैं, उस अनुसार उनको उसका अच्छा-बुरा फल मिलता है। परन्तु ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है। अपनी अद्भुत शक्ति के आधार पर हर आत्मा को उचित फल मिलता है, उसमें कोई भी प्रकार का अन्याय नहीं हो सकता है और जो होता है, उसको अन्तर्दृष्टि से देखें तो बड़ा सत्य और कल्याणकारी है।

विश्व-नाटक का अपना कोई स्वतन्त्र अस्तित्व दिखाई नहीं देता है, इसलिए यहाँ पर इसकी इस शक्ति को अदृश्य शक्ति के रूप में कहा गया है परन्तु ये सबसे महत्वपूर्ण शक्ति है, जिसके अन्तर्गत ही विश्व की सारी शक्तियाँ काम करती है।

हम देखते हैं इस विश्व में आत्मायें जो अच्छे-बुरे कार्य करती हैं, उनको उसका फल अच्छा या बुरा मिलता है किस कर्म का क्या फल है, क्या कर्म किया, उसका फल क्या मिलना चाहिए, इस सबका यह निर्णय कौन करता है, कौन उसको देखता है, कैसे ये सारा कार्य होता है - ये एक गहन विचारणीय विषय है। इसलिए इसको अदृश्य शक्ति की संज्ञा दी गई है। यह भी साइलेन्स की शक्ति ही है, जो जाने-अन्जाने अपना काम करती है और उसके कार्य में कोई भूल-चूक नहीं होती है।

''एक ही गीता शास्त्र है, जिसमें कुछ-कुछ अक्षर ठीक हैं। गीता में लिखा है - युद्ध के मैदान में मरेंगे तो स्वर्ग में जायेंगे। परन्तु कौन सा युद्ध? ... अभी तुम बच्चों को बाप से शक्ति लेकर माया पर जीत पानी है। ... यह है युद्ध का मैदान। योग में रह बाप से शक्ति लेकर विकारों पर जीत पानी है।''

सा.बाबा 28.12.09 रिवा.

''अपने को आत्मा समझने के बिगर परमपिता परमात्मा को याद कर न सकें। ... देहाभिमान से आत्मा की ताक़त खत्म होती जाती है। आत्माभिमानी बनने से आत्मा में ताक़त जमा होती है। बाप कहते हैं - इस ड्रामा के राज़ को अच्छी रीति समझना है। जो इस अविनाशी ड्रामा के राज़ को ठीक रीति जानते हैं, वे सदा हर्षित रहते हैं।'' सा.बाबा 30.12.09 रिवा.

आत्मिक शक्ति और व्यर्थ संकल्प / व्यर्थ संकल्प और उसका प्रभाव / व्यर्थ संकल्प और उसका योग पर प्रभाव / व्यर्थ संकल्प और उसका शरीर पर प्रभाव

व्यर्थ संकल्पों के द्वारा आत्मिक शक्ति का बहुत ह्रास होता है, व्यर्थ संकल्पों का कारण देहाभिमान। बाबा आकर सत्य ज्ञान देकर देहाभिमान से मुक्त करते हैं। आत्मिक शक्ति ह्रास होने का शारीरिक कमजोरी भी आ जाती है। व्यर्थ संकल्पों के कारण योग की अवस्था भी गिर जाती है।

''फुल-स्टॉप तो फुल-स्टॉप हो जाये। कॉमा भी नहीं। ... वेस्ट थॉट्स की रफ्तार तीव्र होती है। जो साधारण संकल्प का एक घण्टा और फास्ट संकल्प (वेस्ट थॉट्स) का एक मिनट (दोनों में बराबर शक्ति जाती है)। ... सन्तुष्ट आत्मा के संकल्प में यह क्यों, क्या की भाषा स्वप्न में भी नहीं आयेगी क्योंकि उसको तीन विशेष बातें अर्थात् तीन बिन्दियों को अर्थात् आत्मा-परमात्मा-ड्रामा को समय पर कार्य में लगा सकते हैं।'' अ.बापदादा 30.11.09

''जब सन्यासी रजोप्रधान थे तो दुनिया इतनी गन्दी नहीं थी। जंगल में रहते थे।

''बाप कहते हैं - तुम मुझे याद करो तो श्रेष्ठ कर्म करने का बल आयेगा। ... अभी आत्मा में अच्छे कर्म करने का बल नहीं है। हमारी स्थिति तमोप्रधान होने के कारण तमो का प्रभाव जोर से है, जो हमको दबाता है। इसलिए बुद्धि उसी तरफ जल्दी चली जाती है और अच्छे तरफ बुद्धि जाने में रुकावट आती है।''

मातेश्वरी 21.6.64

''भारत में ही दीवा जगाने की रस्म है, और कोई थोड़ेही दीवा जगाते हैं। अभी तुम्हारी ज्योति उझाई हुई है। सतोप्रधान विश्व के मालिक थे, वह ताकत कम होते-होते अभी कुछ ताकत ही नहीं रही है, फिर बाप आये हैं तुमको ताकत देने। आत्मा को परमात्मा की याद में रहने से ताकत मिलती है, बैटरी भरती है।''

सा.बाबा 9.06.09 रिवा.

''बाप कहते हैं - तुम मेरे को याद करो तो तुम शान्त हो जायेंगे और जन्म-जन्मान्तर के विकर्म भी विनाश हो जायेंगे। ... याद के बल से ही तुमको रावण पर विजय पानी है। इसमें शरीर के बलवान होने की कोई बात ही नहीं है।... तुम्हारा है यह रुहानी बल, जिससे तुम रावण पर विजय पाते हो।''

सा.बाबा 3.06.09 रिवा.

''सत्गुरु माना सम्पूर्ण सत्य। तुम जब सत् बन जायेंगे तो फिर यह शरीर नही रहेगा। ... यह ब्रह्मा भी उनसे पढ़कर फिर पढ़ाते हैं। ... तुमको ताक़त शिवबाबा से मिलती है। ताक़त का मतलब यह नहीं कि कोई को घूँसा मारो तो वह गिर पड़ें। नहीं, यह है रुहानी ताक़त, जो रुहानी बाप से ही मिलती है।''

सा.बाबा 4.06.09 रिवा.

''बाप ने यह भी बताया है कि यह युद्ध का मैदान है। पावन बनने में टाइम लगता है। ऐसे नहीं कि जो शुरू में आये हैं, वे पूरे पावन बन गये हैं। माया से लड़ाई जोर से चलती है, अच्छों-अच्छों को भी माया जीत लेती है। ... मूर्छित हो जाते हैं, फिर जब मुरली पढ़ें, तब सुजाग हों।'' सा.बाबा 28.11.09 रिवा.

''अभी बाप यह रुहानी धन्धा देते हैं। अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो और 84 के चक्र को भी याद करो। मुझे याद करने से ही तुम सतोप्रधान बनेंगे। ... बाप का फरमान है - मुझे याद करो तो शक्ति मिलेगी। बाप है सर्वशक्तिवान। अभी तुम उनके बनते हो। सारा मदार है याद की यात्रा पर। तुम जो यहाँ सुनते हो, उस पर मन्थन चलता रहे।'' सा.बाबा 2.11.09 रिवा.

''बाप के हाथ में है, चाहे किसको साहूकार बनाये, चाहे किसको ग़रीब बनाये। बाप कहते हैं - जो अभी साहूकार हैं, उनको ग़रीब बनना ही है। उन्होंका पार्ट ही ऐसा है। ... अन्त में वे देने के लिए आयेंगे, उस समय बाबा कहेंगे अभी दरकार नहीं है, अपने पास रखो, जब जरूरत होगी तो फिर ले लेंगे क्योंकि देखते हैं अभी काम का नहीं है।'' सा.बाबा 2.11.09 रिवा.

''सतयुग में सब लॉ मुजिब चलता है। सृष्टि की वृद्धि तो जरूर होनी है परन्तु वहाँ विकार होता नहीं है। ... वहाँ सब काम योगबल से होता है। योगबल से ही हम सृष्टि की राजाई लेते हैं। बाहुबल से विश्व की राजाई मिल नहीं सकती। क्रिश्चियन्स अगर आपस में सब मिल जायें तो सारी सृष्टि का राज्य ले सकते परन्तु मिलेंगे नहीं क्योंकि लॉ ऐसा नहीं कहता है।'' सा.बाबा 22.12.09 रिवा.

''बेहद का बाप कहते हैं- शास्त्रों में जो लड़ाई गाई हुई है, वह योगबल की लड़ाई है, वह बाहुबल की लड़ाई नहीं है... पाण्डवों और कौरवों की कोई हिंसक लड़ाई है नहीं... पाण्डवों ने देवी-देवता धर्म की स्थापना की। यह है योगबल, जिससे सारी सृष्टि का राज्य मिलता है। मायाजीत जगतजीत बनते हैं। ... मन्मनाभव, मध्याजीभव के वाण हैं, इनसे तुम माया पर जीत पा लेते हो।''

सा.बाबा 22.12.09 रिवा.

Q. क्या परमात्मा ये सारा कार्य करता है और यदि करता है तो उसके पास इसका रिकार्ड रखने का कोई स्थान है और यदि है तो वह कहाँ है और कैसे रखता है?

बाबा ने अनेक अपने महावाक्यों में कहा है कि मैं किसके कर्मों का फल नहीं देता हूँ, यह तो सब ड्रामा अनुसार सभी आत्माओं को मिलता है। मैं तो आत्माओं को सुकर्मों का रास्ता बताने आता हूँ, जिसके लिए इस विश्व-नाटक के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान देता हूँ, कर्मों की गहन गति का ज्ञान देता हूँ, आत्मा को आत्मा का और अपना राज़ बताता हूँ।

साइन्स-शक्ति

साइन्स की शक्ति का आदि तो द्वापर से ही आरम्भ हो जाता है परन्तु कलियुग के अन्त में वह पूर्ण विकास को पाती है। साइन्स की शक्ति से पुरानी दुनिया का विनाश भी होता है तो नई दुनिया का निर्माण भी होता है। साइन्स की शक्ति आत्माओं को उनके कर्मानुसार सुख भी देती है तो दुख का कारण भी बनती है। साइन्स की शक्ति का चमत्कार तो इस विश्व में सभी देख रहे हैं परन्तु ये उसका वाह्य रूप है, गुप्त रूप के विषय तो परमात्मा ने हमको बताया है कि यही साइन्स इस पुरानी दुनिया के विनाश के निमित्त भी बनेगी तो नई दुनिया का निर्माण भी करेगी और सतयुग में भी सुख का आधार बनेंगी।

साइलेन्स की शक्ति अर्थात आत्मिक शक्ति ही विभिन्न जड़-जंगम प्रकृति अर्थात तत्वों का अध्ययन करके, उनके समिस्र्रण से नई-नई चीजों का अविष्कार करती है, जो विश्व के नव-निमार्ण में, विश्व में सुख-शान्ति लाने के लिए विभिन्न साधनों का निर्माण करती है, वही पुराने विश्व को विध्वंस करने में भी अपना पार्ट बजाती है, उसे साइन्स की शक्ति कहते हैं।

- साइन्स की शक्ति के साधन टी.वी., एरोप्लेन, वायरलेस सिस्टम, कम्प्यूटर, सोलार इनर्जी के प्रयोग के साधन, बिजली, आदि आदि काम कर रहे हैं। इन सबकी क्रियाओं पर विचार करें तो वण्डर लगेगा कि ये सब कैसे कार्य कर रहे हैं और बनाने वालों ने ये सब कैसे बनाये हैं।

साइन्स की शक्ति जब योगबल से युक्त होती है तो विश्व के नव-निर्माण

''अभी तुम ज्ञान सहित कहते हो कि हम यह याद की यात्रा कल्प-कल्प करते हैं। यह यात्रा बाप स्वयं ही आकर सिखलाते हैं। ... यह यात्रा है डेड साइलेन्स की। साइलेन्स में एक बाप को ही याद करना है, उनकी याद से ही पावन बनना है।''
सा.बाबा 8.12.09 रिवा.

''इसको कहा जाता है योगबल, याद का बल। ... अभी तुम्हारी बुद्धि में है रुहानी बाप और रुहानी बाप की बुद्धि में तुम रुहानी बच्चे हो क्योंकि हमारा कनेक्शन है ही मूलवतन से। गायन है आत्मायें, परमात्मा अलग रहे बहुत काल, सुन्दर मेला कर दिया जब सतगुरु मिला दलाल। अभी ये बाप और बच्चों का सुन्दर मेला है।''
सा.बाबा 7.12.09 रिवा.

''अभी तुमने मनुष्य मत और ईश्वरीय मत को भी समझा है। दोनों में कितना फर्क है। ईश्वरीय मत से तुम तुम घर वापस जाते हो, फिर नयी दुनिया में जाते हो। और किसी मत अर्थात् मनुष्य मत से या दैवी मत वापस नहीं जा सकते हो। दैवी मत भी तुम सीढ़ी नीचे ही उतरते हो क्योंकि कला कम होती जाती है। आसुरी मत से भी उतरते हो लेकिन दैवी मत से सुख है और आसुरी मत से दुख होता है। दैवी मत भी इस समय बाप की ही दी हुई है।''
सा.बाबा 5.12.09 रिवा.

''हम आत्मायें ऊपर से आई हैं, इस शरीर द्वारा पार्ट बजाने के लिए। हम आत्मायें असुल में वहाँ के रहने वाले हैं। अभी बुद्धि में यह ज्ञान है। ... अभी हम आत्माओं को घर जाना है परन्तु पवित्र बनने बिगर जा नहीं सकते। पवित्र बनने के लिए परमात्मा बाप को याद करना है।''
सा.बाबा 7.08.09 रिवा.

''परमपिता परमात्मा समझाते हैं कि अभी तुम्हारी जो स्थिति है और जो पहले थी, उसमें फर्क है। अभी मैं आया हूँ, उस फर्क को मिटाने के लिए। ... तुम कैसे अपनी ओरिजिनल स्टेज को पकड़ो, उसका ज्ञान भी दे रहे हैं और बल भी दे रहे हैं।''
मातेश्वरी 21.6.64

राम और रावण का युद्ध; कौरवों और पाण्डवों का युद्ध।

''अभी तुम अपनी बैटरी चार्ज कर रहे हो। इसमें माया भी बहुत विघ्न डालती है, बैटरी चार्ज करने नहीं देती है। तुम चेतन्य बैटरियाँ हो। तुम जानते हो बाप के साथ योग लगाने से ही हम सतोप्रधान बनेंगे। ... यह भी तुम जानते हो कि अनगिनत बार तुम्हारी बैटरी चार्ज हुई है और फिर डिस्चार्ज हुई है।''

सा.बाबा 12.12.09 रिवा.

''तुम्हारे में जो बैटरी चार्ज कर सतोप्रधान के नज़दीक भी आ जाते हैं, उनसे भी कभी-कभी माया गफलत कराये, बैटरी डिस्चार्ज कर देती है। यह पिछाड़ी तक होता रहेगा। फिर जब लड़ाई का अन्त होता है तो सब खत्म हो जाते हैं, फिर जिसकी जितनी बैटरी चार्ज हुई होगी, उस अनुसार पद पायेंगे।''

सा.बाबा 12.12.09 रिवा.

''बाप ही आकर सबकी बैटरी चार्ज कराते हैं। कैसा वण्डरफुल यह खेल बना हुआ है। ... पुरुषार्थ करते-करते जब समाप्ति होती है, फिर नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार कल्प-कल्प के माफिक तुम्हारा पार्ट पूरा होता है।''

सा.बाबा 12.12.09 रिवा.

''जो बच्चे ज्ञान और योग में मस्त हैं, वे बड़े हैं। ... वे आसमान के सितारे हैं, तुम धरती के सितारे हो। तुम चेतन्य हो। ... पार्ट बजाते-बजाते तुम्हारी चमक डल हो जाती है, बैटरी डिस्चार्ज हो जाती है। ... अब बाप आकर फिर से तुम्हारे में ताक़त भरते हैं।'' सा.बाबा 12.12.09 रिवा.

''अभी तुम मरने के लिए तैयारी कर रहे हो और अपनी ज्योति आपही पुरुषार्थ कर जगा रहे हो। ... पुरुषार्थ करना चाहिए कि हम विजय माला में जायें। कहाँ माया बिल्ली तूफान लगाकर विकर्म न करा दे, जो दीवा बुझ जाये। इसके लिए आत्मा में ज्ञान और योग दोनों बल चाहिए। योग के साथ ज्ञान भी जरूरी है। ... अभी तुम्हारा इस देह से कोई ममत्व नहीं है।'' सा.बाबा 9.12.09 रिवा.

का कार्य करती है। इसके लिए बाबा ने कहा है - अन्त में वैज्ञानिक भी इस ज्ञान को समझेंगे और परमात्मा के साथ योगयुक्त होकर नये विश्व के निर्माण के लिए कार्य करेंगे अर्थात् साइन्स की शक्ति परमात्म-शक्ति से सम्पन्न होने पर विश्व के नव-निर्माण का कार्य करेगी अर्थात् वैज्ञानिक साइन्स की शक्ति का उपयोग विश्व के नव-निर्माण में करते हैं। वही साइन्स की शक्ति जब देहाभिमान के वश होती है तो पुराने विश्व के विनाश का कार्य करती है। स्थापना और विनाश दोनों में ही साइन्स की शक्ति का महत्वपूर्ण योगदान है।

''सृष्टि को तमोप्रधान बनना ही है, सीढ़ी नीचे उतरनी ही है। ड्रामा में जो नूँध है, वह सब होता रहता है। ... यह साइन्स वहाँ बहुत सुख देने वाली होगी। यहाँ थोड़ा सुख है, दुख बहुत है।'' सा.बाबा 23.01.10 रिवा.

''आजकल देखो साइन्स का कितना जोर है। एटॉमिक बाम्बस आदि का कितना जोर से आवाज़ होता है। तुम बच्चे साइलेन्स के बल से इस साइन्स पर जीत पाते हो। साइलेन्स को योग भी कहा जाता है। ... तुम बच्चे इस योगबल से, साइलेन्स के बल से साइन्स पर जीत पाते हो। शान्ति का बल प्राप्त करते हो। साइन्स से यह सारा विनाश होना है, साइलेन्स से तुम बच्चे विश्व पर विजय पाते हो। बाहुबल वाले कभी भी विश्व पर जीत पा नहीं सकते।''

सा.बाबा 4.01.10 रिवा.

''अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करते रहो तो आत्मा में जो खाद पड़ी है, वह निकल जाये और आत्मा सतोप्रधान बन जाये। ... वहाँ साइन्स से बहुत सुख है। यह भी ड्रामा बना हुआ है। यहाँ साइन्स घमण्डी हैं। यहाँ साइन्स से अल्प काल का सुख मिलता है और इससे ही बड़ा भारी दुख भी मिलता है।''

सा.बाबा 6.01.10 रिवा.

''साइन्स वाले बाम्ब्स आदि सब विनाश के लिए बनाते रहते हैं। ... समझते भी हैं कि इन बॉम्बस से हमारी ही मौत होनी है, फिर भी बनाते रहते हैं। ... यह सब ड्रामा में नूँध है। बनाने के सिवाए रह नहीं सकते। कहते - पता नहीं कौन प्रेरित

कर रहा है, जो हम बाम्बस आदि बनाने बिना रह नहीं सकते। विनाश की भी ड्रामा में नूँध है तो बनाना ही पड़ें।... सुख-शान्ति-पवित्रता का वर्सा देने वाला एक बाप ही है।'' सा.बाबा 6.01.10 रिवा.

प्रकृति की शक्ति (Cosmic Energy)

प्रकृति की शक्ति अर्थात् पंच तत्वों की शक्ति, जिसके आधार पर इस भूमण्डल के सारे ग्रह-नक्षत्र अपना काम करते हैं। वास्तव में साइन्स की शक्ति, प्रकृति की शक्ति ये सभी शक्तियाँ आत्मा के लिए ही कार्य करती हैं। जब आत्मा श्रेष्ठ कर्म करती है, उसका श्रेष्ठ कर्मों का खाता संचित होता है तो इनका सुखदायी रूप होता है और आत्मा के विकर्मों के लिए इनका दुखदायी रूप होता है। प्रकृति सतयुग-त्रेता में आत्मा के सुख का आधार होती है और द्वापर-कलियुग में उसके कर्मों अनुसार सुख और दुख दोनों की निमित्त बनती है। कल्पान्त में यही प्रकृति पुरानी दुनिया के विनाश के निमित्त भी बनती है तो नई दुनिया में सुखदायी बनने के लिए भी अपने मूल स्वरूप में परिवर्तन होती है।

जड़-जंगम प्रकृति इस विश्व में आत्माओं के पार्ट बजाने के लिए अनेक प्रकार की चीजें पैदा करती है।

इस विश्व में पंच तत्वों को गति देने के लिए भी एक शक्ति है, जो प्रकृति की शक्ति ही है, जिसके आधार पर पंच तत्व गतिशील हैं और समयानुसार उनमें विभिन्न परिवर्तन होते हैं। .... (Cosmic Energy) कहा जाता है।

- प्रकृति की शक्ति में सूर्य की शक्ति से विभिन्न प्रकार का प्रभाव होता है। यथा शक्ति से फल पकते हैं, जंगम प्रकृति विकास को पाती है, आत्माओं के लिए आक्सीज़न का निर्माण होता है।
- पंच तत्वों से शरीर का निर्माण होता है, जिसके द्वारा ही आत्मा सारे कल्प अपना पार्ट बजाती है, सुख-दुख का अनुभव करती है।

''बाप कहते हैं - मेरे साथ योग लगाओ तो जो बोझा है, बन्धन हैं, जो रुकावटें बन सामने आती हैं, उनसे अपना रास्ता साफ करते चलो, फिर श्रेष्ठ कर्म करते रहेंगे तो तुम्हारे में सतोप्रधानता की वह पॉवर आती जायेगी, जिससे तुम फिर से उस स्थिति को प्राप्त कर लेंगे, जो तुम्हारी असुल थी।'' मातेश्वरी 21.6.64

''यह किसी की भी बुद्धि में नहीं है कि हम ही सतोप्रधान देवी-देवता थे, हम ही फिर नीचे गिरे हैं। ... बाप बिगर ज्ञान की रोशनी देने वाला कोई नहीं है। ... हम नीचे गिरते-गिरते एकदम पट में आकर पड़ गये हैं, सब ताक़त खत्म हो गई है। बुद्धि में भी ताक़त नहीं, जो बाप को यथार्थ रीति जान सके। बाप ही आकर सबकी बुद्धि का ताला खोलते हैं।'' सा.बाबा 30.12.09 रिवा.

''बाप के मिलने से भक्ति मार्ग की सब थकान दूर हो जाती है।... शिवबाबा की गोद में आते कितना विश्राम मिलता है। विश्राम माना ही शान्त।... यहाँ तो बाप तुमको कितना ज्ञान सुनाकर रिफ्रेश करते हैं। बाप की याद से भी तुम कितने रिफ्रेश होते हो और तमोप्रधान से सतोप्रधान बनते जाते हो।''

सा.बाबा 30.12.09 रिवा.

साइलेन्स-शक्ति अर्थात् योगबल और दैवी शक्ति एवं आसुरी शक्ति / आत्मिक शक्ति, माया और परमात्मा

इस विश्व में सारे कल्प में तीन प्रकार की शक्तियाँ काम करती है। आधे कल्प आत्मिक शक्ति दैवी शक्ति के साथ अपना पार्ट बजाती है और और आधा कल्प आसुरी शक्ति के साथ अपना पार्ट बजाती है। पुरुषोत्तम संगमयुग पर अर्थात् कल्प के संगम पर आत्मिक शक्ति का परमात्म-शक्ति के साथ सहयोग होता है, जिससे साइलेन्स-शक्ति का जन्म होता है अर्थात् साइलेन्स की शक्ति उत्पन्न होती है, जिससे विश्व में आसुरी शक्ति का शासन खत्म होता है और दैवी शक्ति का शासन आरम्भ होता है, जिसको शास्त्रों में विभिन्न नामों से वर्णन किया गया है। यथा देवासुर संग्राम अर्थात् देवताओं और असुरों का युद्ध;

आत्मिक शक्ति का ह्रास होता है। भल सतयुग में दुख नहीं होता है परन्तु समयान्तर में सुख की कलायें तो गिरती ही जाती हैं। सारे कल्प में योग-शक्ति ही सर्वोपरि है।

- परमात्मा में मूल शक्ति है ज्ञान की और वे जन्म-मरण से न्यारे हैं, इसलिए उनमें पवित्रता की शक्ति सदा और एकरस नीहित है, जिससे वे सदा अपने मूल स्वरूप में स्थित रहते हैं। आत्मा का मूल स्वरूप सूर्य के समान है, जिसमें सर्वशक्तियाँ समाई रहती हैं, लाइट-माइट हाउस है, जिससे सर्वशक्तियाँ स्वत: प्रवाहित होती हैं और जिसको जिस शक्ति की आवश्यकता होती है, वह उसको मिलती है और वह उसको उससे प्राप्त करता है। परमात्मा को सर्वशक्तिवान कहा जाता है, उनके सम्पर्क में आने से आत्मा को भी वे सर्वशक्तियाँ प्राप्त होती है और वह भी मास्टर सर्वशक्तिवान बन जाती है। इसलिए आत्मा को भी मास्टर सर्वशक्तिवान कहा जाता है।

ज्ञान और पवित्रता के कारण वह कहाँ भी आ-जा सकता है परन्तु ये सर्वशक्तियाँ परमात्मा से संगमयुग पर ही ड्रामा अनुसार प्रगट होती हैं, जब वह ब्रह्मा तन में आता है।

- संकल्प शक्ति आत्मा के उड़ने का वाहन है, जिससे आत्मा कहाँ से कहाँ भी आ-जा सकती है। परमात्मा की भी ये शक्ति ब्रह्मा तन में आने के बाद ही काम करती है।

- विश्व में जड़ और चेतन दो मूल शक्तियाँ, और सब शक्तियाँ उनके ही अन्दर आती हैं। परमात्मा भी एक आत्मा है, उसमें आत्मिक शक्तियाँ परम हैं और असीम हैं। आत्मा में ही संकल्प शक्ति है और आत्मा और परमात्मा के सहयोग से योगबल पैदा होता है।

जड़ शक्तियों में प्रकृति की शक्ति, विश्व-नाटक सफल संचालन की शक्ति, प्रकृति के तत्वों में आकर्षण शक्ति आती है, विश्व-परिवर्तन की शक्ति, साइन्स की शक्ति आदि हैं।

गुरुत्वाकर्षण शक्ति और आकर्षण शक्ति

प्रकृति के विभिन्न तत्वों की गुरुत्वाकर्षण शक्ति / चेतन आत्माओं की आकर्षण शक्ति

प्रकृति के पंच तत्वों में जो आकर्षण शक्ति है, उसे गुरुत्वाकर्षण शक्ति कहते हैं, जिससे ये पाँचो तत्व एक-दूसरे के आकर्षण में आकाश मण्डल में स्थित हैं। उस गुरुत्वाकर्षण के आधार पर ही भूमण्डल में अनेक प्रकार की क्रियायें और परिवर्तन होते हैं और ये विश्व-नाटक चलता है। अन्त में भी इस गुरुत्वाकर्षण के आधार पर ही पंच तत्व अपने आदि रूप में स्थित होते हैं। जैसे पंच तत्वों में गुरुत्वाकर्षण शक्ति है, वैसे ही चेतन आत्मा में आकर्षण शक्ति है, जिसके आधार से आत्मायें परमधाम जाती हैं, परमधाम से इस धरा पर पार्ट बजाने आती हैं, संगठन बनते हैं और विघटित होते हैं। आत्मायें एक शरीर छोड़कर, दूसरे शरीर में प्रवेश करती हैं, दूसरे माता-पिता के पास जन्म लेती हैं। आत्माओं की ये शक्ति भी एक प्रकार का गुरुत्वाकर्षण ही है परन्तु इसको गुरुत्वाकर्षण न कहकर आकर्षण शक्ति कहना अधिक व्यवहारिक है।

सभी आत्माओं में भी आकर्षण शक्ति होती है, जिसके आधार पर आत्मायें परमधाम में रहती हैं और इस जगत में पार्ट बजाते समय एक-दूसरे से संगठित होती हैं।

इन्द्रियों के रस, स्वभाव-संस्कार, दैहिक सम्बन्धों की आकर्षण आदि आत्मिक शक्ति को सीमित कर देते हैं। इन सबसे मुक्त आत्मा एक ही समय अनेक आत्माओं की और अनेकों स्थानों पर बिना किसी बन्धन के सेवा कर सकती है, कार्य कर सकती है। जैसे शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा करते हैं। निराकारी स्वरूप और फरिश्ता स्वरूप सर्वशक्तियों से सम्पन्न सदा निर्बन्धन है।

प्रकृति की शक्ति और विश्व-नाटक की शक्ति का सम्बन्ध

विश्व-नाटक की शक्ति और प्रकृति की शक्ति में घनिष्ट सम्बन्ध है और दोनों का अद्वितीय सन्तुलन है। विश्व-नाटक में जो पार्ट चलना होता है, उस अनुसार प्रकृति वातावरण पैदा कर देती है, जिससे वह पार्ट चलता तथा दृश्य बनता है और आत्मा जो कर्म करती है, उस अनुसार प्रकृति उनको फल देती है, जिसके अनुसार वह आत्मा सुख या दुख पाती है

ईश्वरीय शक्ति, दैवी शक्ति और आसुरी शक्ति

ये विश्व-नाटक सुख-दुख का अनादि-अविनाशी खेल है, जिसे हार-जीत का खेल भी कहा जाता है। इस सुख-दुख के खेल को खेलने वाली, सुख-दुख का अनुभव करने वाली, हार-जीत का अनुभव करने वाली आत्मा है। इस सुख-दुख में खेल को खेलने में तीन प्रकार की शक्तियाँ काम करती हैं। एक है ईश्वरीय शक्ति, दूसरी है आसुरी शक्ति और तीसरी है दैवी शक्ति।

जब आत्मा ईश्वरीय शक्ति से प्रभावित होती है तो उसमें दैवीगुण और दैवी शक्तियों की धारणा होती है, जिन दैवीगुणों और दैवी शक्तियों के आधार पर आत्मा सुख पाती है। वही आत्मा जब ईश्वरीय शक्ति के आधार पर संचित दैवी गुणों और शक्तियों को खो देती है तो आसुरी शक्ति उसके ऊपर प्रभावित हो जाती है, जिससे उसके कर्म-संस्कार आसुरी हो जाते हैं, जिनके फलस्वरूप आत्मा दुख पाती है। आत्मा का ये सुख-दुख का पार्ट आधा-आधा चलता है। संगमयुग पर ईश्वर अर्थात् परमात्मा आकर आत्मा को आसुरी शक्ति से मुक्त करने के लिए मार्ग बताते हैं अर्थात् आत्मा ईश्वरीय शक्ति से सम्पन्न बनने के लिए ईश्वर के पक्ष में जाती है तो आसुरी शक्ति उसका सामना करती है, जिसको देवासुर संग्राम, राम-रावण का युद्ध, कौरव-पाण्डवों के युद्ध के रूप में वर्णन किया जाता है। जो आत्मायें एक परमात्मा के बनकर, उसकी मत पर चलकर

स्मरण करने से आत्मा की सुसुप्त शक्तियाँ जागृत होती हैं।

''एक तो मनन शक्ति की बहुत कमजोरी है, इसलिए मैजारिटी की यही रिपोर्ट है कि व्यर्थ संकल्पों को कैसे कन्ट्रोल करें। ... बहुतों की कम्पलेन्ट रहती है कि शक्ति नहीं है। नॉलेज है, लेकिन नॉलेज को लाइट और माइट कहा जाता है।... नॉलेज द्वारा अपने में माइट कैसे लायें, उसके लिए भिन्न-भिन्न युक्तियाँ सोचना है।'' अ.बापदादा 25.06.71

''जितना-जितना जो खज़ाना मिलता है, उसके ऊपर मनन करने से वह अन्दर समाता है। जो मनन करने वाले होंगे, उनके बोलने में भी विल-पॉवर होगी। ... मनन करके उस दी हुई प्रॉपर्टी को अपना बनाते हैं, उसका क्या होता है? कहावत है ना - अपनी घोट तो नशा चढ़े।'' अ.बापदादा 30.5.71

''चेक करो ज्ञान स्वरूप बना हूँ या ज्ञान सुनने और सुनाने वाला बना हूँ? नॉलेज का प्रैक्टिकल स्वरूप है, नॉलेज को कहते नॉलेज इज लाइट, नॉलेज इज माइट। तो ज्ञान स्वरूप बनना अर्थात् वे जो भी कर्म करेंगे, वह लाइट-माइट वाला होगा, यथार्थ होगा। इसको कहा जाता है ज्ञान-स्वरूप बनना।''

अ.बापदादा 30.01.10

आत्मिक-शक्ति, परमात्म-शक्ति,विश्व-नाटक की शक्ति और साइलेन्स की शक्ति अर्थात् योगबल / दैहिक शक्ति, प्रकृति की शक्ति,साइन्स की शक्ति और भौतिक शक्तियाँ

ये सभी विभिन्न प्रकार की शक्तियाँ हैं, जिनके सहयोग से ये विश्व-नाटक चलता है और हर शक्ति के अपने-अपने गुण-धर्म हैं और उनका आत्मा पर प्रभाव होता है परन्तु जब आत्मिक शक्ति और परमात्म शक्ति का सहयोग होता है तो ये सब शक्तियाँ आत्मा के लिए सुखदायी होती हैं और जब आत्मा, परमात्मा से अलग हो जाती है तो ये सब दुख का कारण बन जाती हैं क्योंकि तब

कोई वापस अपने घर ले नहीं जा सकते। ... यह भी तुम समझते हो कि हम आत्मा पवित्र बनेंगे, तब ही अपने घर जा सकेंगे। फिर या तो योगबल से पावन बनें या सजाओं के बल से पावन बनेंगे।'' सा.बाबा 28.11.09 रिवा.

''बाप मुक्ति-जीवनमुक्ति दोनों देते हैं। जब तुम सतयुग में जीवनमुक्ति में हो तो बाकी सब आत्मायें मुक्तिधाम में रहते हैं। शिवबाबा भी मुक्तिधाम में रहते हैं और हम बच्चे भी वहाँ रहते हैं। ... साइन्स घमण्ड वालों की आश कब पूर्ण नहीं होती है। तुम्हारी तो सब आशायें पूर्ण हो जाती हैं।''

सा.बाबा 28.11.09 रिवा.

''माया तंग करती है, फिर भी कोशिश कर बाप के साथ लिंक जोड़नी चाहिए। नहीं तो बैटरी कैसे चार्ज होगी। विकर्म होने से बैटरी डिस्चार्ज हो जाती है। ... बाप तुमको बेहद का वैराग्य दिलाते हैं। सारी पुरानी दुनिया से वैराग्य। बुद्धियोग एक बाप के साथ ही होना चाहिए।'' सा.बाबा 23.11.09 रिवा.

''तुम एक बाप को ही याद करो, उनको ही प्यार करो तो इस याद से बहुत पॉवर मिलती है। बाप सर्वशक्तिवान है। बाप से तुमको इतनी पॉवर मिलती है, जो तुम रावण पर जीत पाकर सारे विश्व के मालिक बन जाते हो।''

सा.बाबा 4.12.09 रिवा.

आत्मिक शक्ति और चिन्तन

जो ईश्वर ने सुनाया, वही चिन्तन होगा तो ईश्वरीय गुणों की, दैवी गुणों की धारणा होगी और हमारी आत्मिक शक्ति बढ़ेगी, सेवा के प्रति रुचि होगी। सेवा और पुरुषार्थ में सफलता होगी और आत्मिक शक्ति बढ़ती रहेगी। ज्ञान का चिन्तन, परमात्मा के गुणों-शक्तियों का चिन्तन, उनकी श्रीमत का चिन्तन, परमात्मा के साथ वार्तालाप आदि प्रभु-चिन्तन के रूप हैं, योगबल के आधार हैं, जिनसे आत्मिक शक्ति बढ़ती है।

ज्ञान-सागर परमपिता परमात्मा ने आत्मा-परमात्मा, सृष्टि-चक्र का जो ज्ञान दिया है, उसका चिन्तन करने और परमात्मा के गुणों का और शक्तियों का

आसुरी शक्ति से युद्ध करते हैं, वे इसमें विजयी होते हैं, उनमें दैवीगुण और दैवी शक्तियों की धारणा होती है, जिससे वे आधा कल्प तक दैवी दुनिया अर्थात् स्वर्ग में सुख भोगते हैं।

''साथ का अनुभव सदा ही सहज और सेफ रखता है, बाप को भूल जाते हो तो मुश्किल हो जाता है। ... तो साथ का अनुभव बढ़ाओ। ... माया कुछ है नहीं, आपकी कमजोरी ही माया बनकर सामने आती है। जैसे शरीर की कमजोरी शरीर की बीमारी बनकर सामने आती है, ऐसे ही आत्मा की कमजोरी माया बनकर सामना करती है। ... मायाजीत बनना है।'' अ.बापदादा 17.11.94

''स्वराज्य अधिकारी अर्थात् हर कर्मेन्द्रिय जीत। अगर अपनी कर्मेन्दियों के ऊपर, मन-बुद्धि-संस्कार के ऊपर विजयी नहीं तो प्रजा पर क्या राज्य करेंगे। अगर ऐसे राजे बने, जो अपने ऊपर विजय नहीं पा सकते तो सतयुग भी कलियुग बन जायेगा। इसलिए चेक करो मन-बुद्धि-संस्कार कन्ट्रोल में हैं? ... तो जो स्वयं पर विजय नहीं पा सकते हैं, वे विश्व पर कैसे विजय प्राप्त करेंगे!''

अ.बापदादा 17.11.94

''ज्ञान की जीवन अच्छी लगती है लेकिन चलते-चलते कमजोरी आती है तो उसका विशेष कारण है कि जो कहते हो, जो सुनते हो, उस एक-एक गुण का, शक्ति का, ज्ञान की प्वाइन्ट्स का अनुभव कम है... आत्मिक अनुभूति कम होती है। कहना-सुनना ज्यादा है लेकिन अनुभूति कम है। लेकिन सबसे बड़ी अथॉरिटी है अनुभव की।'' अ.बापदादा 17.11.94

''जो पहले-पहले पार्ट बजाने आयेंगे, उनमें जरूर इतनी ताक़त होगी। ड्रामा में पार्टधारी नम्बरवार तो होते ही हैं। हीरो-हीरोइन का पार्ट भारतवासियों को ही मिला हुआ है। तुम बाप की श्रीमत पर सबको रावण राज्य से छुड़ाते हो। श्रीमत पर तुमको कितना बल मिलता है, जिससे तुम माया रावण पर जीत पाते हो। ... भारत 100 परसेन्ट सॉलवेन्ट, निर्विकारी था।'' सा.बाबा 02.01.10 रिवा.

''कितना सहज है, फिर भी माया का चक्र आ जाता है। तुम्हारी यह युद्ध सबसे

जास्ती टाइम चलती है। बाहुबल की युद्ध इतना समय नहीं चलती है। जब से तुम बाप के बने हो, युद्ध शुरू है। ... यहाँ मरते भी हैं और वृद्धि को भी पाते हैं। झाड़ बड़ा तो होना ही है।'' सा.बाबा 5.01.10 रिवा.

साइलेन्स-शक्ति, साइन्स की शक्ति, प्रकृति की शक्ति और विश्व-नाटक

विभिन्न शक्तियाँ और उनका विश्व-नाटक में महत्व

इस विश्व-नाटक में जड़-जंगम-चेतन कियाओं की हू-ब-हू पुनरावृत्ति, आत्मा का परमधाम में जाना और आना, आत्मा एक शरीर में होते भी दूर से अपने लिए नये शरीर का निर्माण करना और समय पर पुराना शरीर छोड़कर नये शरीर में प्रवेश होना। ये सब कार्य साइलेन्स की शक्ति के आधार पर ही होते हैं।

विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार आत्मा की और विश्व-नाटक की साइलेन्स शक्ति के आधार पर ही साइन्स की शक्ति और प्रकृति की शक्ति काम करती है। साइलेन्स की शक्ति सबका आधार है और वह आधार भी विश्व-नाटक में नूँधा हुआ है।

बाबा ने इस विश्व-नाटक के विषय में अनेक प्रकार की बातें बताई हैं और हम आत्माओं को प्रेरणा दी है कि तुम साइलेन्स में बैठकर, उन पर विचार करो, उनकी धारणा करो और अन्य आत्माओं को भी इन सब सत्यों को स्पष्ट करो क्योंकि जितना ये ज्ञान हमारी बुद्धि में स्पष्ट होगा, उतना ही इस विश्व-नाटक का और संगमयुग का सुख हमको अनुभव होगा। ये विश्व-नाटक परमानन्दमय है परन्तु इसके आनन्द को अनुभव करने के लिए इसके सर्व रहस्यों को समझना अति आवश्यक है, जिसके लिए साइलेन्स की शक्ति अति आवश्यक है अथवा कहें कि इसका आधार है।

ये संगमयुग सर्वशक्तियों के चरमोत्कर्ष का समय है। अभी ही

आत्मिक शक्ति, योगबल और भोगबल

सारे कल्प में आत्मा को पार्ट बजाने के लिए आत्मिक शक्ति चाहिए, जिसको संचित करने का समय ये संगमयुग ही है और उसका साधन योगबल है। योगबल से आत्मिक शक्ति बढ़ती है, भोगबल अर्थात् आत्मा के द्वारा विश्व की साधन-सत्ता को उपभोग करने और कलियुग में विकारों के वशीभूत विषयभोग से आत्मिक घटती है।

- संगमयुग पर योगबल आत्मा में दैवी गुणों की धारणा होती है, और तो सारे कल्प आत्मा-शक्ति के उपयोग से दैवी गुणों में गिरावट ही आती जाती है और गिरते-गिरते आसुरी गुण बन जाते हैं। स्वमान, अभिमान में बदल जाता है; प्रेम, मोह में बदल जाता है; योगबल, भोगबल में बदल जाता है; जिससे सन्तानोत्पत्ति विकार से आरम्भ हो जाती है।

योगबल से आत्मिक शक्ति बढ़ती है, भोगबल अर्थात् आत्मा के द्वारा विश्व की साधन-सत्ता को उपभोग करने और कलियुग में विकारों के वशीभूत विषयभोग से आत्मिक घटती है।

''जैसे तुम्हारा पार्ट है, वैसे मेरा भी ड्रामा में पार्ट है। मेरा पार्ट तो सबसे पिछाड़ी का है। जब तुम बिल्कुल पतित बन जाते हो तब तुमको पावन बनाने के लिए मुझको आना होता है। इन लक्ष्मी-नारायण को ऐसा बनाने वाला कौन? सिवाए ईश्वर के और कोई के लिए कह नहीं सकेंगे। बेहद का बाप ही स्वर्ग का मालिक बनाते होंगे।'' सा.बाबा 5.12.09 रिवा.

''जब तुम्हारी बहुत वृद्धि हो जायेगी, फिर तुम्हारे योगबल से बहुत खींचकर आयेंगे। जितना तुम्हारे से कट निकलती जायेगी, उतना बल भरता जायेगा। ... चलन से सब मालूम पड़ जाता है। अभी कोई की कर्मातीत अवस्था हो न सके। अभी तो कड़ी-कड़ी भूलें भी होना सम्भव है।'' सा.बाबा 3.12.09 रिवा.

''अभी बाप ने तुमको ज्ञान दिया है। ज्ञान से ही तुम बच्चों की सद्गति हो रही है। तुम कितना दूर जाते हो। बाप ने ही घर जाने का रास्ता बताया है। सिवाए बाप के

''वे हैं साइन्स घमण्डी, तुम्हारे पास है साइलेन्स का घमण्ड। वे तो चाँद पर जाने की कोशिश करते हैं, तुम तो जानते हो हम आत्मा सूर्य-चाँद-तारों से परे अपने शान्तिधाम ब्रह्माण्ड में जाते हैं। आत्मा ही सब कुछ करती है, उनकी भी आत्मा ही शरीर के साथ ऊपर जाती है। ... वह है जिस्मानी हुनर, तुमको बाप रुहानी हुनर सिखलाते हैं।'' सा.बाबा 28.11.09 रिवा.

''साइन्स घमण्डी चाँद-तारों पर जाने की कोशिश करते हैं। उसे देख सब वण्डर खाते हैं। तुम तो कहेंगे - यह कोई नई बात थोड़ेही है, हर 5 हजार वर्ष बाद वे अपनी यह प्रक्टिस करते हैं। अभी तुम इस सृष्टि रूपी ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त, इसके ड्युरेशन आदि को अच्छी रीति जान गये हो। तुमको अन्दर में कितना फखुर होना चाहिए कि बाबा हमको क्या सिखलाते हैं, कमाल है बाबा की।'' सा.बाबा 28.11.09 रिवा.

''साइन्स वाले तो हद तक ही जाते हैं, तुम तो बेहद में जाते हो। साइन्स वालों की है जिस्मानी नॉलेज, तुम्हारी है रुहानी नॉलेज। दोनों में कितना फर्क है। ... यह ज्ञान तुम अभी संगमयुग पर ही लेते हो, सतयुग में तो यह ज्ञान होता नहीं है, इसलिए इसको पुरुषोत्तम संगमयुग कहा जाता है।'' सा.बाबा 28.11.09 रिवा.

''जो आत्मा का अनादि स्वरूप है, उसकी रफ्तार क्या है? ... साइन्स के साधनों की रफ्तार फिर भी साइन्स, साइन्स द्वारा रफ्तार को कट भी कर सकती है, पकड़ सकती है लेकिन आत्मा की गति को कोई भी अभी तक न पकड़ सका है और न पकड़ सकता है।'' अ.बापदादा 14.04.94

''(आत्मा को जानना, उसकी रफ्तार को जानना) इसमें ही साइन्स अपने को फेल समझती है और जहाँ साइन्स फेल है, वहाँ साइलेन्स की शक्ति से जो चाहो, वह कर सकते हो। तो अभी आत्म-शक्ति की उड़ान की तीव्र गति की आदि करो। चाहे स्व-परिवर्तन में, चाहे किसी की भी वृत्ति परिवर्तन में, चाहे वायुमण्डल परिवर्तन में, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क के परिवर्तन में अभी तीव्रता लाओ।''

अ.बापदादा 14.04.94

सर्वशक्तिवान परमात्मा का इस धरा पर अवतरण होता है, उनके द्वारा दिये ज्ञान और योग से आत्मिक शक्ति का विकास होता है। अभी कल्प के संगम पर ही आत्मा में सारे कल्प में पार्ट बजाने के लिए शक्ति भरती है अर्थात् आत्मा रूपी बैटरी चार्ज होती है। सभी आत्मायें तमोप्रधान से सतोप्रधान बनती हैं, प्रकृति की शक्ति अर्थात् सभी तत्व तमोप्रधान से सतोप्रधान बनते हैं। साइन्स की शक्ति विश्व-परिवर्तन का अपना सर्वोच्च कर्तव्य करती है, आसुरी शक्ति और ईश्वरीय शक्ति अपने सर्वोच्च शिखर पर होती है और आसुरी शक्ति पर ईश्वरीय शक्ति की विजय होती है, जिससे दैवी शक्ति का प्रादर्भाव होता है और दुनिया स्वर्ग बनती है। विश्व-नाटक की अद्वितीय शक्ति का भी अभी ही ज्ञान होता है और उसका अनुभव होता है।

''मदद देना तो बाप का फर्ज है। सेन्सीबुल जो हैं, वे हर काम में मदद करते रहते हैं। बाप देखो कितनी मदद करते हैं। हिम्मते मर्दा, मदद दे खुदा। माया पर जीत पाने में भी ताक़त चाहिए। उसके लिए एक रुहानी बाप को याद करना है। और सब संग तोड़ एक संग जोड़ना है। ... इन बातों को तुम बच्चे ही अभी समझ सकते हो।'' सा.बाबा 18.12.09 रिवा.

''स्मृति समर्थी लाती है। जैसे राजपूत जब युद्ध के मैदान में जाते हैं तो उनको स्मृति दिलाते कि ... ऐसे कुल के तुम हो। यह स्मृति दिलाने से उनमें समर्थी आती है। ... इस रीति आप सूर्यवंशी हो, जिन सूर्यवंशियों ने विश्व पर राज्य किया। कैसे राज्य किया और किस शक्ति के आधार पर ऐसा राज्य किया, वह स्मृति और साथ-साथ संगमयुग के ईश्वरीय कुल की स्मृति। ये दोनों स्मृतियाँ बुद्धि में आ जाती हैं तो फिर समर्थी आ जाती है, फिर माया का सामना करना सरल हो जाता है।'' अ.बापदादा 30.5.71

''वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉगराफी रिपीट होती है। सतयुग-त्रेता जो होकर गया है, वह फिर से रिपीट होना है जरूर। ... यह दुनिया ही वण्डरफुल है। सबसे वण्डरफुल है बाप, जो आत्माओं को आत्मा का और अपना परिचय देते हैं।''

सा.बाबा 29.10.09 रिवा.

''छोटी सी आत्मा को आरगन्स मिलते हैं, जिससे सारा पार्ट बजाती है। इस वण्डरफुल ड्रामा में हर एक चीज़ वण्डरफुल है। ... आत्मा कितनी छोटी है, हाथी कितना बड़ा है, उसमें छोटी सी आत्मा जाकर बैठती है। बाप तो मुख्य रूप से मनुष्य जन्म की बात ही समझाते हैं।'' सा.बाबा 29.10.09 रिवा.

''शिवबाबा का भण्डारा भरपूर है। शिवबाबा का भण्डारा कौनसा है? ... बाप तुम बच्चों को ज्ञान रतन देते हैं। वह ज्ञान रतनों का सागर है। तुम बच्चों की बुद्धि बेहद में जानी चाहिए। ... हर एक का कैसा अविनाशी पार्ट है। इतनी छोटी सी आत्मा में 84 जन्मों का सारा रिकार्ड भरा हुआ रहता है। इसको कहा जाता है कुदरत।'' सा.बाबा 18.11.09 रिवा.

''ऊंच ते ऊंच श्रीमत भगवत गीता ही गाई जाती है परन्तु वह गीता सुनाने वाले तो नीचे ही गिरते जाते हैं क्योंकि उनकी याद की यात्रा तो है ही नहीं। ... तुम जानते हो कल्प-कल्प ऐसे ही होगा। बाप अभी गीता सुनाकर, राजयोग सिखलाकर विषय सागर से पार कर देते हैं। दोनों गीता में कितना फर्क है।''

सा.बाबा 19.11.09 रिवा.

''यह पढ़ाई है, पढ़ाई को शक्ति नहीं कहेंगे। पहले तो पवित्र बनो, फिर सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है, उसकी नॉलेज समझो। पवित्र योग से ही बनेंगे। ... तुम सब पार्टधारी हो। यह बेहद का अनादि-अविनाशी ड्रामा है, जो रिपीट होता रहता है। ... एक बार जो शूट हुआ है, वह फिर बदल नहीं सकता।''

सा.बाबा 16.10.09 रिवा.

''साइन्स घमण्डी चाँद-तारों पर जाने की कोशिश करते हैं। उसे देख सब वण्डर खाते हैं। तुम तो कहेंगे - यह कोई नई बात थोड़ेही है, हर 5 हजार वर्ष बाद वे अपनी यह प्रक्टिस करते हैं। अभी तुम इस सृष्टि रूपी ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त, इसके ड्युरेशन आदि को अच्छी रीति जान गये हो। तुमको अन्दर में कितना फखुर होना चाहिए कि बाबा हमको क्या सिखलाते हैं, कमाल है बाबा

ही शरीर के साथ ऊपर जाती है। ... वह है जिस्मानी हुनर, तुमको बाप रुहानी हुनर सिखलाते हैं।'' सा.बाबा 28.11.09 रिवा.

''वह है जिस्मानी हुनर, तुमको बाप रुहानी हुनर सिखलाते हैं। इस रुहानी हुनर सीखने से तुमको कितनी बड़ी प्राइज़ मिलती है, 21 जन्मो के लिए स्वर्गवासी बन जाते हो। ... अभी तुमको याद आता है कि हमारा घर कहाँ है, हमारी राजधानी कहाँ थी, जो हमने गँवाई है। रावण ने हमारा राज्य छीन लिया। अभी फिर से हम अपने असली घर जाते हैं और अपनी खोई हुई राजाई को पाते हैं।''

सा.बाबा 28.11.09 रिवा.

''बाप मुक्ति-जीवनमुक्ति दोनों देते हैं। जब तुम सतयुग में जीवनमुक्ति में हो तो बाकी सब आत्मायें मुक्तिधाम में रहते हैं। शिवबाबा भी मुक्तिधाम में रहते हैं और हम बच्चे भी वहाँ रहते हैं। ... साइन्स घमण्ड वालों की आश कब पूर्ण नहीं होती है। तुम्हारी तो सब आशायें पूर्ण हो जाती हैं।'' सा.बाबा 28.11.09 रिवा.

''उन साइन्स घमण्ड वालों की है जिस्मानी ताक़त, तुम्हारी है रुहानी ताक़त, जो सिर्फ तुम ही जानते हो। वे जिस्मानी ताक़त से कहाँ तक जायेंगे। ... उनका हुनर यहाँ ही खत्म हो जायेगा। वह है जिस्मानी हाइएस्ट हुनर, तुम्हारा है रुहानी हाइएस्ट हुनर, जिससे तुम शान्तिधाम में जाते हो।'' सा.बाबा 28.11.09 रिवा.

''जैसे साइन्स वाले पहले की आवाज़ को कैच करने का प्रयत्न करते हैं, ... वैसे आप साइलेन्स की शक्ति वाले अपने 5000 वर्ष पहले के दैवी संस्कार कैच कर सकते हो? आप अपने असली संस्कारों को सिर्फ कैच नहीं करते हो लेकिन अपना प्रैक्टिकल स्वरूप बनाते हो।'' अ.बापदादा 9.12.70

''जब यह बुद्धि पृथ्वी अर्थात् प्रकृति की आकर्षण से परे हो जायेगी फिर कोई भी चीज़ बुद्धि को नीचे नहीं ला सकती है। फिर प्रकृति को अधीन करने वाले हो जायेंगे, न कि प्रकृति के अधीन होने वाले। ... वैसे ही साइलेन्स की शक्ति से इस प्रकृति की आकर्षण से परे अर्थात् जब चाहें तब आधार लें, न कि प्रकृति जब चाहे तब अधीन कर दे।'' अ.बापदादा 1.11.70

विचार करते हैं।

साइलेन्स की शक्ति अर्थात् योगबल आत्मिक शक्ति के विकास का एकमात्र आधार है। साइन्स शक्ति आत्मा को सुख के साधन तो प्रदान करती है परन्तु उससे आत्मिक शक्ति का विकास नहीं होता है, बल्कि दिनोदिन क्षीण ही होती जाती है।

साइलेन्स शक्ति अर्थात् योगबल के आधार पर ही साइन्स की शक्ति नये विश्व के नव-निर्माण में सहयोगी बनती है, पुराने विश्व के विनाश के लिए साधन निर्माण कर निमित्त बनती है।

साइलेन्स की शक्ति अर्थात् योगबल से आत्मायें पावन बनकर घर वापस जाती हैं, साइन्स की शक्ति का आत्माओं को घर वापस ले जाने में सीधा कोई सहयोग नहीं है, उससे इसी भूमण्डल में विभिन्न साइन्स के साधनों से जीवात्मा भ्रमण करती है अर्थात् भ्रमण करने में सहयोग मिलता है।

साइलेन्स की शक्ति अर्थात योगबल से आत्मायें पावन बनकर साइलेन्स की दुनिया अर्थात् परमधाम वापस जाती हैं, साइन्स के बल से कोई आत्मा घर वापस नहीं जा सकती क्योंकि उससे आत्मायें पावन नहीं बनती हैं और ही दिनोदिन पतित होती जाती हैं।

साइलेन्स की शक्ति अर्थात् योगबल से आत्मा पावन बनती है, जिससे वह सम्पूर्णता को पाती है और उसकी सर्व इच्छायें समाप्त हो जाती है, जिससे आत्मा सन्तुष्टता का अनुभव करती है। साइन्स की शक्ति से जैसे-जैसे सफलता मिलती जाती है, आत्मा की जिज्ञासा, इच्छायें और बढ़ती जाती हैं क्योंकि आत्मिक शक्ति का ह्रास होने से आत्मा की इच्छायें-आशायें बढ़ती हैं, जीवन में असन्तुष्टता आती है।

''वे हैं साइन्स घमण्डी, तुम्हारे पास है साइलेन्स का घमण्ड। वे तो चाँद पर जाने की कोशिश करते हैं, तुम तो जानते हो हम आत्मा सूर्य-चाँद-तारों से परे अपने शान्तिधाम ब्रह्माण्ड में जाते हैं। आत्मा ही सब कुछ करती है, उनकी भी आत्मा

की।'' सा.बाबा 28.11.09 रिवा.

''5 हजार वर्ष पार्ट बजाते-बजाते बैटरी डिस्चार्ज हो जाती है, फिर बाप आकर सबकी बैटरी चार्ज कर देते हैं। विनाश के समय सभी आत्मायें ईश्वर को याद करते हैं। ... 84 जन्मों का जो हिसाब-किताब था, वह अब पूरा हुआ, फिर वह रिपीट होगा।'' सा.बाबा 7.08.09 रिवा.

''तुम विश्व के मालिक बनते हो तो तुम्हारे में कितनी ताक़त रहती है। ... तुम बच्चों को आधा कल्प के लिए ताक़त मिलती है। फिर भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। एक जैसी ताक़त सब पा नहीं सकते, न सब एक जैसा पद पा सकते हैं। यह भी पहले से ड्रामा में नूँध है। ड्रामा अनादि-अविनाशी बना-बनाया है।''

सा.बाबा 10.12.09 रिवा.

''क्रिश्यिचन्स से राज्य दिलायेंगे और कृष्ण लेंगे। उन्हों की है साइन्स की सत्ता और यहाँ है साइलेन्स की सत्ता। साइन्स-पॉवर खत्म होगी और साइलेन्स-पॉवर विजयी होगी। साइलेन्स-पॉवर बढ़ाना अर्थात् राज्य लेना।''

अ.बापदादा 31.12.70

साइलेन्स-शक्ति, साइन्स-शक्ति, प्रकृति की शक्ति और संगमयुग

संगमयुग पर साइलेन्स की शक्ति, साइन्स की शक्ति अपने चरमोत्कर्ष पर होती है और प्रकृति की शक्ति भी संगमयुग पर ही अपना सवोच्च कर्तव्य करती है, जिसके आधार पर इस विश्व का आमूल परिवर्तन होता है। संगमयुग पर ही जो सभी तत्व अपनी तमोप्रधान स्थिति में पहुँच गये हैं, वे सब परिवर्तन होकर सतोप्रधान होकर अपने मूल स्वरूप में स्थित होते हैं। संगमयुग पर जो साइन्स की शक्ति के आधार पर अणु-युद्ध होता है और पृथ्वी पर भूचाल आदि आते हैं, जिससे पृथ्वी जो अभी अपनी धूरी पर साढ़े तेईस अंश झुकी हुई है, 90 अंश पर सीधी हो जाती है। संगमयुग पर सागर में जो तूफान उठते हैं, सुनामा

आदि की लहरें उठती हैं, जिससे पुरानी सृष्टि का विनाश भी होता है और पृथ्वी पर सफाई भी होती है, उससे पृथ्वी को नई ऊर्जा मिलती है, भूमि उपजाऊ बन जाती है।

संगमयुग पर ही बाहुबल से गृह-युद्ध आदि होते हैं, जिससे आत्माओं के आत्माओं के साथ के हिसाब-किताब चुक्तू होते हैं, अपने हिसाब-किताब चुक्तू करके आत्मायें पावन बनती हैं और परमधाम जाती हैं। संगमयुग पर ही साइलेन्स की शक्ति के आधार पर आत्मायें नये कल्प के लिए पावन बनकर नये पावन सुखदायी सम्बन्धों का निर्माण करती हैं।

संगमयुग पर आत्मायें परमात्मा से योगयुक्त होकर साइलेन्स की शक्ति के द्वारा आत्माओं और प्रकृति को पावन बनाने का पावन कर्तव्य करती हैं।

संगमयुग पर ही साइलेन्स की शक्ति अर्थात् योगबल से और सजाओं के आधार पर आत्माओं के पुराने हिसाब-किताब पूरे होते हैं और आत्मायें वापस परमधाम अर्थात् मुक्तिधाम में जाती हैं, जो सर्वात्माओं का विश्रामगृह है। संगमयुग पर ही साइलेन्स की शक्ति, साइन्स की शक्ति और प्रकृति की शक्ति मिलकर नये विश्व का नवनिर्माण करते हैं, सतोप्रधान आत्माओं के सुख के लिए सतोप्रधान सुख-साधनों का निर्माण करते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि संगमयुग पर साइलेन्स की सर्व शक्तियाँ और प्रकृति की सर्व शक्तियाँ मिलकर पुरानी तमोप्रधान सृष्टि का विनाश करती हैं और नयी सतोप्रधान सृष्टि का नव-निर्माण करते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि संगमयुग आत्मिक-शक्ति, परमात्म-शक्ति, साइन्स की शक्ति, प्रकृति की शक्ति का संगम है अर्थात् ये सब शक्तियाँ इस समय अपना सर्वोच्च पार्ट बजाती हैं, जिससे पुरानी दुनिया का विनाश होता है और नई दुनिया स्वर्ग की स्थापना होती है।

ज्ञान-सागर परमपिता परमात्मा ने आत्मा-परमात्मा, सृष्टि-चक्र का जो ज्ञान दिया है, उसका चिन्तन करने और परमात्मा के गुणों का और शक्तियों का

चार्ज करने। अभी बाप को याद करके अपनी बैटरी चार्ज करना है। ... तुम जानते हो - इस रथ द्वारा बाप ने हमको रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का सब राज़ समझाया है।'' सा.बाबा 4.12.09 रिवा.

''तुम एक बाप को ही याद करो, उनको ही प्यार करो तो इस याद से बहुत पॉवर मिलती है। बाप सर्वशक्तिवान है। बाप से तुमको इतनी पॉवर मिलती है, जो तुम रावण पर जीत पाकर सारे विश्व के मालिक बन जाते हो।''

सा.बाबा 4.12.09 रिवा.

''कोई भी बात सामने आती है तो सामना नहीं करना है। या तो किनारा करो या अपनी साइलेन्स की शक्ति से परिवर्तन करो। ये कला अभी कम है। ... आप जब पहले आये तो कौनसी आत्मायें थीं। ... बापदादा ने प्यार से अपना बनाया।''

अ.बापदादा 22.04.09

''वह है जिस्मानी हुनर, तुमको बाप रुहानी हुनर सिखलाते हैं। इस रुहानी हुनर सीखने से तुमको कितनी बड़ी प्राइज़ मिलती है, 21 जन्मो के लिए स्वर्गवासी बन जाते हो। ... अभी तुमको याद आता है कि हमारा घर कहाँ है, हमारी राजधानी कहाँ थी, जो हमने गँवाई है। रावण ने हमारा राज्य छीन लिया। अभी फिर से हम अपने असली घर जाते हैं और अपनी खोई हुई राजाई को पाते हैं।''

सा.बाबा 28.11.09 रिवा.

साइलेन्स की शक्ति और साइन्स की शक्ति का तुलनात्मक अध्ययन

Q. साइलेन्स पॉवर और साइन्स पॉवर में क्या अन्तर है और उसका क्या परिणाम है ?

साइलेन्स की शक्ति और साइन्स की शक्ति का आत्मा पर और विश्व पर क्या प्रभाव होता है, वह भी बुद्धि में रखना अति आवश्यक है। इसके सम्बन्ध में बाबा ने बहुत विस्तार से समय प्रति समय बताया है, उसके विषय में यहाँ कुछ

योगशक्ति की आवश्यकता और उपयोग / योगशक्ति से आत्माओं को सहयोग / योगशक्ति से प्रकृति को सहयोग / योगशक्ति का अपने कर्मभोग पर विजय / योगशक्ति का विकारी संस्कारों से मुक्त होने में सहयोग

''हर बच्चे की पढ़ाई का फाइनल पेपर का समय अचानक आना है, इसके लिए सदा एवर-रेडी। ... क्या करूँ - यह सोचने का भी समय नहीं मिलेगा। फुल-स्टॉप तो फुल-स्टॉप हो जाये, इतना फास्ट पुरुषार्थ करना ही फाइनल पेपर में पास होना है।'' अ.बापदादा 30.11.09

''फुल-स्टॉप तो फुल-स्टॉप हो जाये। कॉमा भी नहीं। ... वेस्ट थॉट्स की रफ्तार तीव्र होती है। जो साधारण संकल्प का एक घण्टा और फास्ट संकल्प (वेस्ट थॉट्स) का एक मिनट (दोनों में बराबर शक्ति जाती है)। ... सन्तुष्ट आत्मा के संकल्प में यह क्यों, क्या की भाषा स्वप्न में भी नहीं आयेगी क्योंकि उसको तीन विशेष बातें अर्थात् तीन बिन्दियों को अर्थात् आत्मा-परमात्मा-ड्रामा को समय पर कार्य में लगा सकते हैं।'' अ.बापदादा 30.11.09

''आज बापदादा देख रहे थे कि सबकी प्रिय और बापदादा की प्रिय सन्तुष्ट आत्मायें कौन-कौन हैं। सन्तुष्ट आत्मा के संकल्प और स्वप्न में भी क्यों-क्या की भाषा नहीं आयेगी क्योंकि वे आत्मा-परमात्म-ड्रामा तीन बिन्दियाँ समय पर कार्य में लगा सकते हैं।'' अ.बापदादा 30.11.09

''वेस्ट थॉट्स की रफ्तार तीव्र होती है ... ऐसे समय पर तीन बिन्दियाँ सन्तुष्ट आत्मा ही लगा सकती है क्योंकि ऐसे समय पर शक्तियों का खज़ाना आवश्यक है। मास्टर सर्वशक्तिवान वह है जो जिस समय जिस शक्ति को आर्डर करे, वह हाज़िर हो जाये। ... सर्व खज़ानों की चाबी है तीन बिन्दियाँ अर्थात् आप, बाप और ड्रामा'' अ.बापदादा 30.11.09

''अभी तुम बच्चों को पता है ऊपर से कैसे सब आत्मायें नम्बरवार यहाँ आती हैं पार्ट बजाने। बाप जो ऊपर में थे, वह भी अभी नीचे आ गये हैं, तुम सबकी बैटरी

स्मरण करने से आत्मा की सुषुप्त शक्तियाँ जागृत होती हैं।

संगमयुग पर योगगबल से आत्मा में दैवी गुणों की धारणा होती है, और तो सारे कल्प आत्मा-शक्ति के उपयोग से दैवी गुणों में गिरावट ही आती जाती है और गिरते-गिरते आसुरी गुण बन जाते हैं। स्वमान, अभिमान में बदल जाता है; प्रेम, मोह में बदल जाता है; योगबल, भोगबल में बदल जाता है; जिससे सन्तानोत्पत्ति विकार से आरम्भ हो जाती है।

''देरी से आने वाले पाप तो भस्म कर न सकें। पाप आत्मायें होंगी तो फिर सजायें खाकर बहुत थोड़ा पद पा लेंगी, बेइज्जती होगी। जो अभी माया की बहुत इज़्ज़त वाले हैं, वे उस समय बेइज़्ज़त बन जायेंगे। अभी तुम्हारी यह है ईश्वरीय इज़्ज़त। ईश्वरीय इज़्ज़त, दैवी इज़्ज़त और आसुरी इज़्ज़त में रात-दिन का फर्क है। ... आसुरी इज़्ज़त से बिल्कुल बेगर बन जाते हैं, ईश्वरीय इज़्ज़त से कितने इज़्ज़त वाले बनते हो।'' सा.बाबा 17.10.09 रिवा.

''साइन्स वाले तो हद तक ही जाते हैं, तुम तो बेहद में जाते हो। साइन्स वालों की है जिस्मानी नॉलेज, तुम्हारी है रुहानी नॉलेज। दोनों में कितना फर्क है। ... यह ज्ञान तुम अभी संगमयुग पर ही लेते हो, सतयुग में तो यह ज्ञान होता नहीं है, इसलिए इसको पुरुषोत्तम संगमयुग कहा जाता है।'' सा.बाबा 28.11.09 रिवा.

''जन्म-जन्मान्तर तो तुम शास्त्रों आदि का ज्ञान सुनते गिरते ही आये हो। अभी तुम्हारी बुद्धि में है कि हम कहाँ से गिरते-गिरते कहाँ पहुँचे हैं। सतयुग से तुम गिरते ही आये हो। अभी हम इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर पहुँचे हैं। कल्प-कल्प बाप आते हैं पढ़ाने के लिए।'' सा.बाबा 8.12.09 रिवा.

''सूर्यवंशी कुल की स्मृति और साथ-साथ संगमयुग के ईश्वरीय कुल की स्मृति। ये दोनों स्मृतियाँ बुद्धि में आ जाती हैं तो फिर समर्थी आ जाती है, फिर माया का सामना करना सरल हो जाता है। ... ऐसे हर कार्य करने के पहले स्मृति से अपने में समर्थी को लाओ, फिर कार्य करो।'' अ.बापदादा 30.5.71

साइलेन्स-शक्ति, साइन्स-शक्ति, प्रकृति की शक्ति और विश्व-परिवर्तन

विश्व-परिवर्तन में सर्व शक्तियों का योगदान है, इसलिए सर्व शक्तियाँ मिलकर विश्व परिवर्तन का कार्य अर्थात् तमोप्रधान विश्व का विनाश और नये सतोप्रधान विश्व की रचना का कार्य करती हैं। विश्व-नाटक की साइलेन्स शक्ति इसके लिए आधार बनती है, जिसके अनुसार साइलेन्स की अन्य शक्तियाँ और प्रकृति की शक्तियाँ काम करती हैं। बाबा ने भी कहा है - जब आत्मायें सतोप्रधान बन जाती हैं तो उनके लिए विश्व भी सतोप्रधान चाहिए, इसलिए पुरानी सृष्टि का विनाश भी जरूर होगा।

Q.इन सब शक्तियों का विश्व-परिवर्तन में क्या महत्व है और उनकी क्या कार्य-विधि है ?

यह विचारणीय विषय है, जिसके विषय में बाबा ने समय प्रति समय बहुत कुछ ज्ञान दिया है और हमको भी कहा है कि आप बाबा की बातों को समझो और उन विचार कर जीवन में धारणा करो।

Q. आत्मिक-शक्ति और शारीरिक शक्ति में क्या अन्तर है ? बाबा ने अनेक बार कहा है - तुम योगबल से नई दुनिया का नव-निर्माण करते हो, साइन्स वाले बाहुबल से पुरानी दुनिया का विनाश करते हैं ?

आत्मिक शक्ति अकेले कोई कार्य नहीं कर सकती है और शरीर भी आत्मा के बिना कोई कार्य नहीं कर सकता है बल्कि शरीर तो आत्मा के बिना अस्तित्वहीन है अर्थात् आत्मा के बिना शरीर का काम करना तो दूर की बात है, वह तो विनाश ही हो जाता है। आत्मा शरीर के साथ ही कोई कार्य करने में समर्थ होती है, इसलिए इसको जीवात्मा कहा जाता है। जब जीवात्मा का सम्बन्ध परमात्मा के साथ होता है तो विश्व का नव-निर्माण करती है अर्थात् आत्माओं और तत्वों को पावन बनाती है। ऐसे ही वैज्ञानिक भी जीवात्मा हैं अर्थात् साइलेन्स की शक्ति और बाहुबल साथ हैं। जब साइन्स की शक्ति परमात्म-शक्ति के

''कहाँ भी रहते यह याद की प्रैक्टिस करनी है कि जो कोई भी आये, उनको भी बाप का पैग़ाम दो कि बाप कहते हैं - अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो, इसको ही योगबल कहा जाता है। ... नीचे उतरते-उतरते तमोप्रधान बन गये, आत्मा की शक्ति बिल्कुल खत्म हो गई है।'' सा.बाबा 17.08.09 रिवा.

''सतयुग में देवी-देवता पार्ट बजाते हैं। जैसे-जैसे समय बीतता जाता है, धीरे-धीरे सुख कम होता जाता है। हर एक चीज़ सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो होती है। ... ये सब बातें अच्छी रीति बुद्धि में धारण कर फिर औरों को समझाना है। सब एक जैसे तो हो नहीं सकते। जरूर भिन्न-भिन्न रीति समझाते होंगे।''

सा.बाबा 5.12.09 रिवा.

''कोई कितना भी अशान्त, बेचैन घबरया हुआ आपके सामने आये लेकिन आपकी एक दृष्टि, स्मृति और वृत्ति की शक्ति उनको बिल्कुल शान्त कर दे। ... सामने आते ही अव्यक्त स्थिति का अनुभव करे। ... आप मास्टर सूर्य के समान नॉलेज की लाइट देने के कर्तव्य में सफल हुए हो लेकिन किरणों की माइट से हर एक आत्मा के संस्कार रूपी कीटाणुओं को नाश करने का कर्तव्य करना है।''

अ.बापदादा 26.1.70

''सर्व आत्माओं को रोशनी भी मिले और किचड़ा भी खत्म हो। ... कीटाणु खत्म नहीं होते तो समझो मेरे में पॉवर कम है। पॉवर कम होने के कारण ज्ञान की रोशनी तो देगा परन्तु पुराने संस्कारों रूपी कीटाणु खत्म नहीं होंगे। ... तो पॉवरफुल बनना है।'' अ.बापदादा 26.1.70

''जब खुद पारसबुद्धि बनें, तब तो दूसरों को भी बनायें। पुरुषार्थ अच्छा करना चाहिए। इसमें लज्जा की बात नहीं है। ... जब तक बाप को यथार्थ रीति नहीं पहचाना है, तब तक वह ताक़त आ नहीं सकती। बाप कहते हैं - वेदों-शास्त्रों आदि को पढ़ने से मनुष्य कुछ भी सुधरते नहीं है, दिन-प्रतिदिन और ही बिगड़ते आये हैं। सतोप्रधान से तमोप्रधान ही बनते जाते हैं।''

सा.बाबा 30.12.09 रिवा.

''आप जैसे-जैसे साक्षात् मूर्त बनेंगे, वैसे ही साक्षात्कार मूर्त बनेंगे। जब सभी साक्षात् मूर्त बन जायेंगे तो संस्कार भी सभी के साक्षात् मूर्त समान बन जायेंगे। जितना-जितना अपने को चार्ज करेंगे, उतना इन्चार्ज बनने का कर्तव्य सफलतापूर्वक कर सकेंगे। अपने को निमित्त समझकर हर कदम उठाना है।''

अ.बापदादा 26.1.70

साइलेन्स की शक्ति और रुहानी सेवा

सेवा ब्राह्मणों का धर्म और कर्म है, जिसके बिना ब्राह्मण जीवन ही नीरस हो जाता है। बाबा ने हमको ये कार्य दिया है, जिसके आधार पर ही हम स्वर्ग में फल पाते हैं। जब हमारे में साइलेन्स की शक्ति होगी, तब ही इस रुहानी सेवा में सफलता पा सकेंगे।

''व्यर्थ बातों से किनारा करने से चमकता हुआ लकी सितारा बन जायेंगे। इन्चार्ज टीचर बनने के लिए पहले अपनी आत्मा की बैटरी चार्ज करो। जिसकी जितनी बैटरी चार्ज है, वह उतना ही अच्छा इन्चार्ज टीचर बन सकती है। ... अगर बैटरी चार्ज के बिना इन्चार्ज बनेंगे तो क्या होगा? चार्ज अर्थात् दोष लग जायेगा। चार्ज शब्द के तीन अर्थ (बैटरी चार्ज होना, ड्युटी और दोष लगाना) होते हैं।'' अ.बापदादा 25.03.71

''जब तुम्हारी बहुत वृद्धि हो जायेगी, फिर तुम्हारे योगबल से बहुत खींचकर आयेंगे। जितना तुम्हारे से कट निकलती जायेगी, उतना बल भरता जायेगा। ... चलन से सब मालूम पड़ जाता है। अभी कोई की कर्मातीत अवस्था हो न सके। अभी तो कड़ी-कड़ी भूलें भी होना सम्भव है।'' सा.बाबा 3.12.09 रिवा.

''तुम अभी ज्ञान को धारण कर रहे हो, फिर पिछाड़ी में बाप मिसल बन जायेंगे। सारा मदार धारणा पर है। फिर वह ताक़त आ जायेगी, बाप की याद से। याद को जौहर कहा जाता है। ... तुम बच्चों में भी योग का बल चाहिए। ज्ञान तलवार में योग का जौहर चाहिए। जौहर आने से जल्दी समझेंगे।''

सा.बाबा 19.08.09 रिवा.

साथ होती है तो विश्व का स्थूल नव-निर्माण करती है और जब वही साइन्स की शक्ति परमात्म-शक्ति से विमुख होती है तो वह पुरानी दुनिया के विनाश के निमित्त बनती है। इस प्रकार इन सभी शक्तियों को भी यथार्थ रीति जानना है।

''तुम्हारे में कितनी ताक़त थी, वह दिन प्रतिदिन कम होती गई है। जैसे मोटर से पेट्रोल कम होता जाता है। ... भारत में कितना जबरदस्त धन था। यह राज्य उन्होंने कैसे पाया? राजयोग से ऐसा राज्य पाया। इसमें लड़ाई आदि की बात ही नहीं। इसको कहा जाता है ज्ञान के अस्त्र-शस्त्र। ... ज्ञान और विज्ञान, ज्ञान और याद के कितने बड़े जबरदस्त अस्त्र-शस्त्र हैं।'' सा.बाबा 21.09.09 रिवा.

''ज्ञान और विज्ञान अर्थात् ज्ञान और याद के कितने बड़े जबरदस्त अस्त्र-शस्त्र हैं, जिनसे तुम सारे विश्व पर राज्य करते हो। ... इसमें स्थूल लड़ाई आदि की कोई बात नहीं है।'' सा.बाबा 21.09.09 रिवा.

''उनकी है साइन्स, तुम्हारी है साइलेन्स। तुम जितना साइलेन्स में जायेंगे, उतना वे विनाश के लिए अच्छी-अच्छी चीजें तैयार करते रहेंगे। ... तुमको अन्दर में खुशी होती है कि बाबा हमारे लिए नई दुनिया बनाने आये हैं। ... अभी तुम कितनी रोशनी में हो, मनुष्य तो सब घोर अन्धियारे में है।''

सा.बाबा 12.08.09 रिवा.

साइलेन्स की शक्ति और अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति

साइलेन्स की शक्ति आत्मा की मूल शक्ति है, जिसके आधार पर आत्मा सारे कल्प पार्ट बजाती है परन्तु आत्मा की वह शक्ति निरन्तर कम होती जाती है। संगमयुग पर जब आत्मा की साइलेन्स की शक्ति का संयोग परमात्मा की साइलेन्स की शक्ति से होता है, तब एक विशेष साइलेन्स की शक्ति पैदा होती है, जिस शक्ति के आधार पर आत्मा की शक्ति बढ़ती है, विश्व का नव-निर्माण होता है। इस साइलेन्स की शक्ति के आधार पर आत्मा को अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है, जो संगमयुग पर ही आत्मा को अनुभव होता है।

संगमयुग पर जब ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा आकर आत्माओं को आत्मा का, अपना और सृष्टि-चक्र का ज्ञान देते हैं और आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमात्मा को याद करती है तब आत्मा को अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है। भक्ति मार्ग में जब आत्मायें हठ से अर्थात् बिना यथार्थ ज्ञान के अपने को देह से न्यारा करने का अभ्यास करती हैं, तब भी आत्मा को अस्थाई रूप से अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है परन्तु उससे आत्मा की शक्ति का विकास नहीं होता है, केवल उसके ह्रास की गति मन्द होती है।

आत्मिक शक्ति और साइलेन्स की शक्ति में अन्तर और समानता

यद्यपि ये दोनों ही शक्तियाँ साइलेन्स के आधार पर आधारित हैं परन्तु यथार्थ साइलेन्स की शक्ति अर्थात् आत्मा के परमात्मा के साथ के सहयोग से उत्पन्न शक्ति, जिसको योगबल भी कहा जाता है। साइलेन्स की शक्ति संगमयुग पर ही पैदा होती है, जब परमात्मा इस धरा पर आते हैं और आत्माओं का परमात्मा के साथ सहयोग होता है अर्थात् मिलन होता है।

आत्मिक शक्ति अर्थात् आत्मा की अपनी शक्ति है, जिसके आधार पर आत्मा विश्व-नाटक में आदि से अन्त तक अपना पार्ट बजाती है। आत्मिक शक्ति समयान्तर में पार्ट बजाते-बजाते तमोप्रधान कार्यों में प्रवृत्त होती जाती है परन्तु साइलेन्स शक्ति से आत्मिक शक्ति तमोप्रधानता से सतोप्रधानता की ओर अग्रसर होती है अर्थात् वह तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जाती है। यथार्थ साइलेन्स की शक्ति अर्थात् आत्मा के परमात्मा को याद करने से उत्पन्न शक्ति संगमयुग पर ही आत्मा को मिलती है क्योंकि संगमयुग पर ही आत्मा को परमात्मा से यथार्थ ज्ञान मिलता है और आत्मा जब परमात्मा को, अपने घर परमधाम अर्थात् शान्तिधाम को यथार्थ रीति जानकर याद करती है तो दोनों के सहयोग से जो शक्ति पैदा होती है, वह यथार्थ साइलेन्स की शक्ति है, जिससे आत्मा की शक्ति का विकास होता है, तत्वों सहित सर्वात्मायें पावन बनती हैं और नये विश्व का

भी मन्सा सेवा से सहयोगी हैं ना!'' अ.बापदादा 18.01.10

साइलेन्स की शक्ति का प्रभाव और उसकी परख

Q. हमारे में साइलेन्स की शक्ति है और वह काम कर रही है, उसकी परख क्या है ?

- आत्मिक-शक्ति बनाम साइलेन्स की शक्ति में स्थित होकर ही आत्मा शान्तिधाम जा सकती है।
- प्रकृति की शक्ति का सहयोग भी हर आत्मा को उसकी आत्मिक-शक्ति के आधार पर ही मिलता है। संगम पर आत्मा अपनी शक्ति और ईश्वरीय शक्ति के सहयोग अर्थात् साइलेन्स की शक्ति से मायावी शक्ति पर विजय पाती है और प्रकृति को भी पावन बनाती है।
- साइलेन्स की शक्ति वाले की बुद्धि में ज्ञान का चिन्तन चलता रहेगा, उसको ज्ञान की उछल आती रहेगी।
- साइलेन्स की शक्ति वाले को समय पर कृत्य का संकल्प अवश्य आयेगा, इसलिए उसको पहले से उसके लिए चिन्तन या चिन्ता नहीं होगी।

''छोटी सी आत्मा है, उस पर कितना मैल चढ़ा हुआ है। मैल चढ़ने से कितना घाटा पड़ जाता है। यह घाटा-फायदा तब देखने में आता है, जब आत्मा शरीर के साथ है। ... पहले आत्मा सुन्दर थी तो चोला भी सुन्दर मिलता है। आत्मा को ही तमोप्रधान कहा जाता है क्योंकि उसमें फुल किचड़ा है। एक तो देहाभिमान का किचड़ा और फिर काम-क्रोधादि विकारों का किचड़ा।''

सा.बाबा 23.10.09 रिवा.

''बीच-बीच में योग करने से वायुमण्डल में भी सारा प्रभाव रहेगा, और सभी भी एक-दो को देख फॉलो करेंगे, बुद्धि को रेस्ट भी मिलेगी और शक्ति भी भरेगी। वायुमण्डल को भी सहयोग मिलेगा। ... फिर वातावरण अव्यक्त शान्त रहेगा।''

अ.बापदादा 26.1.70

होता है। आधे कल्प तक सारा विश्व एक होता है, इसलिए किसी देश का नाम आदि नहीं होता है। फिर जब द्वापर से अन्य धर्म स्थापित होते हैं, विश्व का विभाजन होता है तब भारत तथा अन्य देशों का नामकरण होता है।

''स्वर्ग की स्थापना में साइन्स भी बहुत काम में आती है। यह सुख देने वाली भी है और विनाश के भी निमित्त बनेंगी। ... इस पुरानी दुनिया का विनाश भी होना है। सतयुग के सुख भारत के भाग्य में ही हैं। और सब धर्म वाले तो आते ही बाद में, जब भारतवासी गिरते हैं और भक्ति मार्ग शुरू होता है।''

सा.बाबा 9.11.09 रिवा.

''आज की गवर्मेन्ट तो धर्म को ही नहीं मानती है। अभी तो देवी-देवता धर्म ही खत्म हो गया है। गाया जाता है - रिलीज़न इज़ माइट। धर्म को न मानने के कारण ताक़त नहीं रही है। ... अभी आत्मा पतित है तो पावन के आगे जाकर नमन करते हैं।'' सा.बाबा 11.11.09 रिवा.

''हम कैसे सीढ़ी उतरते आये हैं, वह भी बाप ने बताया है। हमको सीढ़ी उतरने में पूरे 84 जन्म लगे हैं। फिर कोई एक जन्म भी लेते हैं। ... भारतवासी ही सतोप्रधान थे, अभी तमोप्रधान बनें हैं। 84 जन्म भी इन्हों के ही होते हैं। और धर्म तो आधा कल्प के बाद आते हैं।'' सा.बाबा 27.12.09 रिवा.

''बापदादा को खुशी है कि किसी न किसी संग के साथ अभी राज नेताओं में भी नाम फैल रहा है। तीन शक्तियाँ साइन्स, आध्यात्मिकता और राज्य सत्ता, तीनों ही सत्तायें मिलकर एक संकल्प करें, सहयोगी बनें तो हम बापू गांधी जी और बापू का भी बापू परमात्मा दोनों बाप की आशायें सहज पूर्ण कर सकते हैं।''

अ.बापदादा 18.01.10

''आध्यात्मिकता, धर्म सत्ता, राज्य सत्ता तीनों सत्तायें अलग-अलग हैं। लेकिन सत्ता तो हैं। तो भी जो चाहते हैं, वह नहीं हो रहा है। तो सभी सोचने लगते हैं कि कमी किसकी है ? ... अगर एक-दो ग्रुप सहयोगी बनें तो बापदादा का वरदान है कि भारत स्वर्ग बनना ही है। दोनों बापू की आशायें पूर्ण होनी ही हैं। फारेन वाले

निर्माण होता है। उस साइलेन्स की शक्ति के आधार पर ही आत्मा मायावी शक्ति अर्थात् देहाभिमान की शक्ति पर विजय प्राप्त करती है।

''अभी के पुरुषार्थ से 21 जन्मों के लिए तुम्हारी आत्मा में घृत पड़ जाता है। फिर आहिस्ते-आहिस्ते कम होते-होते इस समय ज्योति बिल्कुल उझाई है। सारी दुनिया की ज्योति उझाई है परन्तु उसमें खास भारत और आम सारी दुनिया।''

सा.बाबा 24.09.09 रिवा.

''ये शास्त्र आदि सब भक्ति की सामग्री है, जिससे तुम नीचे ही गिरते आये हो। 84 जन्म लेंगे तो जरूर नीचे उतरेंगे ना।... बाप ने समझाया है - तुम पुनर्जन्म लेते-लेते देवता से बदल हिन्दू बन गये हो। पतित बन गये ना। ... अपवित्र बन गये तो देवी-देवता कहला न सकें। इसलिए नाम पड़ गया है हिन्दू।''

सा.बाबा 25.09.09 रिवा.

''उन साइन्स घमण्ड वालों की है जिस्मानी ताक़त, तुम्हारी है रुहानी ताक़त, जो सिर्फ तुम ही जानते हो। वे जिस्मानी ताक़त से कहाँ तक जायेंगे। ... उनका हुनर यहाँ ही खत्म हो जायेगा। वह है जिस्मानी हाइएस्ट हुनर, तुम्हारा है रुहानी हाइएस्ट हुनर, जिससे तुम शान्तिधाम में जाते हो।'' सा.बाबा 28.11.09 रिवा.

''साइन्स घमण्डी चाँद-तारों पर जाने की कोशिश करते हैं। उसे देख सब वण्डर खाते हैं। तुम तो कहेंगे - यह कोई नई बात थोड़ेही है, हर 5 हजार वर्ष बाद वे अपनी यह प्रक्टिस करते हैं। अभी तुम इस सृष्टि रूपी ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त, इसके ड्युरेशन आदि को अच्छी रीति जान गये हो। तुमको अन्दर में कितना फखुर होना चाहिए कि बाबा हमको क्या सिखलाते हैं, कमाल है बाबा की।'' सा.बाबा 28.11.09 रिवा.

''साइन्स वाले तो हद तक ही जाते हैं, तुम तो बेहद में जाते हो। साइन्स वालों की है जिस्मानी नॉलेज, तुम्हारी है रुहानी नॉलेज। दोनों में कितना फर्क है। ... यह ज्ञान तुम अभी संगमयुग पर ही लेते हो, सतयुग में तो यह ज्ञान होता नहीं है, इसलिए इसको पुरुषोत्तम संगमयुग कहा जाता है।'' सा.बाबा 28.11.09 रिवा.

आत्मिक शक्ति का मूल स्रोत

आत्मिक शक्ति का मूल स्रोत परमात्मा है। वैसे तो आत्मा में आत्मिक शक्ति अनादि-अविनाशी रूप में नीहित है परन्तु विश्व-नाटक में पार्ट बजाने के लिए जब आत्मा इस धरा पर आती है तो यथार्थ आत्मिक स्वरूप भूल जाती है, जिसके कारण पहले देह-भान और फिर देहाभिमान की प्रवेशता के कारण, कर्म-विकर्म करते, साधन सत्ता का उपभोग करते वह शक्ति ह्रासित हो जाती है अर्थात् मर्ज हो जाती है और प्रकृति की शक्ति अर्थात् देहाभिमान की शक्ति आत्मा पर हावी हो जाती है। अन्त में नाममात्र आत्मिक शक्ति जब रह जाती है, तब आत्मिक शक्ति के मूल स्रोत परमात्मा आकर आत्मा को अपना, आत्मा का, आत्माओं के घर का, विश्व-नाटक का, कर्म का, आदि-आदि का यथार्थ ज्ञान देते हैं और आत्मा का सम्बन्ध अपने साथ जुटाते हैं तो आत्मा की वह सोई हुई अर्थात् मर्ज शक्ति पुन: जाग्रत अर्थात् इमर्ज होती है, जिससे आत्मा स्वयं को शक्तिशाली अनुभव करती है अर्थात् आत्मा का अपनी कर्मेन्द्रियों पर शासन होता है, आत्मा सुख की अनुभूति करती है।

''ऑलमाइटी बाप है ना। बाप बच्चों को वर्से में कितनी ताकत देते हैं, जो सारा आसमान, धरती आदि सब हमारे हो जाते हैं। ... तो ऐसे बाप की श्रीमत पर पूरा चलना चाहिए ना। इसमें लिए हर एक को अपना पुरुषार्थ करना है।''

सा.बाबा 15.09.09 रिवा.

''इस ज्ञान में देखो कितनी ताक़त है। ताक़त कहाँ से मिलती है? बाप से ताक़त मिलती है, जिससे तुम पावन बनते हो। ... देवता बनना है तो दैवीगुण भी धारण करने हैं। जिनकी बुद्धि में ज्ञान समझ में आ गया, वे फट से सब आदतें आपही छोड़ देंगे। तुम कहो, न कहो, आपेही छोड़ देंगे।'' सा.बाबा 16.09.09 रिवा.

Q. क्या परमात्मा की याद से आत्मा में शक्ति आती है? यदि आती है तो क्या उस अनुसार परमात्मा की शक्ति घटती है और आत्मा की शक्ति बढ़ती है?

तो फुल-स्टॉप हो जाये, इतना फास्ट पुरुषार्थ करना ही फाइनल पेपर में पास होना है।'' अ.बापदादा 30.11.09

''आज बापदादा देख रहे थे कि सबकी प्रिय और बापदादा की प्रिय सन्तुष्ट आत्मायें कौन-कौन हैं। सन्तुष्ट आत्मा के संकल्प और स्वप्न में भी क्यों-क्या की भाषा नहीं आयेगी क्योंकि वे आत्मा-परमात्म-ड्रामा तीन बिन्दियाँ समय पर कार्य में लगा सकते हैं।'' अ.बापदादा 30.11.09

''सन्तुष्ट आत्मा का वायुमण्डल में भी प्रभाव पड़ता है और सर्व प्राप्तियाँ हैं परमात्मा की देन। परमात्म बाप द्वारा सर्व शक्तियाँ, सर्व गुण, सर्व खज़ाने प्राप्त की हुई आत्मा सदा सन्तुष्ट रहती है। सन्तुष्ट आत्मा की स्थिति सदा प्रगतिशील रहती है।'' अ.बापदादा 30.11.09

साइलेन्स की शक्ति अर्थात् योगबल और भारत एवं धर्म

धर्म का वास्तविक अर्थ है आत्मिक गुणो और शक्तियों की धारणा। जब आत्मा में इन गुणों और शक्तियों की धारणा होती है तब आत्मा में आत्मिक शक्ति होती है, जिससे उसकी शुभ कार्यों में प्रवृत्ति होती है और वह शुभ कार्य करने में समर्थ होती है। जब आत्मा की ये शक्ति क्षीण हो जाती है तो आत्मा देहाभिमान के वश होकर अपनी शक्ति का प्रयोग अशुभ कार्यों में करती है और उसके फलस्वरूप दुख-अशान्ति का अनुभव करती है। फिर जब संगमयुग पर परमात्मा का अवतरण होता है, तब आत्मायें परमात्मा के साथ योगयुक्त होकर अपनी सुसुप्त शक्ति को जागृत करती हैं, अपने गुणों और शक्तियों का अनुभव करती हैं, आत्मा श्रेष्ठ कार्य करने में समर्थ होती है। भारत को ड्रामा अनुसार विश्व पर राज्य करने की ये शक्ति परमात्मा से वरदान रूप में प्राप्त होती है।

परमात्मा भारत में ही अवतरित होकर आत्माओं को ये ज्ञान देते हैं और राजयोग सिखाते हैं, जिससे भारत स्वर्ग बनता है और पतित विश्व अर्थात् नर्क का विनाश होता है। विनाश के बाद भारत ही रहता है, इसलिए भारत में ही स्वर्ग

शक्तियों में कुछ शक्तियों का उपयोग संगमयुग पर विश्व के नव-निर्माण में विशेष होता है और बाद में कम होता है। उनमें से कुछ शक्तियों का सारे कल्प उपयोग होता है। जब आत्मा अपनी आत्मिक शक्ति का उपयोग दैवी गुणों के साथ करती है तो सुख पाती है। समयान्तर में विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार आत्मा पर प्रकृति की शक्ति का प्रभाव बढ़ जाता है, जिससे आत्मा अपनी शक्ति का उपयोग आसुरी गुणों से युक्त कार्यों में करने लगती है और उन कर्मों के फलस्वरूप आत्मा दुखी हो जाती है और दुखी होकर साइलेन्स की शक्ति के पॉवर-हाउस परमात्मा को याद करती है। पुरुषोत्तम संगमयुग पर परमात्मा आकर आत्मा को यथार्थ ज्ञान देते हैं, जिससे आत्मा अपनी आत्मिक शक्ति का उपयोग परमात्म-शक्ति के साथ करती है, जिससे उसमें ईश्वरीय गुणों और दैवी गुणों की धारणा होती है, जिससे वह रावण की शक्ति अर्थात देहाभिमान की शक्ति पर विजय प्रापत करती है। देहाभिमान पर विजय पाने से प्रकृति की शक्ति अर्थात् पंच-तत्व पुनः अपने मूल स्वरूप में स्थित होकर विश्व के नव-निर्माण में सहयोगी बनते हैं और आत्माओं को सुख देते हैं।

''परिस्थिति सन्तुष्ट आत्मा के ऊपर प्रभाव नहीं डाल सकती है क्योंकि जहाँ सन्तुष्टता है, वहाँ सर्व शक्तियाँ सर्व गुण स्वतः ही आते हैं। ... सन्तुष्ट आत्मा सदा सर्व के, बाप के समीप और समान स्थिति में रहती है। लेकिन इस स्थिति में रहने के लिए साक्षी दृष्टा और त्रिकालदर्शी अवस्था बहुत चाहिए।''

अ.बापदादा 30.11.09

''देवियों में कोई अष्ट शक्तियाँ धारण करने वाली बनती हैं, कोई उससे अधिक और कोई उससे कम। ... हर एक ने कितनी शक्तियों की धारणा की हैं, वह बापदादा देख रहे हैं। मास्टर सर्वशक्तिवान कहलाते हो ना। मास्टर सर्वशक्तिवान अर्थात् सर्व शक्तियों को धारण करने वाले।'' अ.बापदादा 21.7.71

''हर बच्चे की पढ़ाई का फाइनल पेपर का समय अचानक आना है, इसके लिए सदा एवर-रेडी। ... क्या करूँ - यह सोचने का भी समय नहीं मिलेगा। फुलस्टॉप

यदि परमात्मा की शक्ति घटती नहीं है तो आत्मा की शक्ति कैसे बढ़ती है, उसका क्या विधि-विधान है?

आत्मा और परमात्मा दोनों ही अविनाशी हैं, उस अविनाश्यता के सिद्धान्त अनुसार दोनों की शक्तियों में कुछ भी घटती-बढ़ती हो नहीं सकती है। अब प्रश्न है कि आत्मा की शक्ति बढ़ने का आशय क्या है और उसका विधि-विधान क्या है? इस विश्व-नाटक में आत्मा का सारा खेल स्मृति-विस्मृति के आधार पर चलता है। आत्मा और परमात्मा एक ही वंश के हैं, इसलिए दोनों में ही मूलभूत शक्तियाँ नीहित हैं, जिनमें बहुत-कुछ समानतायें हैं और उनमें कोई शक्ति घटती-बढ़ती नहीं है परन्तु जब आत्मा इस विश्व-नाटक पर पार्ट बजाने आती है तो देह में प्रवेश होने और गर्भ से जन्म लेने के कारण वह अपने वास्तविक स्वरूप को भूल जाती है और वह विस्मृति पार्ट बजाते-बजाते समयान्तर में गहरी होती जाती है और अन्त में आत्मा देहाभिमान के वश हो जाती है, जिससे उसके ऊपर यह प्रकृति अर्थात् देहाभिमान की शक्ति प्रभावित हो जाती है और आत्मा विकर्मों में प्रवृत्त हो जाती है, जिससे आत्मा दुखी-अशान्त होती है। फिर जब समय आता है तब परमात्मा अवतरित होते हैं और आत्मा को अपने स्वरूप और इस विश्व-नाटक का ज्ञान देते हैं और राजयोग सिखाते हैं अर्थात् आत्मा को अपने साथ योगयुक्त होने अर्थात् आत्मा को अपने स्वरूप और परमात्मा के स्वरूप के चिन्तन करने का विधि-विधान बताते हैं तो आत्मा के ऊपर जो विस्मृति का आवरण आ गया है, वह हटता जाता है और आत्मा को अपनी मूलभूत शक्ति का आभास होने लगता है, जिस पुरुषार्थ को करते-करते आत्मा अपने सम्पूर्ण स्वरूप को प्राप्त कर लेती है अर्थात् मास्टर सर्वशक्तिवान बन जाती है और अपने मास्टर सर्वशक्तिवान की स्थिति में स्थित होने से आत्मा को परमानन्द की अनुभूति होती है क्योंकि आत्मा का मूल स्वरूप परमानन्दमय है। ये विधि-विधान प्रायः सर्वात्माओं पर जाने-अन्जाने प्रभावित होता है, जिससे ही आत्मायें पावन बनकर वापस परमधाम घर जाती हैं और पार्ट में आने पर जब दुख-अशान्ति की अनुभूति

करती हैं तब परमात्मा को याद करती हैं।

''यह पुरानी दुनिया बदलकर फिर नई जरूर बननी है। मूलवतन से लेकर सारी दुनिया का नक्शा अभी तुम्हारी बुद्धि में है। तुम जानते हो हम सब आत्मायें स्वीटहोम, शान्तिधाम की निवासी हैं। हम जब सतयुगी नई दुनिया में हैं तो बाकी और सभी आत्मायें शान्तिधाम में रहती हैं। आत्मा कभी विनाश नहीं होती है। आत्मा में जो अविनाशी पार्ट भरा है, वह भी कभी विनाश नहीं हो सकता।''

सा.बाबा 6.10.09 रिवा.

''सब तो एक समान सतोप्रधान नहीं बनेंगे। कल्प पहले मिसल ही सब पुरुषार्थ करेंगे। परम आत्मा का भी ड्रामा में पार्ट नूँधा हुआ है, जो ड्रामा में नूँध है, वह होता रहता है। इसमें कुछ बदल नहीं हो सकता है। रील फिरता ही रहता है। बाप कहते हैं - आगे चलकर तुमको और भी गुह्य-गुह्य बातें सुनायेंगे।''

सा.बाबा 6.10.09 रिवा.

विभिन्न शक्तियाँ और उनका उपयोग

आत्मिक-शक्ति का उपयोग

आत्मिक शक्ति के आधार पर आत्मा सारे कल्प में अपना पार्ट बजाती है। आधे कल्प तक निर्विकारी कार्यों में अपनी शक्ति का उपयोग करके सुख-शान्ति का उपभोग करती है। फिर आधे कल्प बाद विस्मृति के कारण देहाभिमान के वश होकर विकारी कार्यों में प्रवृत्त होकर विकारी कार्यों में अपनी शक्ति का प्रयोग करती है, जिससे जीवन में दुख-अशान्ति को प्राप्त करती है और दुख-अशान्ति से मुक्त होने के लिए भक्ति आदि के कार्यों में अपनी शक्ति का उपयोग करती है। संगमयुग पर परमात्मा के साथ योगयुक्त होकर विश्व के नव-निर्माण में अपनी शक्ति का उपयोग करती है।

''ज्ञानी-योगी आत्मायें बने हो लेकिन अब ज्ञान और योग की शक्ति को प्रयोग में लाने वाले प्रयोगशाली आत्मायें बनो। ... साइन्स की शक्ति के प्रयोग का आधार लाइट अर्थात् शक्ति। ऐसे ही साइलेन्स की शक्ति के प्रयोग का आधार

''बाप ने यह भी बताया है कि यह युद्ध का मैदान है। पावन बनने में टाइम लगता है। ऐसे नहीं कि जो शुरू में आये हैं, वे पूरे पावन बन गये हैं। माया से लड़ाई जोर से चलती है, अच्छों-अच्छों को भी माया जीत लेती है। ... मूर्छित हो जाते हैं, फिर जब मुरली पढ़ें, तब सुजाग हों।'' सा.बाबा 28.11.09 रिवा.

''माया तंग करती है, फिर भी कोशिश कर बाप के साथ लिंक जोड़नी चाहिए। नहीं तो बैटरी कैसे चार्ज होगी। विकर्म होने से बैटरी डिस्चार्ज हो जाती है। ... बाप तुमको बेहद का वैराग्य दिलाते हैं। सारी पुरानी दुनिया से वैराग्य। बुद्धियोग एक बाप के साथ ही होना चाहिए।'' सा.बाबा 23.11.09 रिवा.

''वेस्ट थॉट्स की रफ्तार तीव्र होती है ... ऐसे समय पर तीन बिन्दियाँ सन्तुष्ट आत्मा ही लगा सकती है क्योंकि ऐसे समय पर शक्तियों का खज़ाना आवश्यक है। मास्टर सर्वशक्तिवान वह है जो जिस समय जिस शक्ति को आर्डर करे, वह हाज़िर हो जाये। ... सर्व खज़ानों की चाबी है तीन बिन्दियाँ अर्थात् आप, बाप और ड्रामा'' अ.बापदादा 30.11.09

आत्मिक शक्ति, अष्ट-शक्तियाँ और गुण

योगबल, आत्मिक बल और अष्ट शक्तियाँ एवं गुण

बाबा ने भी कहा है कि शक्तियाँ तो बहुत हैं परन्तु समझने और समझाने के लिए अष्ट शक्तियों का नाम लिया जाता है। ये सब शक्तियाँ एक ही आत्मिक-शक्ति का समय, कर्तव्य, गुण-धर्म के आधार पर अलग-अलग नामकरण किया जाता है। पुरुषोत्तम संगमयुग पर जब आत्मिक-शक्ति परमात्म-शक्ति के साथ होती है तो ये सब शक्तियाँ यथार्थ रीति काम करती हैं, और तो सारे कल्प आत्मिक शक्ति के ह्रास के साथ ये शक्तियाँ भी तमोप्रधानता की ओर बढ़ती जाती हैं।

आत्मिक शक्ति तो आत्मा के परमधाम से इस धरा पर पार्ट बजाने के लिए आने और अपना पार्ट पूरा करके परमधाम जाने तक चलता है। अष्ट

वाचा से भी आत्मिक शक्ति का ह्रास होता है परन्तु संकल्पों की अपेक्षा कम होता है। वाचा में आवश्यक वाचा, व्यर्थ वाचा, धीरे बोलने, जोर से बोलने में आत्मिक शक्ति का ह्रास अपेक्षाकृत अधिक होता है। जब व्यक्ति किसी के अहित की वाचा बोलता है तो आत्मिक शक्ति का ह्रास और अधिक होता है।

कर्म से भी आत्मिक शक्ति का ह्रास होता है परन्तु संकल्प और वाचा की अपेक्षाकृत कम होता है। कर्म में भी आवश्यक, अनावश्यक, किसी के अकल्याण के कर्म करते हैं तो आत्मिक शक्ति का ह्रास अपेक्षाकृत अधिक होता है। विकारों के वशीभूत होने से आत्मिक शक्ति बहुत तीव्रता से ह्रासित होती है परन्तु काम विकार में प्रवृत्त होने या उसके विषय में चिन्तन से आत्मिक शक्ति के ह्रास की गति सबसे अधिक तीव्र होती है।

परन्तु ये बात ध्यान में रखना अति आवश्यक है कि जब हम अपने संकल्प को, अपनी वाचा को, कर्म को ईश्वरीय आज्ञानुसार ईश्वरीय कार्यों में लगाते हैं तो उसमें आत्मिक शक्ति का बहुत कम होता है परन्तु विकास अधिक होता है, इसलिए कहेंगे कि उससे आत्मिक शक्ति का ह्रास न होकर उसमें, विकास ही होता है। इसलिए मन्सा, वाचा, कर्मणा आत्मिक शक्ति का ह्रास भी होता है तो विकास भी होता है।

''काम विकार से आत्मा की ताक़त कम हो जाती है। इस काम विकार ने तुम्हारी ताक़त बिल्कुल खत्म कर दी है। ... पहले तुम 16 कला सम्पूर्ण थे, फिर कलायें कम होते-होते एकदम नो कला हो जाते हैं।'' सा.बाबा 17.10.09 रिवा.

''फुल-स्टॉप तो फुल-स्टॉप हो जाये। कॉमा भी नहीं। ... वेस्ट थॉट्स की रफ्तार तीव्र होती है। जो साधारण संकल्प का एक घण्टा और फास्ट संकल्प (वेस्ट थॉट्स) का एक मिनट (दोनों में बराबर शक्ति जाती है)। ... सन्तुष्ट आत्मा के संकल्प में यह क्यों, क्या की भाषा स्वप्न में भी नहीं आयेगी क्योंकि उसको तीन विशेष बातें अर्थात् तीन बिन्दियों को अर्थात् आत्मा-परमात्मा-ड्रामा को समय पर कार्य में लगा सकते हैं।'' अ.बापदादा 30.11.09

भी लाइट ही है। ... आपकी अविनाशी परमात्म-लाइट, आत्मिक-लाइट और साथ-साथ प्रैक्टिकल स्थिति भी लाइट।'' अ.बापदादा 01.02.94

''कोई भी शक्ति, ज्ञान, गुण, योग का प्रयोग करते हो तो मूल आधार को चेक करो अर्थात् आत्मिक शक्ति, परमात्म शक्ति लाइट (हल्की और प्रकाशमय) है? अगर स्थिति डबल लाइट है तो प्रयोग की सफलता बहुत सहज कर सकते हो।'' अ.बापदादा 01.02.94

''जब मन-बुद्धि इस प्रयोग में बिजी रहेगी तो जो और छोटी-छोटी बातों में समय लगाते हो, शक्तियाँ लगाते हो, उनकी बचत हो जायेगी। इस प्रयोग में बिजी रहने से सहज ही अन्तर्मुखता की स्थिति अपनी तरफ आकर्षित करेगी। क्योंकि कोई भी चीज का प्रयोग और प्रयोग की सफलता स्वत: ही और सब तरफ से किनारा करा देती है।'' अ.बापदादा 01.02.94

''फाइनल स्टेज है योग की सिद्धि प्राप्त करना अर्थात् कर्म की सिद्धि प्राप्त करना। इसके लिए कौनसी मुख्य पॉवर धारण करना है? ... उसमें भी कन्ट्रोलिंग पॉवर विशेष चाहिए। अगर कन्ट्रोलिंग पॉवर नहीं है तो व्यर्थ मिक्स होने के कारण सिद्धि प्राप्त नहीं होती है।'' अ.बापदादा 30.07.70

''अगर यथार्थ संकल्पों की उत्पत्ति हो, यथार्थ वाणी निकले, यथार्थ कर्म हो तो हो नहीं सकता कि सिद्ध न हो। ... यथार्थ की सिद्धि अवश्य होती है, व्यर्थ की नहीं होती है। व्यर्थ को कन्ट्रोल किया जाता है, उसके लिए चाहिए कन्ट्रोलिंग पॉवर।'' अ.बापदादा 30.07.70

''कोई भी स्लोगन को स्मृति में रखना, यह तो एक साधन है लेकिन साधन का स्वरूप बनना ही है। ... एकमत के लिए ऐसा वातावरण बनाना है। वातावरण तब बनेंगा, जब समाने की शक्ति होगी। ... भिन्नता होगी, लेकिन उसको समाने की शक्ति चाहिए।'' (स्लोगन को स्मृति में रखने से सिद्धि नहीं मिलेगी लेकिन स्लोगन का स्वरूप बनने से सिद्धि मिलेगी) अ.बापदादा 30.07.70

''दिन प्रतिदन अपनी सर्विस से अपने सहयोगीपन से और अपने संस्कारों को मिटाने की शक्ति से अपने अन्तिम और भविष्य को जान जायेंगे। ... जिनको जितना समीप आना है, वह सरकमस्टांसेस अनुसार भी इतना समीप आयेंगे, जिनको कुछ दूर होना है तो सरकमस्टांसेस भी बीच में निमित्त बन जायेंगे, जो चाहते हुए भी आ नहीं सकेंगे।'' अ.बापदादा 26.1.70

''जैसे साकार रूप में प्रत्यक्ष अनुभव किया ना। ... भविष्य के संस्कार इस स्वरूप में प्रत्यक्ष दिखाई देते थे। तो आप सभी भी ऐसे अनुभव करेंगे जैसे कि बस यह शरीर छोड़ा और वह तैयार है। बुद्धिबल द्वारा इतना स्पष्ट अनुभव होगा।'' अ.बापदादा 26.1.70

परमात्म-शक्ति का उपयोग

परमात्मा संगमयुग पर ब्रह्मा तन में आकर ब्रह्मा तन द्वारा आत्माओं को आत्मा, परमात्मा, विश्व-नाटक्, त्रिलोक, कल्प-वृक्ष आदि का यथार्थ ज्ञान देकर आत्माओं को उनके वास्तविक स्वरूप का अनुभव कराते हैं, आत्माओं को अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कराते हैं और उनको सच्ची शान्ति और अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कराकर नये विश्व का नव-निर्माण करने की प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रेरणा देते हैं अर्थात् मुख से महावाक्य उच्चारते हुए भी श्रीमत देते हैं और अप्रत्यक्ष रूप से भी प्रेरित करते हैं।

योग-शक्ति का उपयोग

योग-शक्ति अर्थात साइलेन्स की शक्ति के विभिन्न उपयोग परमात्मा ने बताये हैं। यथा साइलेन्स की शक्ति से आत्मा श्रेष्ठ कर्म करने में समर्थ होती है, साइलेन्स की शक्ति से आत्मा एक स्थान पर बैठकर भी दूर बैठी आत्मा को उसके स्वरूप का अनुभव करा सकती है, उसको परमात्मा की ओर प्रेरित कर सकती है, सेवाकेन्द्र की राह बता सकती है, साइलेन्स की शक्ति से आत्मा

किया है तो बाप भी सर्व शक्तियों को विल कर देते हैं। जब सर्वशक्तिवान बाप साथी बन गये और सर्व शक्तियाँ साथी बन गई तो फिर सदा विजय ही विजय है। ... भक्ति मार्ग में केवल कहते हैं और ज्ञान मार्ग में किया है। करने से शक्ति आती है।'' अ.बापदादा 8.06.71

आत्मिक शक्ति का ह्रास और उसके कारण

आत्मा इस धरा पर पार्ट बजाने के लिए आती है तो इस प्रकृति के सम्पर्क में आने से, उन साधनों को जो उपभोग करती है, उससे ही आत्मिक शक्ति का ह्रास आरम्भ हो जाता है। इसके कारण ही सतयुग आदि से त्रेता के अन्त तक आत्मा की शक्ति की चार कलायें कम हो जाती है। सतयुग-त्रेता में आत्मा, आत्माभिमानी होने के कारण साधन और सत्ता का न्यूनतम अर्थात् आवश्यकतानुसार ही उपयोग करती है, इसलिए आत्मिक शक्ति का ह्रास न्यूनतम होता है अर्थात् दो युगों में आत्मिक शक्ति का 25 प्रतिशत ह्रास होता है। परन्तु द्वापर से देहाभिमान के कारण साधन-सत्ता का अनावश्यक उपभोग करने और विकारों के वशीभूत होकर कर्म करने से आत्मिक शक्ति का ह्रास तीव्रता से होता है और दो युगों में आत्मिक शक्ति की 12 कलायें अर्थात् 75 प्रतिशत शक्ति का ह्रास होता है।

आत्मिक शक्ति का ह्रास सबसे अधिक मन्सा संकल्पों के द्वारा होता है। सतयुग-त्रेता में संकल्प बहुत कम होते हैं, इसलिए शक्ति का ह्रास बहुत कम होता है। द्वापर से विकारों के वशीभूत संकल्पों की गति बढ़ जाती है, जिससे अपेक्षाकृत शक्ति का अधिक ह्रास होता है। विकारों के वशीभूत विकल्पों के कारण आत्मिक शक्ति का ह्रास और तीव्रता से होता है। विकल्पों की गति संकल्पों की गति से बहुत तीव्र होती है। जब आत्मा किसी अन्य आत्मा के प्रति बुरा सोचता है तो उसकी आत्मिक शक्ति का ह्रास अपेक्षाकृत अधिक तीव्रता से होता है।

आती है, बाप से मिले खजानों की शक्ति भी शक्ति होती है।

''जैसे यह बाबा सीखते हैं, इनको देखकर तुम बच्चे भी सीखते हो। कदम-कदम पर सावधानी रखनी होती है।... बाप की याद में ही करामात है। इस करामात से ही तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनते हो।''

सा.बाबा 8.12.09 रिवा.

''हर एक को अपने दीपक की आपही सम्भाल करनी है। अन्त तक पुरुषार्थ चलना ही है। ... रोज़ दीपक में योग और ज्ञान का घृत डालना पड़ता है। योगबल की ताक़त नहीं है तो दौड़ नहीं सकते हैं। ... स्थूल सेवा की सब्जेक्ट भी बहुत अच्छी है, बहुतों की आशीर्वाद मिलती है। कोई बच्चे ज्ञान की सर्विस करते हैं। दिन प्रतिदिन सर्विस की वृद्धि होती जायेगी।''

सा.बाबा 9.12.09 रिवा.

''मैं हूँ पतित-पावन। मुझे याद करने से ही तुम्हारी बैटरी जो खाली हो गई है, वह भरपूर हो जायेगी। ... ज्ञान से ही सद्गति होती है। ज्ञान एक बाप ही आकर देते हैं। यह सारी झूठी दुनिया है। इसमें पापात्माओं की पापात्माओं से ही लेनदेन होती है।''

सा.बाबा 7.12.09 रिवा.

''जब चाहें तब आवाज में आयें और जब चाहें तब आवाज से परे हो जायें, ऐसे सहज अभ्यासी बने हो ? यह पाठ पक्का किया है ? ... पास विद् ऑनर बनना है।''

अ.बापदादा 5.12.70

''वरदान बीज है ... वरदान से फल निकालने के लिए उसको पानी और धूप चाहिए। ... बार-बार सुमिरण नहीं लेकिन स्मृति (नेचुरल स्मृति), यह है पानी देना और स्वरूप में स्थित होना यह है धूप लगाना। बीज के फलीभूत होने से स्वयं में भी बहुत शक्ति भरती है और दूसरे को भी उस फल द्वारा शक्ति का अनुभव करा सकते हैं।''

अ.बापदादा 30.11.09

''विल करने से विल पॉवर आती है। अपनी विल पॉवर से हर एक समझ सकता है कि हमने तन-मन-धन-जन सर्वशक्तियों को विल किया है! विल

अपने कर्मभोग पर विजय प्राप्त कर सकती है और अन्य आत्माओं को भी उनके कर्मभोग को चुक्ता करने में सहयोग कर सकती है। साइलेन्स की शक्ति से ही आत्मा स्वयं को, अन्य आत्माओं को और जड़ तत्वों सहित जड़-जंगम प्रकृति को पावन बनाती है। अन्य आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश देने में भी साइलेन्स की शक्ति सहज सफलता का अनुभव कराती है।

आत्मिक शक्ति के द्वारा आत्मा सामने वाली आत्मा या दूर बैठी आत्मा के मन के भावों को जान सकती है और उन भावों को परिवर्तन भी कर सकती है।

साइलेन्स की शक्ति वैज्ञानिकों को प्रेरित करके नये विश्व के नव-निर्माण का कार्य करती है।

इसके अतिरिक्त विभिन्न भौतिक कार्यों में भी साइलेन्स की शक्ति आत्मा को सहयोग करती है।

इस प्रकार हम देखते हैं तो योग-शक्ति अर्थात् आत्मा के परमात्मा के साथ योगयुक्त होने से उत्पन्न योगबल से आत्मायें स्वयं को पावन बनाने का, अन्य आत्माओं को परमात्मा का ज्ञान देने का, प्रकृति को पावन बनाने का, वैज्ञानिकों को विश्व के नव-निर्माण के लिए प्रेरिम करने आदि का काम करती हैं।

विश्व-नाटक की अनादि-अविनाशी अद्भुत शक्ति का उपयोग

विश्व-नाटक की शक्ति आत्मा, परमात्मा, प्रकृति सभी को अपना-अपना पार्ट बजाने के लिए प्रेरित करती है, जिसके आधार पर हर एक अपने निश्चित समय पर अपना पार्ट बजाता है।

साइन्स-शक्ति का उपयोग

साइन्स-शक्ति का उपयोग विशेषकर नये विश्व का नव-निर्माण करने में और पुराने विश्व का विनाश करने में होता है। साइन्स की शक्ति अनेक कार्यों के द्वारा

कलियुग में अन्त में आत्माओं को कुछ राहत देती है, जो तो हम सभी देखते ही हैं।

''अभी तुम बच्चे जानते हो हू-ब-हू कल्प पहले जैसे मकान बनाया था, फिर वैसे ही बनायेंगे। वहाँ भी यह साइन्स बहुत काम आती है परन्तु वहाँ साइन्स अक्षर नहीं होगा। ... ज्ञान से हमको रतन मिलते हैं और योग से हम एवरहेल्दी बनते हैं।'' सा.बाबा 9.12.09 रिवा.

प्रकृति की शक्ति ... (Cosmic Energy) का उपयोग

प्रकृति की शक्ति आत्माओं को उनके कर्मों के अनुसार फल देती है अर्थात् सतयुग-त्रेता में संगमयुग पर किये गये श्रेष्ठ कर्मों के आधार पर सुख देती है और द्वापर-कलियुग में सुख और दुख दोनों उनके कर्मों अनुसार देती है। कल्पान्त में पुराने विश्व को विनाश करने और उसकी सफाई करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

वास्तविकता पर विचार करें तो आत्मा और प्रकृति के सहयोग से ही यह सारा विश्व-नाटक चलता है। बिना प्रकृति के सहयोग के आत्मा कोई कर्म नहीं कर सकती है और आत्माओं के बिना प्रकृति का कोई महत्व नहीं है। दोनों के सहयोग से ही इस विश्व-नाटक का अस्तित्व है।

साइलेन्स की शक्ति का उपयोग और स्व-कल्याण एवं विश्व-कल्याण

इस साइलेन्स की शक्ति अर्थात् योग-बल के उपयोग से ही आत्मा का अपना और समग्र विश्व का कल्याण होता है, जिसका विधि-विधान ज्ञान सागर परमात्मा बताते हैं।

''अभी तुम्हारा दैवी करेक्टर बन रहा है। पाँच विकारों से आसुरी करेक्टर हो जाता है।... एक बाप में ही यह ताक़त है जो आसुरी करेक्टर्स को चेन्ज कर दैवी

जाती है। फिर बाबा आकर भरपूर करते हैं।''

सा.बाबा 21.10.09 रिवा.

''यह पढ़ाई पढ़कर तुम 21 जन्मों के लिए सच्ची कमाई करते हो। ... दोनों हाथ से ताली बजेगी। बाप कहते हैं - तुम मुझे याद करो तो तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म हो जायें। ... इस पढ़ाई से हमको कितनी माइट मिलती है, हम देवी-देवता बन जाते हैं। देवी-देवता धर्म के लिए कहा जाता है - रिलीजन इज़ माइट।'' सा.बाबा 21.10.09 रिवा.

''तुमको दूसरी बातों का चिन्तन न करके, अपनी उन्नति के लिए अपनी बैटरी चार्ज करनी है। ... लक्ष्मी-नारायण, राम-सीता भी जरूर यहाँ ही पढ़ते होंगे, अपनी बैटरी चार्ज करते होंगे। तुमको अपनी बैटरी चार्ज करनी है। कहा जाता है - अपनी घोट तो नशा चढ़े।'' सा.बाबा 29.09.09 रिवा.

''बाप डायरेक्शन देते हैं कि ऐसे याद करने से आत्मा को शक्ति मिलेगी। जैसे वैटरी चार्ज करते हैं। ... अब सर्वशक्तिवान बाप से बुद्धियोग लगाने से फिर तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे, बैटरी चार्ज हो जायेगी।''

सा.बाबा 4.07.09 रिवा.

''सम्पूर्ण समर्पण अर्थात् जो भी माया का बल है, वह सभी कुछ त्यागना है। माया का बली नहीं बनना है लेकिन ईश्वरीय शक्ति में बलवान बनना है। ... मन-वचन-कर्म तीन बातें हैं, जिनमें सम्पूर्ण समर्पण हो जाता है और समर्पण वाली आत्मा को ईश्वरीय बल मिलता है। एक तो देह सहित सभी सम्बन्धों का त्यागकर मामेकम् याद करो। ... मुख से सदैव रतन निकलें ... और कर्मणा के लिए सदा याद रहे कि जो कर्म मैं करूँगा, मुझे देख और सभी करेंगे तथा हम जो करेंगे सो पायेंगे।'' अ.बापदादा 28.11.69

- स्वयं में स्वयं का विश्वास से भी आत्मिक शक्ति आती है, बाबा को याद करने से बाबा की शक्ति से भी आत्मा में शक्ति आती है, परिवार के प्यार और उनकी शुभभावना-शुभकामना से भी आत्मिक शक्ति का विकास होता है अर्थात् हिम्मत

श्रीमत का पूरा-पूरा पालन, योग का सतत अभ्यास, सेवा में अभिरुचि अति आवश्यक है।

हमारे इस संगमयुगी पुरुषार्थी जीवन का सिम्बल है ब्रह्मा बाबा। ब्रह्मा बाबा ने शिवबाबा की श्रीमत पर अभीष्ठ पुरुषार्थ करके अपनी सम्पूर्ण स्थिति को पाया है और हमको भी उस स्थिति के लिए पुरुषार्थ करना सिखाया है। स्थिति में हमको शिवबाबा के समान बनने का लक्ष्य रखना है और पुरुषार्थ में ब्रह्मा बाबा को फॉलो करना है अर्थात् उनके समान पुरुषार्थ करेंगे, जिससे हमारी आत्मिक शक्ति बढ़ेगी, जिससे हम शिवबाबा के समान स्थिति बनाकर शिवबाबा के साथ घर वापस जा सकेंगे। आत्मिक शक्ति को बढ़ाने के पुरुषार्थ का अभी ही समय है।

ये सारे कार्य आत्मा संगमयुग पर ही करती है, इसलिए संगमयुग को आत्मिक शक्ति अर्थात् साइलेन्स की शक्ति का युग कहा जायेगा।

''तुम एकान्त में बैठकर अच्छी रीति विचार करेंगे तो फील होगा कि मेरी आत्मा में कितना किचड़ा भरा हुआ है। ... अभी बाप की याद में रहने से ही आत्मा का किचड़ा निकलता है। इसमें भी टाइम लगता है। ... ये बातें समझने वाले भी बहुत थोड़े बच्चे हैं ... तुमको तो सब खामियाँ निकाल बिल्कुल पवित्र बनना है।'' सा.बाबा 23.10.09 रिवा.

''बाप समझाते हैं - तुमने मुझे बुलाया ही है आत्मा को शुद्ध बनाने के लिए। ... अभी तुम जानते हो हमारी आत्मा में कैसे किचड़ा भरता गया है। पहले 2 कला कम हुई, फिर 4 कला कम हुई, आत्मा में देहाभिमान का किचड़ा भरता गया। ... फिर विकारों का किचड़ा पड़ते-पड़ते आत्मा तमोप्रधान बन गई है।''

सा.बाबा 23.10.09 रिवा.

''अभी तुम जानते हो हमने सतयुग से लेकर सुख और दुख का पार्ट बजाया है। अभी हमारा दुख का पार्ट पूरा होता है। ... अब फिर तुमको आधा कल्प सुख का पार्ट बजाना है। इस ज्ञान से तुम्हारी आत्मा भरपूर हो जाती है, फिर खाली हो

करेक्टर्स बनाते हैं। ... अन्दर में आना चाहिए कि बाप हमारा कल्याण कर रहे हैं हम फिर बहुतों का कल्याण करें। मनुष्य बहुत दुखी हैं, उनको सुख का रास्ता बतायें। समझाने के लिए कितनी मेहनत करनी होती है, गाली भी खानी पड़ती हैं।'' सा.बाबा 6.11.09 रिवा.

''देही-अभिमानी बनकर विचार करना होता है कि आज हमको फलाने प्राइम-मिनिस्टर को जाकर समझाना है। उनको बाबा को याद कर दृष्टि दे तो उनको साक्षात्कार हो सकता है। ... अगर देही-अभिमानी होकर रहो तो तुम्हारी बैटरी भरती जायेगी। देही-अभिमानी होकर बैठे और अपने को आत्मा समझ बाप से योग लगाये तो बैटरी भर सकती है।'' सा.बाबा 5.11.09 रिवा.

साइलेन्स की शक्ति अर्थात् योगबल एवं आत्मिक शक्ति के ह्रास-विकास का विधि-विधान और सिद्धान्त / साइलेन्स की शक्ति अर्थात् आत्मिक शक्ति के ह्रास-विकास और त्रिलोक

साइलेन्स की शक्ति का इस विश्व-नाटक के सफलतापूर्वक संचालन में महत्वपूर्ण स्थान है, इसलिए इसके विकास, ह्रास और उपयोग का क्या विधि-विधान है, उसको भी जानना अति आवश्यक है। उसको जानने से ही हम अपनी आत्मिक शक्ति का विकास कर सकेंगे, जिससे हमारा ये संगमयुगी जीवन सुखमय होगा और भविष्य उज्ज्वल होगा।

परमधाम आत्माओं का विश्राम-गृह है, साइलेन्स धाम है अर्थात् वहाँ आत्माओं का कोई पार्ट नहीं चलता है, इसलिए वहाँ न आत्मिक शक्ति का ह्रास होता है और न ही विकास होता है। आत्मिक शक्ति ह्रास और विकास इस साकार लोक में ही होता है, जब आत्मायें शरीर लेकर पार्ट बजाती हैं। परमात्मा सदा ही परमधाम में रहते हैं, इसलिए उनकी शक्ति के ह्रास-विकास का कोई

प्रश्न नहीं उठता है। वे संगमयुग पर ब्रह्मा तन में आते भी परमधाम में ही रहते हैं क्योंकि ब्रह्मा बाबा का तन वे अस्थाई रूप में लेते हैं और उस शरीर से पार्ट बजाते भी वे परमधाम की स्थिति में ही रहते हैं और परमधाम आते-जाते रहते हैं। उनमें ये विशेष शक्ति है, इसलिए ही वे परमात्मा कहलाते हैं। इसके लिए बाबा ने कई बार मुरलियों में कहा है कि जब मोटर चलती है, तब बैटरी डिस्चार्ज होती है। मोटर खड़ी है तो बैटरी डिस्चार्ज नहीं होती है। यहाँ स्थूल बैटरी तो मोटर खड़ी होते भी समयान्तर में डिस्चार्ज हो जाती है या खराब हो जाती है परन्तु आत्मा अविनाशी है, इसलिए परमधाम में रहते उसमें ये परिवर्तन नहीं होता है। परमधाम में रहते आत्माओं की शक्ति का न ह्रास होता है और न ही विकास होता है। आत्मिक शक्ति का ह्रास और विकास इस साकार लोक में ही होता है। सूक्ष्मवतन में रहते जो सूक्ष्म शरीर से कर्म करते हैं, उसका भी आत्मिक शक्ति पर प्रभाव पड़ता है क्योंकि सूक्ष्म शरीर से जो कर्म किया जाता है, उसका भी हिसाब-किताब होता है। ब्रह्मा बाबा के लिए सन्देशियों का अनुभव है कि जब साकार बाबा अव्यक्त हुये, तब उनको सूक्ष्मवतन में देखते थे और अब देखते हैं तो बहुत परिवर्तन है, उनकी लाइट-माइट पहले से अभी अधिक है।

आत्मायें मन्सा-वाचा-कर्मणा जो पार्ट बजाती हैं, प्रकृति के साधनों और सत्ता का जो उपभोग करती हैं, उससे आत्मिक शक्ति का ह्रास होता है। स्वर्ग में आत्मिक शक्ति का ह्रास बहुत कम होता है क्योंकि वहाँ आत्मायें आत्मिक शक्ति का बहुत कम उपयोग करती हैं। द्वापर-कलियुग में देहाभिमान के कारण प्रकृति के साधनों का अनावश्यक उपयोग और देहाभिमान के वशीभूत विकारों में प्रवृत्त होने के कारण अनेक ऐसे कर्म करती हैं, जिससे आत्मिक शक्ति का तीव्रता से ह्रास होता है।

संगमयुग पर आत्मिक शक्ति का ह्रास-विकास दोनों होता है परन्तु परमात्मा से यथार्थ ज्ञान मिलने और परमात्मा के साथ योगयुक्त होने अर्थात आत्मिक शक्ति के पॉवर-हाउस परमात्मा से योगयुक्त होने के आत्मिक शक्ति

चिन्तन, स्व-कर्म का चिन्तन करने से आत्मिक शक्ति का विकास होता है। परमात्म-चिन्तन अर्थात् परमात्मा के गुणों, शक्तियों का चिन्तन करने से आत्मिक शक्ति का विकास होता है।

विश्व-नाटक का चिन्तन अर्थात् उसके गुण-धर्मों, विधि-विधानों का चिन्तन करने से आत्मिक शक्ति का विकास होता है। इसलिए बाबा सदा ही कहते हैं कि तुम्हारा स्वदर्शन चक्र सदा ही चलता रहना चाहिए।

परमात्मा की याद में आत्मा जो कर्म करती है, उससे आत्मिक शक्ति का विकास होता है। आत्मा अन्य आत्माओं के कल्याणार्थ जो कर्म करती है, तो आत्माओं की दुआयें मिलती हैं और वे दुआयें आत्मिक शक्ति का विकास करती हैं।

आत्मा जब अपनी शक्ति को परमात्मा की शक्ति के साथ शुभ कार्यों में लगाती है, तो आत्मा की शक्ति का विकास होता है। परमात्मा की स्मृति के साथ जब आत्मा अन्य आत्माओं की सेवा करती है तो उनकी दुआयें सेवा करने वाली आत्मा को मिलती हैं, जिससे उसकी आत्मिक शक्ति बढ़ती है, उसमें और कार्य करने का उमंग-उत्साह रहता है। इसलिए बाबा ने कहा है कि दुआओं से आत्मा का जमा का खाता बढ़ता है।

आत्मिक शक्ति का विकास और योग-शक्ति दोनों अलग-अलग हैं और दोनों के विकास का क्या विधि-विधान है, वह विचारणीय विषय है क्योंकि योगशक्ति संगमयुग पर ही होती है और संगमयुग पर ही अपना काम करती है, जबकि आत्मिक शक्ति और विश्व-नाटक की साइलेन्स शक्ति सारे कल्प काम करती है।

आत्मिक शक्ति का विकास तो योगबल के आधार पर होता ही है परन्तु योगशक्ति के विकास के लिए बाबा के द्वारा दिये गये ज्ञान का मनन-चिन्तन करके उसकी अच्छी समझ और अनुभव करना और साकार में आये परमात्मा के प्रति तन-मन-धन-जन से समर्पित होकर, उनके साथ प्रगाढ़ स्नेह,

कुछ न कुछ बैटरी कम होती जाती है। मूलवतन में तो हैं ही आत्मायें, शरीर तो है नहीं। तो बैटरी कम होने की बात ही नहीं।'' सा.बाबा 7.08.09 रिवा.

''सूक्ष्म वतन में ब्रह्मा का साक्षात्कार होता है, तुम भी ऐसे सूक्ष्म वतनवासी बनो। मूवी की प्रैक्टिस करनी है। धीरे से बहुत कम बोलना है, मीठा बोलना है। ऐसा पुरुषार्थ करते-करते तुम शान्ति के टॉवर बन जायेंगे। तुमको सिखलाने वाला बाप है। तुमको सीखकर फिर औरों को भी सिखलाना है।''

सा.बाबा 3.12.09 रिवा.

''शुद्ध शान्त होने से संकल्प की क्वालिटी बढ़ जाती है ... और संकल्प वही आता है, जो होने वाला होता है अर्थात् जिसकी सफलता होने वाली होती है। संकल्प ही आत्मा को ऊंचा चढ़ाता है और संकल्प ही नीचे गिराता है।''

दादी जानकी 31.05.09

''सारा दिन इस पढ़ाई के चिन्तन में रहना चाहिए। ... तुमने यह पुरुषार्थ किया है, तब तो यह माला बनी है। कल्प-कल्प बनती रहती है।''

सा.बाबा 1.04.09 रिवा.

आत्मिक शक्ति का विकास और उसके साधन एवं साधना

आत्मिक शक्ति के विकास के लिए पुरुषार्थ

आत्मिक शक्ति की वृद्धि के तीन मुख्य साधन है, जिनका परमात्मा ने अनेक बार वर्णन किया है।

एक तो आत्मिक शक्ति जो हमारे संकल्प, बोल और कर्म से ह्रासित होती है, उसकी एकॉनामी करके उसमें वृद्धि कर सकते हैं।

दूसरे परमात्मा की याद से हम अपनी आत्मिक शक्ति को जमा कर सकते हैं।

तीसरा हम अपनी संचित आत्मिक शक्ति को ईश्वरीय सेवा में, दूसरी आत्माओं के कल्याणार्थ उपयोग करके उसमें वृद्धि कर सकते हैं।

स्व-चिन्तन अर्थात् स्व-स्वरूप का चिन्तन, स्व-देश का चिन्तन, स्व-धर्म का

का ह्रास कम और विकास अधिक होता है, इसलिए आत्मिक शक्ति बढ़ती है और आत्मा की बैटरी भरपूर हो जाती है।

जब परमात्मा ब्रह्मा तन में आते हैं तब योगबल पैदा होता है और आत्माओं को जब ज्ञान मिलता है और आत्मायें परमात्मा के साथ योगयुक्त होती हैं, तब योगबल बढ़ता है। आत्माओं का परमात्मा के साथ सम्बन्ध जितना प्रगाढ़ होता है, योगबल उतना ही तीव्रता से बढ़ता है, जिससे आत्मायें और प्रकृति तमोप्रधान से सतोप्रधान बनती जाती है। हम आत्मायें जितना साकार में ब्रह्मा तन में आये परमात्मा के साथ सच्चे रहते हैं, उतना योग अच्छा होता है और उतना ही योगबल अच्छा होता है और जितना हम अन्य आत्माओं का परमात्मा के साथ सम्बन्ध जुटाते जाते हैं, उतना विश्व में योगबल बढ़ता जाता है, जिससे विश्व में सतोप्रधानता बढ़ती जाती है।

जैसा पहले कहा गया है कि योगबल, आत्मिक शक्ति दोनों अलग-अलग हैं और दोनों ही साइलेन्स की शक्तियाँ हैं। योगबल संगमयुग पर ही होता है।

व्यर्थ चिन्तन, अशुभ चिन्तन, पर चिन्तन होना माया का प्रभाव है और इससे आत्मिक शक्ति अधिक ह्रास होता है। पर-दर्शन पर-चिन्तन का मूल है। आत्मिक दृष्टि से शुभ-चिन्तन होता है और स्व-चिन्तन, प्रभु-चिन्तन, ज्ञान के चिन्तन से आत्मिक शक्ति का विकास होता है।

एकान्त, एकाग्रता से स्व-चिन्तन, प्रभु-चिन्तन, ज्ञान-चिन्तन सहयोग होता है, जिससे आत्मिक शक्ति का विकास होता है।

जंगम प्रकृति का सम्पर्क भी आत्म-चिन्तन में सहयोग करता है क्योंकि उससे मन एकाग्र होता है और स्व-चिन्तन, प्रभु-चिन्तन, ज्ञान-चिन्तन में मदद मिलती है, जिससे आत्मिक शक्ति का विकास होता है।

''हर जन्म में सम्बन्ध आदि सब बदल जाता है। तो बाप समझाते हैं कि यह बना-बनाया ड्रामा है। आत्मा 84 पुनर्जन्म लेते-लेते तमोप्रधान बनी है, अब फिर आत्मा को सतोप्रधान बनना है। ... सतयुग में देवता थे, त्रेता में राम के लिए

सेमी देवता कहेंगे क्योंकि दो कलायें कम हो गई।''

सा.बाबा 29.10.09 रिवा.

''यहाँ तुम हर एक को याद के बल से पापात्मा से पुण्यात्मा बनना है। सतयुग में इस शिक्षा की दरकार ही नहीं है। ... सतयुग में न यह ज्ञान और न यह योग ले जाते हो। तुमको पतित से पावन अभी ही बनना है। ... धीरे-धीरे कलायें कम होते-होते लीक रह जाती है। इसमें तुम मूँझो मत।'' सा.बाबा 28.10.09 रिवा.

''धीरे-धीरे कलायें कम होते-होते लीक रह जाती है। इसमें तुम मूँझो मत। पहले तो यह पक्का निश्चय करो कि हम आत्मा हैं। ... देही-अभिमानी बाप ही बना सकते हैं, और कोई भी यह हुनर जानता ही नहीं है। यह एक बाप ही सिखाते हैं। यह दादा भी पुरुषार्थ कर यह सीखते हैं।'' सा.बाबा 28.10.09 रिवा.

''सन्तुष्ट आत्मा का वायुमण्डल में भी प्रभाव पड़ता है और सर्व प्राप्तियाँ हैं परमात्मा की देन। परमात्म बाप द्वारा सर्व शक्तियाँ, सर्व गुण, सर्व खज़ाने प्राप्त की हुई आत्मा सदा सन्तुष्ट रहती है। सन्तुष्ट आत्मा की स्थिति सदा प्रगतिशील रहती है।'' अ.बापदादा 30.11.09

''वरदान बीज है ... वरदान से फल निकालने के लिए उसको पानी और धूप चाहिए। ... बार-बार सुमिरण नहीं लेकिन स्मृति (नेचुरल स्मृति), यह है पानी देना और स्वरूप में स्थित होना यह है धूप लगाना। बीज के फलीभूत होने से स्वयं में भी बहुत शक्ति भरती है और दूसरे को भी उस फल द्वारा शक्ति का अनुभव करा सकते हैं।'' अ.बापदादा 30.11.09

''अभी बाप ने तुमको ज्ञान दिया है। ज्ञान से ही तुम बच्चों की सद्गति हो रही है। तुम कितना दूर जाते हो। बाप ने ही घर जाने का रास्ता बताया है। सिवाए बाप के कोई वापस अपने घर ले नहीं जा सकते। ... यह भी तुम समझते हो कि हम आत्मा पवित्र बनेंगे, तब ही अपने घर जा सकेंगे। फिर या तो योगबल से पावन बनें या सजाओं के बल से पावन बनेंगे।'' सा.बाबा 28.11.09 रिवा.

''तुम बच्चे धरती के सितारे हो। तुम उन सितारों से महान बलवान हो क्योंकि

तुम सितारे सारे विश्व को रोशन करते हो। तुम ही देवता बनने वाले हो। तुम्हारा ही उत्थान और पतन होता है। ... कहाँ-कहाँ सूर्य का झण्डा लगाते हैं, अपने को सूर्यवंशी भी कहलाते हैं। वास्तव में सच्चे सूर्यवंशी तुम हो।''

सा.बाबा 15.09.09 रिवा.

''इस नॉलेज की पढ़ाई से आधा कल्प के लिए तुम्हारी कमाई का प्रबन्ध हो जाता है। तुम बहुत धनवान बन जाते हो। तुम जानते हो - अभी हम अविनाशी ज्ञान रतनों की पढ़ाई पढ़ रहे हैं। भक्ति को अविनाशी ज्ञान रतन नहीं कहेंगे क्योंकि भक्ति में कोई कमाई नहीं होती है, घाटा ही घाटा होता है।''

सा.बाबा 8.09.09 रिवा.

''शान्तिधाम और सुखधाम दोनों ही पवित्र धाम हैं। परमधाम में शरीर है नहीं, इसलिए बैटरी डिस्चार्ज नहीं होती। यहाँ शरीर धारण करने से मोटर चलती है। मोटर खड़ी होगी तो पेट्रोल कम थोड़ेही होगा। ... तुम यहाँ आये ही हो शरीर छोड़कर वापस घर जाने अर्थात् मरने। तुम खुशी से घर जाते हो।''

सा.बाबा 7.08.09 रिवा.

''मूलवतन में तो हैं ही आत्मायें, शरीर तो है नहीं। तो बैटरी कम होने की बात ही नहीं। मोटर जब चलेगी तब तो बैटरी कम होगी। मोटर खड़ी होगी तो बैटरी थोड़ेही चालू होगी। मोटर जब चले तब बैटरी चालू होगी। भल उस मोटर में तो चलते हुए बैटरी चार्ज होती रहती है परन्तु आत्मा रूपी बैटरी में ऐसा नहीं होता।'' सा.बाबा 7.08.09 रिवा.

''आत्मा रूपी बैटरी एक ही बार इस समय चार्ज होती है। फिर जब तुम यहाँ शरीर से कर्म करते हो तो थोड़ी-थोड़ी बैटरी की शक्ति कम होती जाती है। ... अभी बाप ने समझाया है कि बैटरी कैसे चार्ज करनी है। भल घूमो-फिरो, बाप को याद करते रहो तो सतोप्रधान बन जायेंगे।'' सा.बाबा 7.08.09 रिवा.

''बैटरी अब चार्ज करना है, फिर अहिस्ते-अहिस्ते बैटरी डिस्चार्ज होना ही है। बैटरी चार्ज होने का ज्ञान भी अभी एक ही बार तुमको मिलता है।... शुरू से ही